MGML
सृजन

बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण हेतु शिक्षक हस्त पुस्तिका

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़

State Council of
Educational Research & Training,
Chhattisgarh, Raipur (C.G.)

मिशन स्टेटमेन्ट

हर प्रशिक्षण प्रभावी प्रशिक्षण

विजन 2017

राज्य के सभी बच्चों का गुणवत्तायुक्त शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण विकास। सभी विद्यालयों एवं सहयोगी संस्थाओं को अपने क्षेत्र की शैक्षिक समस्याओं को हल करने हेतु सक्षम बनाना शिक्षक प्रशिक्षकों को कर्तव्यनिष्ठ, स्वप्रेरित प्रेरणास्रोत तथा बच्चों के प्रति संवेदनशील एवं व्यवहारिक समझ के साथ विषयवस्तु के आनंददायी व प्रभावी प्रस्तुतीकरण के समन्वय स्थापित करना, जिससे विद्यालय एक सामुदायिक केन्द्र के रूप में विकसित हो।

--o--
Office of the Director, State Council of Educational Research & Training,
Chhattisgarh, Raipur (C.G.)

आभार

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण कार्यक्रम में निर्मित सामग्री एवं हस्त पुस्तिका के संशोधन में शिक्षा विभाग के अधिकारियों के सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुए, जिनका परिषद् अत्यंत आभारी है।

- श्री नंद कुमार (आई.ए.एस.) महाराष्ट्र
- श्री वेंकटेश मालूर, यूनीसेफ दिल्ली
- श्री के. कुमार, संयुक्त संचालक राजीव गाँधी शिक्षा मिशन रायपुर
- श्री आशुतोष चावरे, उप संचालक राजीव गाँधी शिक्षा मिशन रायपुर
- श्री आशीष दुबे, सहायक संचालक राजीव गाँधी शिक्षा मिशन रायपुर
- श्री पी. रमेश, सहायक संचालक राजीव गाँधी शिक्षा मिशन रायपुर
- श्री ऋषभ हेमाणी, यूनीसेफ रायपुर
- सुश्री डी.सिंह एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

एम.जी.एम.एल. का विज़न

राज्य के सभी प्राथमिक स्तर की शालाओं में यह व्यवस्था हो कि प्रत्येक बच्चे को अपनी गति एवं स्तर से सीखने और मूल्यांकन का अवसर मिले।

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

MGML

सृजन

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण

शिक्षक हस्त–पुस्तिका

वर्ष

2009–2010

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

नंदकुमार (आई.ए.एस.)
सचिव, स्कूल शिक्षा, छ.ग.शासन
संचालक, एस.सी.ई.आर.टी
रायपुर

सहयोग

एन.पी.कौशिक
संयुक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी, रायपुर

श्री वेंकटेश मालूर
शिक्षा विशेषज्ञ
यूनीसेफ, रायपुर

समन्वय

श्रीमती अनुपमा नलगुंडवार
प्रकोष्ठ प्रभारी
SCERT, Raipur

सुनील मिश्रा
(राज्य स्त्रोत व्यक्ति), रायपुर
SCERT/SLMA, Raipur

सामग्री निर्माण एवं लेखन समूह

तारकेश्वर देवांगन, गंगाधर साहू, पुरूषोत्तम सोनी, रामेश्वर बेलान्द्रे, उत्तम साहू, शिवकुमार देवांगन, कु. योगिता साहू, बेनीराम साहू, श्रीमती हेम चंदेल, चैतराम सार्वा, रविनारायण त्रिपाठी, लोचन सिंह गौतम, सीमा अग्रवाल, नेमसिंह कौशिक, कु. चंचल ठाकुर, संध्या रानी, गजेन्द्र देवांगन, श्रीमती अनुपमा नलगुण्डवार, सुनील मिश्रा

डिज़ाईनिंग, ले–आउट एवं टंकण

कुमार पटेल, राजकुमार चन्द्राकर, रामचरण साहू

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

प्राक्कथन

विगत वर्षों में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर बहुमुखी एवं सघन कार्यक्रम लागू किये गये हैं। इनमें प्रमुख रूप से पाठ्य पुस्तकों का लेखन, शालेय स्वच्छता कार्यक्रम, जीवन कौशल पर आधारित शिक्षा, प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का प्रशिक्षण, शिशु शिक्षा और देखभाल हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण और शैक्षिक वातावरण का बहुमुखी उन्नयन आदि हैं। साथ ही परिषद् ने शैक्षिक विकास के इन महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की प्राप्ति के महत्वपूर्ण एवं प्रमुखतम दायित्व का भली भांति अनुभव किया है। परिषद् ने इन सभी क्षेत्रों में व्यापक कार्यक्रमों को सुनियोजित कर, अपनी संपूर्ण शक्ति से इनकी सफलता को सुनिश्चित करने का प्रयास किया है।

शिक्षक साथियों ,आप भली भांति परिचित हैं कि प्रदेश की अधिकांश शालाएँ एक दो या तीन शिक्षकीय ही हैं। ऐसी स्थिति में एक शिक्षक को एक से अधिक कक्षाएँ पढ़ानी ही पड़ती है, साथ ही विभिन्न स्तरों के बच्चों का बहुस्तरीय शिक्षण भी कठिनाई उत्पन्न करता है। अभी तक इन सबको एक समस्या के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है और तद्नुसार हल करने के प्रयास भी किये जाते रहे हैं। बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण एक समस्या नहीं है बल्कि एक चुनौती पूर्ण कार्य है। विभिन्न विषयों को समझने एवं सीखने की प्रत्येक बच्चे की अपनी गति एवं क्षमताएँ होती हैं। इस कारण किसी एक समय पर समान आयु के बच्चे भी अधिगम के विभिन्न स्तरों पर होते हैं, परिणाम स्वरूप बच्चों के सीखने में असमानता परिलक्षित होती है। बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता (समानता सहित गुणवत्ता) में वृद्वि की दृष्टि से बहुकक्षीय एवं बहुस्तरीय शिक्षण एक शैक्षिक आवश्यकता है। इसका संबंध शिक्षक अथवा कमरों की कमतरता से नहीं है। यह सत्य है कि शिक्षक एवं कक्ष की कमी होने से समस्या और भी बढ़ जाती है। इस हेतु क्रमबद्व अधिगम सामग्री तैयार की गई है। इस अधिगम सामग्री को छोटे–छोटे सोपानों में बांटा गया है। पाठ्य पुस्तकों का स्थान अध्ययन कार्डों,कार्य कार्डों जैसी सामग्रियों ने ले लिया है। इस कार्य के लिए परिषद् द्वारा एक संपूर्ण पैकेज का विकास किया गया है। इस पैकेज को "MGML सृजन" नाम देते हुए शिक्षकों के लिए शिक्षक हस्त पुस्तिका तैयार की गई है। इन सामग्रियों के आधार पर कक्षा– कक्ष के ढांचों में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता होगी और साथ ही शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन करने की भी बात होगी।

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

'सृजन' को सत्र 2007–08 में प्रदेश की 21 शालाओं में प्रयोग कर परीक्षण किया गया। परीक्षण से प्राप्त सफलता एवं फीडबैक के आधार पर इस सामग्री को संशोधित करते हुए अधिक गुणवत्ता युक्त बनाया गया। इसे वर्ष 2008–09 में 40 विकास खंडों के 8000 शालाओं में ले जाया गया। इसकी सफलता को देखते हुए इसे इस वर्ष कक्षा तीन और चार तक ले जाया जा रहा है।

"MGML सृजन" की अधिकतम संभव सफलता इस बात पर निर्भर है कि संशोधित एवं परिवर्धित सामग्री के अनुरूप कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया उत्साह पूर्वक, आनंददायी ढंग से चलती रहे और प्रदेश के बच्चों का शैक्षिक स्तर ऊँचा हो। प्रक्रिया के उचित संचालन हेतु शिक्षकों को कारगर एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जाना भी उतना ही आवश्यक होगा।

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय सामग्री के उपयोग से बच्चों में विषयों की मूलभूत अवधारणाएँ अधिक स्पष्ट होंगी। इस स्पष्टता से बच्चे आगे की शिक्षा को सहज एवं सुगम पायेंगे। यह सामग्री इसी विश्वास के साथ तैयार की गई है। उसी विश्वास के साथ सभी स्तरों पर इसके क्रियान्वयन का कार्य संपादित हो। सामग्री के संशोधन एवं परिवर्धन में युनीसेफ, राज्य परियोजना कार्यालय तमिलनाडु के सहयोग के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। पद्धति, सामग्री के निर्माण हेतु पूरी प्रक्रिया में संबंधित व्यक्तियों की भूमिका, सहयोग तथा सहायता निरंतर वांछनीय है। इतने अनुभवों पर आधारित 'सृजन' निश्चित ही अपने उद्देश्यों में सफल होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्राप्त सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा ।

नंदकुमार (आई.ए.एस.)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

नई दिशा में
नई भोर हो,
जीवन पथ पर
नव संकल्प हो,
हर डगर पर
जीत नई हो,
सफल करें
सपन सृजन,
नए साल की नई किरण।

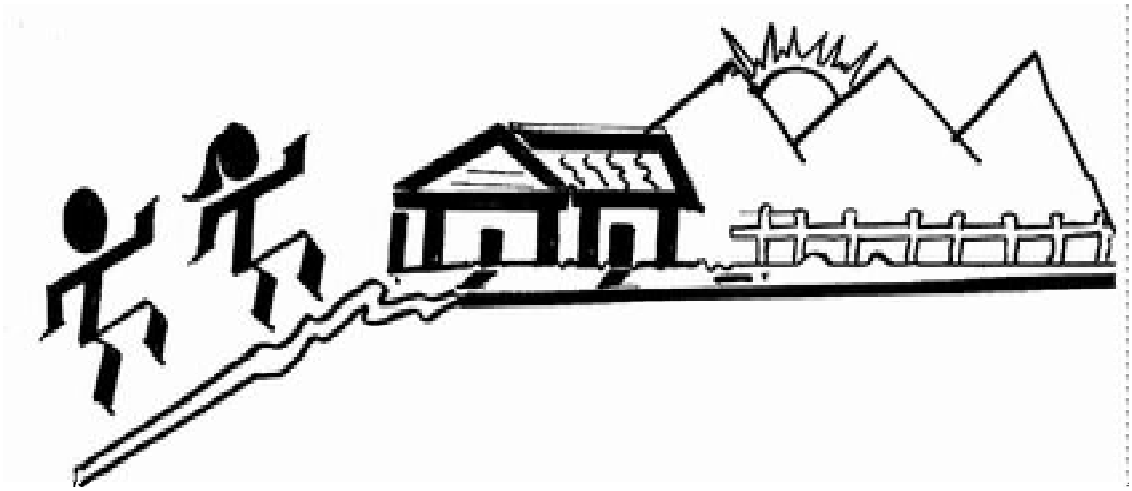

PDF Complete
Your complimentary use period has ended. Thank you for using PDF Complete.
Click Here to upgrade to Unlimited Pages and Expanded Features

नुक्रमणिका

1. आओ विचार करें।
2. प्रमुख चुनौतियाँ
3. बच्चों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया।
4. समानता एवं असमानता।
5. सीखने की गति को तेज कैसे करें।

अध्याय 2 MGML के उद्देश्य
1. उद्देश्य
2. बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षा की (MGML) की अवधारणा
3. MGML की विशेषताएं

अध्याय 3 MGML के तत्व
1. माइल स्टोन
2. कीट
3. लोगो
4. सीढ़ी
5. समूह

अध्याय 4 MGML की कार्य प्रणाली
1. कक्षा–कक्ष की व्यवस्था एवं सजावट
2. प्रारंभिक मूल्यांकन
3. ऐसे बने समूह
4. मूल्यांकन
5. MGML में समुदाय को कैसे जोड़ें

अध्याय 5 हमारी विकास यात्रा
1. पायलेटिंग
2. माँ की कहानी
3. पायलेटिंग शाला के शिक्षकों का अनुभव
4. अभ्यास पुस्तिका
5. रीडिंग मेटेरियल (रीडर्स)
6. MGML प्रणाली के लाभ

अध्याय 6 अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु
1. शिक्षक की भूमिका
2. मॉनिटरिंग
3. विकलांग बच्चों की शिक्षा
4. MGML में लिंग भेद रहित शिक्षा कैसे
5. समय सारिणी

अध्याय 7 परिशिष्ट
1. भाषा, गणित, अंग्रेजी, पर्यावरण के कार्डों का उद्देश्य एवं उपयोग विधि
2. विभिन्न विषयों के माइल स्टोन के उद्देश्यों की सूचि
3. मूल्यांकन सीट
4. प्रगति पत्रक
5. प्रतिभागियों के लिये (निर्देश कार्ड)
6. जीवन विद्या, जीने की एक कला
7. अतिप्रभावकारी लोगों की 7 आदतें।
8. व्यक्तित्व विकास
9. सृजन गीत

विचारणीय बिन्दु

1. प्रमुख चुनौतियाँ

छत्तीसगढ़ की अधिकांश प्राथमिक शालाओं में एक–दो या तीन शिक्षक कार्यरत हैं, ऐसी स्थिति में एक शिक्षक को दो या दो से अधिक कक्षाएं एक साथ, एक ही समय में पढ़ानी पड़ती है। इसके साथ एक ही कक्षा के बच्चों की सीखने की ''बहुस्तरीय स्थिति'' भी शिक्षकों के समक्ष कठिनाई उत्पन्न करती है। वास्तव में बच्चों के सीखने का स्तर एवं सीखने की क्षमता में अंतर होता है। यह कह सकते हैं कि जितने बच्चे होते हैं उतने ही स्तर होता है यह स्तर सभी विषयों के लिए समान नहीं होते। कोई बच्चा गणित में कमजोर स्तर का है तो वह विज्ञान में अच्छे स्तर का हो सकता है। यहाँ एक महत्वपूर्ण बात और होगी कि जब विभिन्न बच्चों के सीखने का स्तर भिन्न–भिन्न है, तो उनके सीखने की गति भी भिन्न–भिन्न होगी, शीघ्र गति से सीखने वाला बच्चा उन सारी गतिविधियों को शीघ्र ही करके खाली हो जाता है, जबकि धीमी गति से सीखने वाले बच्चे को अधिक समय एवं अवसर की आवश्यकता होती है। हमारी शिक्षण व्यवस्था में एक कक्षा के सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर एक समय में एक ही पाठ्य वस्तु को प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ बच्चों के अलग–अलग स्तर मापन की बात नहीं होती। साथ ही कुछ सामान्य बच्चों के सीखने के बाद विषयवस्तु परिवर्तित हो जाता है, ऐसी स्थिति में धीमी गति से सीखने वाले बच्चों का क्या होता होगा ? शीघ्र सीखने वाले बच्चे कोई नया पाठ्य वस्तु चाहेंगे ऐसा नहीं होने पर वह उबने लगता है। एक अच्छा शिक्षक प्रयास करता है लेकिन एक शिक्षक एक कक्षा के साथ अन्य कक्षाओं का भी शिक्षण करता है। ऐसी स्थिति में क्या हम सभी बच्चों में समान गुणवत्ता की बात कर सकते हैं ? इन बच्चों की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता धीरे–धीरे वे शाला से बाहर होने लगते हैं। यहाँ एक बहुत बड़ी समस्या यह हो जाती है कि परीक्षा का अनावश्यक तनाव बच्चे के ऊपर हावी होने लगता है, क्योंकि परीक्षा सभी बच्चों को एक ही पैटर्न में एक ही तरीके से देनी होती है। अतः परीक्षा का उन्हें भय लगने लगता है। शिक्षक बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार नहीं कर पाता। ये सारी बातें बच्चे की गुणवत्ता में बाधक है। **ध्यान रहे शिक्षक की कमी के कारण यह पद्धति कतई लागू नहीं की जा रही है बल्कि यह एक अनिवार्य शैक्षिक आवश्यकता है।**

2. बच्चों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया :–

बच्चों को सिखाने में एकमात्र शिक्षक ही ज्ञान का स्त्रोत नहीं, बल्कि बच्चा अन्य स्त्रोतों से भी सीखता है। किन्तु अधिकांशतः बच्चे शिक्षक के ही मार्गदर्शन में बहुत कुछ सीख जाते हैं। बच्चा जब जन्म लेता है तो वह बिल्कुल निर्बोध रहता है, बच्चा धीरे–धीरे हर चीज सीखता जाता है। बच्चा कहाँ–कहाँ से और कैसे किस प्रकार की प्रक्रिया से सीखता है। उनकी सीखने की प्रक्रिया विभिन्न प्रकार की हो सकती है–

1. बच्चा अनुकरण अर्थात किसी की नकल करके सीखता है।
2. खेल–खेल में सीखता है।
3. स्वयं करके सीखता है।
4. साथी के साथ सीखता है।
5. परिवेशीय वस्तुओं से सीखता है।
6. प्रोत्साहन से सीखता है।
7. प्रतिस्पर्धा से सीखता है।
8. संकलन व वर्गीकरण से सीखता है।
9. सहायक सामग्री के उपयोग से सीखता है।
10. तर्क से सीखता है।
11. गलतियों से सीखता है।
12. पुनर्बलन और बार–बार अभ्यास से सीखता है।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों का अपने अध्यापन में प्रयोग करते हुए बच्चों को आसानी से सिखाया जा सकता है।

3. बच्चों में समानताएँ एवं असमानताएँ –

विविधता प्रकृति में ही होती है। भौगोलिक स्थिति, खान–पान, सामुदायिक परिवेश, आर्थिक स्थिति, पर्यावरण स्थिति आदि के कारण मानव में विभिन्नताएँ होती है। बच्चों की

मानसिकता में भी यही बात होती है। कोई बच्चा चंचल होता है, कोई गंभीर अथवा कोई सामान्य। इन्हें सक्रिय रखने हेतु कितना अवसर मिलता है, इस पर भी उनमें विविधता निर्भर करती है।

लेकिन जहाँ इतनी विविधताएँ होती है। वहीं प्रकृति प्रदत्त मूलभूत समानताएँ भी होती है। जो मानव को अन्य प्राणियों से पृथक पहचान देती है। इन्हीं समानताओं के आधार पर किसी कौशल की स्थापना बच्चों में कर सकते हैं। आइये देखें कौन–कौन से समानता एवं असमानता बच्चों में पाई जाती है।

असमानता :–

1. शारीरिक भिन्नता – लैंगिक–भिन्नता
   – आंगिक–भिन्नता
   – शारीरिक एवं मानसिक आयु में अनुपातिक भिन्नता
   – रंग, रूप, बनावट के रूप में भिन्नता
2. बौद्धिक भिन्नता – समझने की क्षमता
   – सीखने की गति
3. संवेगात्मक भिन्नता – संवेदनशीलता (नाराज होना, डरना, भावुकता)
4. सामाजिक भिन्नता – पारिवारिक स्थिति

उपरोक्त भिन्नताओं के कारण बच्चों में सीखने का स्तर अलग–अलग हो जाता है। इन्हें स्तरानुरूप शिक्षण की आवश्यकता है।

समानता :–

1. असीमित क्षमताएँ
2. अपार संभावनाएँ

जिज्ञासु प्रवृत्ति, खेल में रूचि, उनमें छुपी अपार संभावनाएँ एवं असीमित क्षमता सभी बच्चों में पाये जाते हैं, लेकिन कुछ परिस्थितिवश एवं प्रकृति प्रदत्त असमानताएँ भी होती हैं, जो शिक्षण को प्रभावित करती हैं।

4. सीखने की गति को तेज कैसे करें ?

गतिविधि कराने से स्पष्ट हो जाएगा कि कुछ बच्चे तीव्र गति से सीख रहे हैं, कुछ बच्चे औसत गति से सीख रहे हैं, लेकिन कुछ बच्चे धीमी गति से सीखते हैं। धीमी गति से सीखने वाले बच्चे अन्य बच्चों की अपेक्षा पिछड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में ये पिछड़े बच्चे पिछड़ते ही जाएंगे एवं निर्धारित समय में निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा नहीं कर पायेंगे। तब शिक्षक के लिए समस्या पैदा हो जाएगी।

इन पिछड़ने वाले बच्चों को पर्याप्त मौके नहीं मिल पाते और ये लगातार पिछड़ते ही जाते है। लेकिन इस प्रणाली में ऐसी व्यवस्था है कि ये बच्चे अपनी गति के अनुसार चाहे कितने ही समय में पूरा करें। उनको स्वतंत्रता दी जावेगी।

इसका अर्थ यह नहीं है कि पिछड़ रहे बच्चों को लंबे समय के लिए निश्चित छोड़ दिया जावे। यहाँ शिक्षक हर समय अवलोकन करते रहेगा कि कौन सा बच्चा किस माईल स्टोन को लंबे समय में भी पूरा नहीं कर पा रहा है। ऐसे बच्चों हेतु शिक्षक को अन्य तरह की कार्ययोजना बनानी होगी। बच्चों में सीखने की गति को तेज करने हेतु निम्नलिखित उपाय किये जा सकते है–

1. सर्वप्रथम शिक्षक उस बच्चे के पिछड़ने के कारणों को पता करें। वह किस कार्ड में कौन से बिन्दु पर अटकता है इसे देखें। कुपोषण, घर का तनाव युक्त वातावरण, माता–पिता के बीच लड़ाई झगड़ होना आदि कारणों से भी बच्चा पिछड़ सकता है।
2. बच्चे की रूचि के क्षेत्र को पहचानना चाहिए। जिस कार्ड में बच्चा रूचि दिखाता है। शिक्षक उस पर व्यक्तिगत रूप से कार्य करें। उसके पास जाकर उससे संबंधित गतिविधि करायें। उपचारात्मक कार्ड में शिक्षक के लिए खाली कार्ड दी गयी है। शिक्षक उस बच्चे की आवश्कता के अनुसार गतिविधि दे सकते हैं।

3. गतिविधियों को और भी सरल तरीके से कराया जाना चाहिए। इस हेतु शिक्षक को स्वयं गतिविधि का निर्माण करना चाहिए।

4. सृजनात्मक गतिविधि एवं खेलकूद के माध्यम से सिखाने के प्रयास किए जाएँ।

5. उद्देश्यों को बच्चों के परिवेश से जोड़कर बताने पर उनमें तीव्रता आएगी।

6. हर एक गतिविधि के पश्चात् उनका नाम लेकर बुलाना एवं उन बच्चों के लिए बहुत अच्छा! शाबास! जैसे शब्दों का उपयोग कर उन्हें उत्साहित करने से उनमें और अच्छा एवं जल्दी कार्य करने की प्रेरणा आएगी।

7. प्रत्येक बच्चे को सीखने और गतिविधि करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जावे।

••••

अध्याय –2

MGML क्या है ?

1. उद्देश्य :–

प्रारंभ में हमने जो चर्चा की है, उन तथ्यों के आधार पर उन समस्याओं के निराकरण के प्रयास किये जा सकते हैं। बाल प्रवृत्ति, सीखने की प्रक्रिया एवं उनमें पायी जाने वाली असमानताओं, भिन्नताओं का उपयोग करते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा एक शिक्षा पद्धति को लाने का प्रयास किया गया है जिसे **'सृजन'** का नाम दिया गया है। इस पद्धति से शिक्षक बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण की चुनौती का न सिर्फ सामना कर सकते हैं वरन् प्रत्येक बच्चे को निर्धारित स्तर की शिक्षा प्रदान कर समता सहित गुणवत्ता की स्थापना कर सकते हैं। अतः इस पद्धति के विकास के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. प्राथमिक शिक्षा में विस्तृत समझ का विकास करना।
2. बहुकक्षीय एवं बहुस्तरीय परिस्थितियों की वस्तुस्थिति को समझना।
3. बहुकक्षीय शिक्षण हेतु सामग्री का निर्माण एवं उपयोग कर पाने की क्षमता का विकास कर पाना।
4. प्रत्येक बच्चे को सिखा पाने की क्षमता विकसित करना।
5. बच्चों में वांछित क्षमताएँ विकसित हुई या नहीं, इसके मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझना।
6. सामग्री के प्रबंधन एवं रख रखाव की प्रक्रिया को समझना।
7. कक्षा के परपंरागत ढांचे में परिवर्तन कर पाने की क्षमता विकसित करना।
8. अपने कार्यों (निर्मित सामग्री एवं प्रक्रिया) का आत्म मूल्यांकन कर पाने एवं सुधार कर सकने की क्षमता विकसित करना।
9. परम्परागत पद्धति में सुधार करते हुए इसे संपूर्ण प्रदेश में लागू करना।

2. बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण (MGML) की अवधारणा :–

आइए, इस चित्र का अवलोकन करें –

चित्र क्रमांक –1

आइए इस चित्र पर चर्चा करें –

प्रश्न :– एक शिक्षक चार कक्षाओं को कैसे संचालित करेगा ?

संभावित उत्तर – एक ही शिक्षक को सभी बच्चों को एक साथ पढ़ाने में असुविधा हो सकती है।

1. कक्षा संचालन में असुविधा।
2. अलग–अलग स्तर के सभी बच्चों को एक साथ पढ़ाने में असुविधा।
3. अनुशासन बना पाने में कठिनाई होगी।
4. सभी बच्चों को एक साथ लेते हुए पाठ्यक्रम को पूरा करने में कठिनाई होगी।
5. समय–सीमा का निर्धारण नहीं हो पाएगा।
6. कक्षा का वातावरण भयप्रद, नीरस एवं अरुचिकर होगा।

क्या इन समस्याओं का कोई हल है ?

संभावित उत्तर :–

1. सर्वप्रथम हमें बच्चों का मूल्यांकन कर यह जानकारी लेनी पड़ेगी कि कौन सा बच्चा किस गति से सीखता है।
2. तीव्र गति से एवं मंद गति से सीखने वाले बच्चों की पहचान करनी होगी।
3. कौन सा बच्चा किस गतिविधि से सीखता है, इसकी जानकारी लेनी पड़ेगी।
4. बच्चों को सामग्री देकर काम में व्यस्त रखा जाए।
5. बच्चों को समूह में विभाजित कर उनसे विभिन्न क्रियाकलाप कराएँ जाएं।
6. छात्रों को उनकी रुचि के आधार पर शिक्षा दी जाए।

आइये, अब इस चित्र को देखें :–

चित्र क्रमांक – 2 कक्षा एक से चार तक के मिश्रित बच्चे

सीखने में लगने वाला समय एवं स्तर आधार पर समूह में परिवर्तन करेंगे।

पूर्व में दिए गए दोनों चित्रों की तुलनात्मक अध्ययन करें।

संभावित उत्तर –

1. दूसरे चित्र की बैठक व्यवस्था में बच्चों को अधिक लाभ होगा।
2. अलग–अलग गति से सीखने वाले बच्चों की पहचान दूसरे चित्र में हो रही है, जबकि पहले चित्र में नहीं हो पा रहा है।
3. दूसरे चित्र में बच्चों के स्तर को जानने में शिक्षक को सुविधा हो रही है, जबकि पहला चित्र शिक्षक को बच्चों के स्तर की जानकारी नहीं दे पा रहा है।
4. दूसरे चित्र में सहायक सामग्री का उपयोग आसानी से किया जा सकता है, जबकि पहले चित्र में सहायक सामग्री के उपयोग में कठिनाई होगी।
5. दूसरे चित्र में छोटे–छोटे समूह होने से बच्चों में सीखने के नए–नए तरीके विकसित होंगे।
6. दूसरे चित्र के आधार पर बच्चे एक दूसरे का सहयोग ले सकते हैं।
7. दूसरे चित्र में बच्चों के स्तरानुसार शिक्षण व्यवस्था की जा सकेगी।
8. पहले चित्र में कक्षा एक एवं दो के बच्चे अलग–अलग बैठे हैं उनके गतिविधि भी अलग–अलग है। जबकि दूसरे चित्र में स्तर के आधार पर मिला–जुला समूह है। बच्चे एक दूसरे का सहयोग कर लेते हैं।
9. पहले चित्र में सामूहिक रूप से निर्धारित समय में पूर्ण कर आगे बढ़ते हैं। जबकि दूसरे चित्र में प्रत्येक बच्चा उस गतिविधि को पूरा करने पर ही समूह बदलते हैं। इस प्रकार सभी बच्चों को सीखने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

इन्हीं बातों से MGML की अवधारणा स्पष्ट करेंगे।

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण की अवधारणा :–

एक शिक्षक एक ही समय में एक साथ अलग–अलग कक्षाओं के बच्चों को शिक्षण कराता है तो यह बहुकक्षा शिक्षण (MGT) की स्थिति होती है।

परंतु जब एक ही शिक्षक एक ही समय में अलग–अलग कक्षा के प्रत्येक बच्चे को उसके स्तर के आधार पर शिक्षण कराता है तो वह MGML की स्थिति होती है। एक चित्र के माध्यम से MGML की अवधारणा को समझेंगे–

चित्र क्रमांक – 3

टीपः– प्रत्येक बच्चा स्वतंत्र रूप से अपनी क्षमता के आधार पर गतिविधि करते हुए अपना रास्ता तय करेगा। उसे सीखने हेतु किसी तरह का कोई बंधन नहीं होगा।

इससे स्पष्ट है कि –

एक शिक्षक एक ही समय में अलग–अलग श्रेणी एवं अलग–अलग स्तर, विभिन्न गति से सीखने वाले, विभिन्न तरीकों से सीखने वाले, अलग–अलग क्षमताओं एवं रूचियों से सीखने वाले बच्चों का शिक्षण बालकेन्द्रित ढंग से करता है, तब वहाँ MGML या बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण व्यवस्था होगी।

यहां समूह का तात्पर्य बच्चों के ग्रेड से कतई नहीं है, न ही यह अलग–अलग बच्चों का अलग–अलग स्तर निर्धारित करता है, बल्कि गतिविधि को सम्पन्न करने के आधार पर उनका समूह बदलते रहता है। सभी बच्चे सभी समूहों में गतिविधि करते हुए समूह

बदलते रहते हैं। इस तरह बच्चों का इस समूह से उस समूह में आना जाना चलते रहता है। यह प्रणाली शिक्षक के कमी को दूर करने के लिए नहीं लाई जा रही है बल्कि यह प्रदेश की शैक्षिक आवश्यकता है।

3. बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण की विशेषताएँ –

1. बच्चों का प्रारंभिक मूल्यांकन कर उनके स्तर का पता लगाते है।
2. स्तर जान लेने से गतिविधि कराने में आसानी हो जाती है।
3. पूरे पाठ्य सामग्री को छोटे–छोटे हिस्से में बाँटकर गतिविधि कराई जाता है।
4. सभी समूह में बैठते हैं लेकिन गतिविधि भिन्न–भिन्न होती है।
5. पिछड़ने वाले बच्चों को सीखने के पर्याप्त मौके एवं समय मिलता है।
6. अपने–अपने स्तर के आधार पर समूह में स्थान
7. **समूहीकरण**– बच्चों का मूल्यांकन कर, उनके स्तर के आधार पर समूह का निर्धारण किया जाता है।
8. **अपने–अपने स्तर** के आधार पर बच्चे स्वयं समूह का चयन करते हैं।
9. एक कक्षा में विभिन्न स्तर के बच्चे होते हैं। बच्चों के उन स्तरों का सम्मान करते हुए उन्हें सीखने का **समान अवसर** प्रदान किया जाता है।
10. सीखने के उद्देश्यों को **'माइल स्टोन'** के रूप में छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित किया जाता है।
11. बच्चे अपने स्तर का **मूल्यांकन** स्वयं करते हैं।
12. **उपचारात्मक शिक्षण** हेतु निदान खोजना आसान होता है।
13. सभी बच्चे पूरी पाठ्य सामग्री को **अपनी–अपनी गति** से सीखते हैं।
14. **सहायक शिक्षण सामग्री** का भरपूर उपयोग होता है। इससे शिक्षण काफी रोचक एवं प्रभावपूर्ण होता है।
15. यह पद्धति सीखने–सिखाने के सिद्धांत पर आधारित है।

16. पढ़ना कौशल को सशक्त बनाने हेतु विभिन्न Reading Material बनाये गये हैं।

17. समूह में शिक्षण करने से बच्चों में मित्रवत् व्यवहार एवं पारस्परिक सहयोग की भावना आती है।

18. पुस्तक के स्थान पर कार्डों से शिक्षण व्यवस्था की गई है।

19. बच्चों के सीखने में स्वावलंबन का गुण आता है।

20. एक आयु वर्ग के बच्चों को अपने साथियों के साथ पढ़ने–लिखने तथा खेलने एवं सीखने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं।

21. बच्चों में सामग्री को प्रबंधन करने की क्षमता विकसित होती है।

22. यह पद्धति बस्ते के बोझ को भौतिक एवं मानसिक रूप से कम करने वाली एवं सीखने की आनंददायी शिक्षण पद्धति है।

23. हर बच्चा एक माइल स्टोन पार करने के पश्चात् ही दूसरे माइल स्टोन पर पहुंचता है।

24. हर माइल स्टोन को पार करने के बाद बच्चों का उत्साह एवं मनोबल बढ़ता है।

25. परीक्षा का भय नहीं होता है। बल्कि प्रत्येक माइल स्टोन में मूल्यांकन होने से मानसिक सुख प्राप्त होता है।

26. यदि छात्र किसी कारणवश अनुपस्थित है, तो सीढ़ी के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है, कि उसे दोबारा कहाँ से सीखना शुरु करना है।

27. लोगो के आधार पर सीढ़ी निर्मित की जाती है, जिससे गतिविधि कराने में सुविधा होती है।

28. वर्क बुक से अतिरिक्त अभ्यास के मौके मिलता है।

29. इस पद्धति से बच्चे स्वयं, सजग होकर एवं स्वप्रेरित होकर सहजता से सीखते हैं।

30. इस पद्धति में शिक्षक का कार्य बच्चों को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध उपलब्धि हासिल करने में सहयोग करना है। अर्थात शिक्षक केवल सुविधादाता होता है।

31. इस पद्धति में बच्चों का मूल्यांकन प्रगतिकारक होता है।

32. समय सारिणी लचीला होता है तथा सीखने हेतु समय प्रतिबंधित नहीं होता है।

33. संकोची एवं शांत बच्चे भी सक्रिय हो जाते हैं। शिक्षक बच्चों के बीच बैठकर काम करता है।

34. शिक्षक एवं छात्र के सम्बंध मित्रवत् बनते हैं।

35. बच्चे चाहे जिस स्तर के हो सीखेंगे ही।

36. इस पद्धति में कमजोर एवं मंद गति से सीखने वाले बच्चों की विशिष्ट कठिनाइयों की पहचान की जाती है और शिक्षक आवश्यकता के अनुसार उनकी मदद करते हैं।

••••

यदि कोई बच्चा नहीं सीखता तो य बच्चों की गलती नहीं है और न ही शिक्षक की गलती है बल्कि यह सिस्टम की गलती है, अतः हमें सिस्टम पर विचार करना चाहिए।

अध्याय – 3

MGML के तत्व

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण की अवधारणा के आधार पर सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु कुछ अलग–अलग कड़ियों के अध्ययन करने की आवश्यकता है। जिस तरह फूल के अलग–अलग पंखुड़ियों से मिलकर एक समूचा फूल बनता है, उसी प्रकार इस पद्धति में कुछ अलग–अलग तकनीकों एवं सामग्रियों को मिलाकर पूरे प्रणाली पर शिक्षण प्रक्रिया स्पष्ट होती है। इन्हें MGML के तत्व कहते हैं। इसे नीचे बने चित्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है–

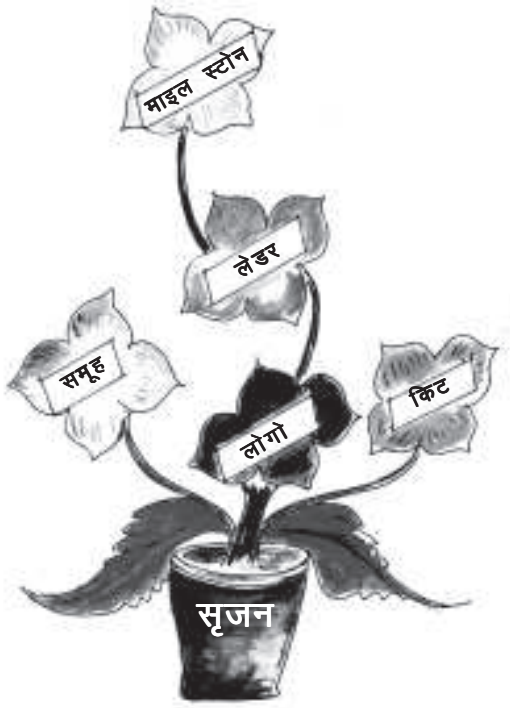

1. माइल स्टोन :

माइल स्टोन (Mile Stone) का अर्थ –

माइल स्टोन का शाब्दिक अर्थ मील का पत्थर है। मील के पत्थर रास्ते पर निश्चित दूरी तय करने के संकेत स्वरूप लगे हुए पत्थर हैं। वास्तव में, बच्चों में क्षमता विकास के पड़ाव के रूप में 'मील के पत्थर' को देखा गया है।

माइल स्टोन सीखने के उद्देश्यों को मनोवैज्ञानिक तरीके से बच्चों में क्रमबद्ध रूप से स्थापित करने के लक्ष्य हैं।

सीखने के क्रम को छोटे–छोटे भागों में बांटते हुए, सीखने के उद्देश्यों को व्यवस्थित रूप से जमाना, जिससे बच्चे सहजता से सीख सकें, उन्हे मील के पत्थर कहते हैं।

वास्तव में कक्षा 1 से 4 के वर्ष भर के लक्ष्य जो बच्चों में स्थापित करना है, उन लक्ष्यों को ही छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटा गया है और उन्हें क्रमबद्ध रूप से जमाया गया है। पूरे पाठ्यक्रम का क्रमबद्ध अध्ययन, जिसमें मनोवैज्ञानिक एवं आनंददायी पद्धति के साथ–साथ बच्चों की रुचि आदि का ध्यान रखा गया है। इसे हम माइल स्टोन कहते हैं।

माइल स्टोन कैसे बनें ?

माइल स्टोन विषयगत उद्देश्यों को छोटे–छोटे कौशलों में विभक्त करके, सीखने की प्रक्रिया को सहज, रुचिकर एवं क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करने हेतु बने हैं। माइल स्टोन में कौशलों के क्रम को बच्चों के सीखने के आधार पर रखा गया है। गणित में पहले 1 से 9 तक के अंकों एवं संख्याओं की समझ के बाद ही शून्य की अवधारणा सीखते हैं, शून्य सीखने के बाद ही इकाई दहाई एवं आगे की संख्याएं सीखते हैं, इसी प्रकार जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग आदि क्रिया सीखते हैं। अर्थात सीखने का एक क्रम होता है, जिसका पालन किया गया है। दूसरी बात यह है कि पाठ्यक्रम में निर्धारित अधिगम क्षेत्र में से एक से अधिक अधिगम क्षेत्र के कौशल लिये गये हैं। जैसे – भाषा में सुनने के साथ–साथ व्यवहारिक व्याकरण निर्देशों का पालन आदि कौशल भी साथ–साथ चलते हैं। माइल स्टोन में कक्षा 1 से 4 के लिए लगातार क्रमांक दिए गए हैं।

क्र.	विषय	कक्षा 01	कक्षा 02	कक्षा 03	कक्षा 04
1.	हिन्दी	0–10,	11–21	22–39	40–57
2.	गणित	0–14,	15–27	28–45	46–64
3.	पर्यावरण	0–15,	16–28	29–53	54–74
4.	अंग्रेजी	0–13	14–25	?	?

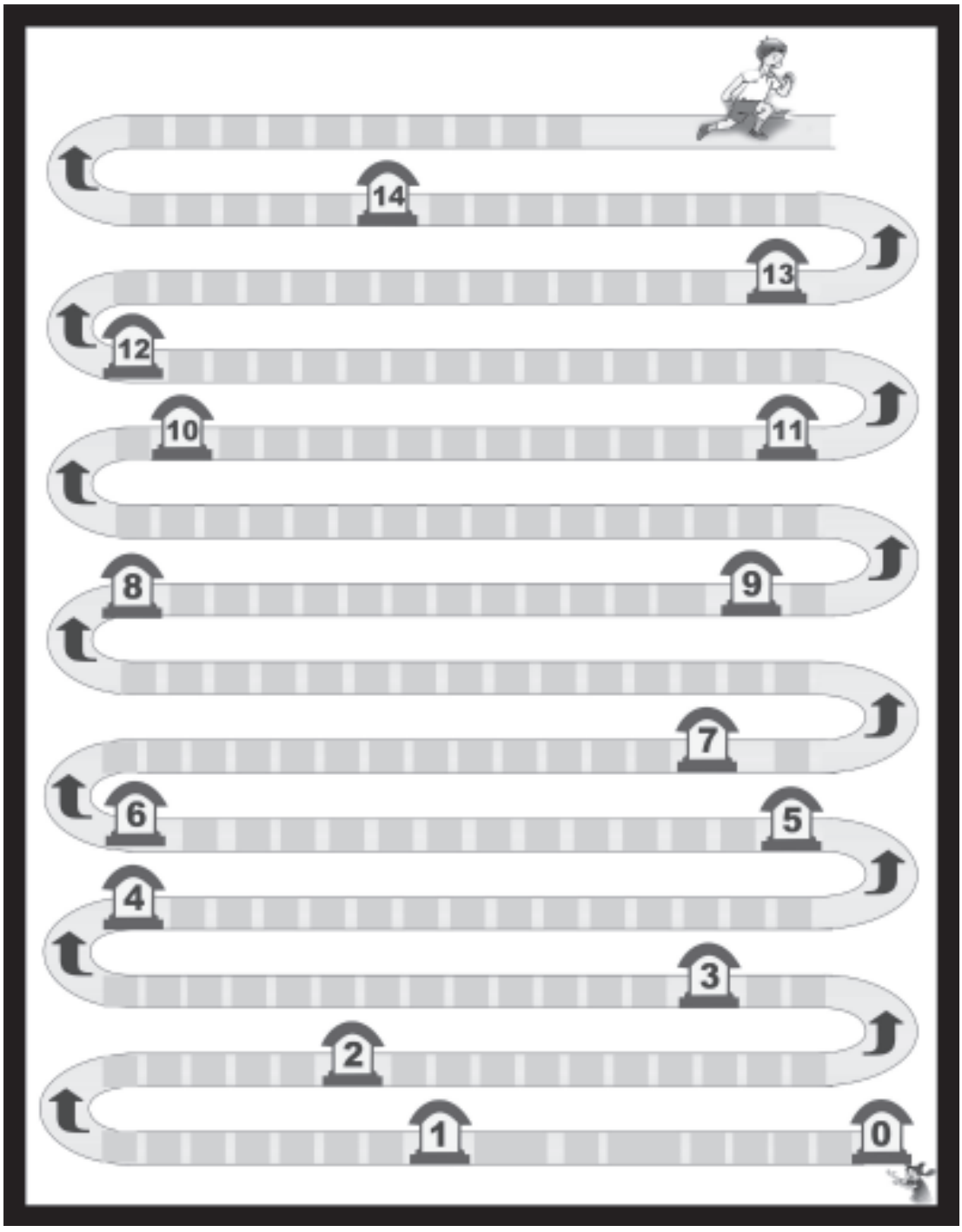

चित्र क्रमांक 05

है वह पत्थर, उस पत्थर को मूर्त बनाया है किसने।
सृष्टि बनाया, उसे चलाना ये सिखलाया है जिसने।। गुरू।।

2. किट

किट के अंतर्गत निम्नलिखित सामग्री तैयार किये गये हैं –

(अ) कार्डः–

MGML की सामग्री में कार्ड का स्थान सर्वोपरि है। वर्ष भर के समस्त पाठ्यक्रमों को माइल स्टोन में विभिक्त किया गया है। इस माइल स्टोन के समस्त कौशलों को कार्ड के रूप में विकसित किये हैं। ये कार्ड प्रत्येक कक्षा, प्रत्येक विषय तथा प्रत्येक गतिविधि के लिए अलग–अलग हैं। इन कार्डों को बनाते समय बच्चों की क्षमता, योग्यता एवं रूचियों को ध्यान में रखा गया है। इसे आकर्षक बनाने के लिए अनेक रंगों का प्रयोग किया है। इसके बार्डर भी विशेष रंग से बने हैं, जो कक्षाओं को अलग–अलग पहचान देते हैं। इसे लोगो वार क्रमांक से सुसज्जित किया गया है। इस लोगोवार क्रमांक के आधार पर ही विषय तथा सीखने के क्रम को निर्धारित करता है। इसी के तहत माइल स्टोन में लोगो को व्यवस्थित रख पाते हैं।

कार्ड के बहुरंगी होने से बच्चों को देखने, छूने, उठाने व रखने में आनंद का अनुभव होता है, तो दूसरी ओर सीखने के क्रम, पूर्व अनुभव व रूचि के अनुसार कार्ड पर गतिविधि मिलने से बच्चे बड़ी सरलता से सीखते हैं।

कार्ड के रूप में विकसित होने से बच्चों में मानसिक बोझ कम पड़ता है, चूंकि बच्चे अब पुस्तक को पाठ्यवस्तु के रूप में न देखकर केवल कार्ड को देखता है। साथ ही बस्ते का बोझ भी कम हुआ है।

कार्डों को 4 साईज में बनाया गया है। कक्षा 1 और 2 में बड़े साइज 17X24, मध्यम साइज 14X21 एवं छोटे साइज 9.5X9.5 के हैं। कक्षा 3 और 4 में कार्डों का साईज 17X24 बनाया गया है।

क्र.	विषय	कक्षा पहिली		कक्षा दूसरी		कक्षा तीसरी		कक्षा चौथी	
		संख्या	कलर	संख्या	कलर				
1.	भाषा	168	नीला	127	हरा	111	लाल	111	बैंगनी
2.	गणित	194	नीला	146	हरा	109	लाल	111	बैंगनी
3.	पर्यावरण	108	नीला	86	हरा				
4.	अंग्रेजी	130	नीला	108	हरा				

(ब) सामान्य किट

सामान्य किट में विभिन्न तरह की रोचक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। यह बच्चों की क्षमता को अतिरिक्त रूप से पुष्ट करता है। और शैक्षिक तौर पर समृद्ध बनाता है। शिक्षकों के लिए नवाचार का अवसर प्रदान करता है। समुदाय से शाला को जोड़ने हेतु गतिविधियाँ तैयार करते हैं। यह कार्डों के अतिरिक्त गतिविधि हैं। इसके अंतर्गत 6 लोगो एवं कार्ड हैं। इन कार्डों को किट के साथ प्रदान नहीं किया जावेगा। बल्कि दिये प्रारूप के आधार पर आवश्यकता अनुसार स्वयं तैयार करेंगे। इन कार्डों पर काम होने के पश्चात् तार के जॉली में लगाया जाना चाहिए। सामान्य किट इस प्रकार हैं–

बाल पुस्तकालय

शाला में बाल पुस्तकालय का गठन किया जावेगा। बाल पुस्तकालय में चित्र, कहानी, कविता, कार्टून, बाल अखबार, क्षेत्रीय बोली की पुस्तकें, छात्र द्वारा लिखित सामग्री होंगे। बाल पुस्तकालय से समुदाय को भी जोड़े जायेंगे। यदि कोई व्यक्ति सामग्री लेखन करता है, तो उसकी सामग्री को स्थान दिया जायेगा। शाला में होने वाले विशेष कार्यक्रम के दिन पुस्तक वाचन कार्यक्रम भी रखा जायेगा।

पुस्तकालय के पुस्तक को बच्चे अधिकतम तीन दिवस तक घर ले जाकर पढ़ सकेंगे। जिससे पढ़ने की आदत का विकास होगा।

माँ की कहानी

शिक्षा को जब तक जनभागीदारी से नहीं जोड़ा जाता तब तक शिक्षा अधूरी है। शिक्षा प्राप्त कर बालक अंततः उसी समुदाय में जाता है, जहां से वह आया है। अतः जनभागीदारी को शिक्षा से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए विविध गतिविधियां कराने की व्यवस्था है। बच्चे एक खाली कार्ड लेकर छुट्टी होते समय घर जाएंगे एवं अपनी माँ से कहानी लिखने के लिए कहेंगे। यदि माँ पढ़ी–लिखी नहीं है तो उनके द्वारा कही कहानी को सुनकर बालक ही कहानी लिखेगा। उस कहानी को कक्षा में लाकर सभी के सामने पढ़ेंगे

एवं पढ़ने के पश्चात् रस्सी लगाकर तार जॉली में टांगेंगे। सप्ताह में एक दिन उनकी माताएं स्कूल में आकर कहानी सुनायेंगी, सुनी हुई कहानियों को लिखकर टांगने की व्यवस्था की जावेगी। बहुत सी सामग्री हो जाने पर पिन लगाकर पुस्तक के रूप में बाल पुस्तकालय में रखा जायेगा।

प्रारूप इस तरह है –

माँ का नाम .....

बच्चे का नाम .....

कक्षा .....

पाठशाला .....

शिक्षक द्वारा लिखी गई कहानी

शिक्षा के प्रति बालकों में रूचि उत्पन्न करने के लिए एवं नवाचार करने हेतु शिक्षक छात्रों के लिए, उपयुक्त कहानियां बनाएंगे। शिक्षक, छात्रों को कहानी पढ़कर सुनाएंगे। छात्रों को स्वयं पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करेंगे। पढ़ने के पश्चात् इसमें रस्सी लगाकर दीवार पर टांगेंगे।

प्रारूप कुर्सी टेबल में बैठकर लिखते हुए व्यक्ति

नवाचार कार्ड

नाम .....

पाठशाला .....

गाँव .....

बच्चों द्वारा लिखी गई

कहानियां एवं कविताएं

बच्चों को सीखने के प्रति आकर्षित करने के लिए उन्हें कहानी एवं कविता लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इस हेतु शिक्षक बच्चों को गतिविधि से संबंधित छोटे चित्र कार्ड देकर बच्चों को उनकी समझ के आधार पर कहानी/कविता लिखने को कहेंगे। बच्चे समझ के अनुसार कहानी लिखेंगे और उसे सभी बच्चों को पढ़कर सुनाएंगे। तत्पश्चात् उसे रस्सी से बांधकर दीवार में लगा देंगे।

बच्चों का कार्ड

नाम .....

कक्षा .....

पाठशाला .....

गाँव .....

सुनियोजित योजना

शिक्षा को जीवन के विभिन्न पहलुओं से जोड़ने हेतु शिक्षक कुछ विशेष घटनाओं, कार्यक्रमों एवं तीज त्यौहारों की कार्ययोजना बनाएंगे। जैसे –स्वतंत्रता दिवस, बालमेला, बालसभा, मेला–मंडाई, गणतंत्र दिवस आदि। इस कार्ययोजना के अंतर्गत जनभागीदारी एवं छात्रों के मध्य, उचित समय में चर्चा करने हेतु समय एवं दिशा का निर्धारण करेंगे।

जनभागीदारी एवं छात्रों के मध्य वार्तालाप एवं साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों को चित्रित कर छात्रों को उनके बारे में लिखने के लिए कहा जाएगा। इसे सभी बच्चों के पढ़ने एवं सुनाने के पश्चात् दीवार पर लटका दिया जाएगा।

प्रपत्र –3

		सुनियोजित योजना			
क्र.	**विषयवस्तु**	**दिनांक**	**समय**		**परिणाम**
			बजे से	**बजे तक**	

आकस्मिक योजना

शाला, गाँव या आसपास के गाँव में अचानक घटने वाली घटनाओं के बारे में बच्चों से सामूहिक चर्चा करना। घटनाओं जैसे – सरपंच का शाला में आना, किसी के यहाँ बच्चे का जन्म होना, किसी व्यक्ति की किसी दुर्घटना या बीमारी से मृत्यु होना, किसी नेता का गाँव में आना, अचानक गाँव में हाथी, ऊंट आना आदि। इन पर छात्रों को चित्र बनाने के लिए कहा जाएगा। चित्रों को देखकर बच्चों से उस विषय पर लिखने के लिए कहा जाएगा।

प्रपत्र –3

		आकस्मिक योजना			
क्र.	विषयवस्तु	दिनांक	समय		परिणाम
			बजे से	बजे तक	

(स) लेडर (सीढ़ी)

प्रत्येक कक्षा एवं प्रत्येक विषय के लिए कक्षा 1 से 4 तक अलग–अलग लेडर प्रदान किया जायेगा। जो बड़े साईज में होगा। इसके अतिरिक्त बच्चों के लिए व्यक्तिगत छोटा लेडर शाला में तैयार किया जायेगा। बड़े लेडर को दीवाल में एक ओर रैक के समीप लगाया जाता। इसे शिक्षक सुविधानुसार गतिविधि की आवश्यकता को देखते हुए अलग–अलग समय में उपयोग कर सकता है। इसका एक तरीका यह हो सकता है। विषयवार प्रत्येक सीढ़ी कैलेण्डर जैसे एक के ऊपर एक लगाया जा सकता है।

(द) समूह लोगो :

समूह के स्थान निर्धारण हेतु समूह लोगो तैयार किया गया है। इसे दीवार पर भी बनाया जा सकता है, लेकिन कार्ड से स्थान चयन करने में सुविधा रहती है। इस लोगो में छहों समूह के लिए कार्य करने वाले लोगो छपे हुए रहते हैं। जिसे बच्चे समूह के बीच में रखते हैं। विषयवार समूह लोगो इस प्रकार है।

विषय – गणित

विषय – हिन्दी

विषय – अंग्रेजी

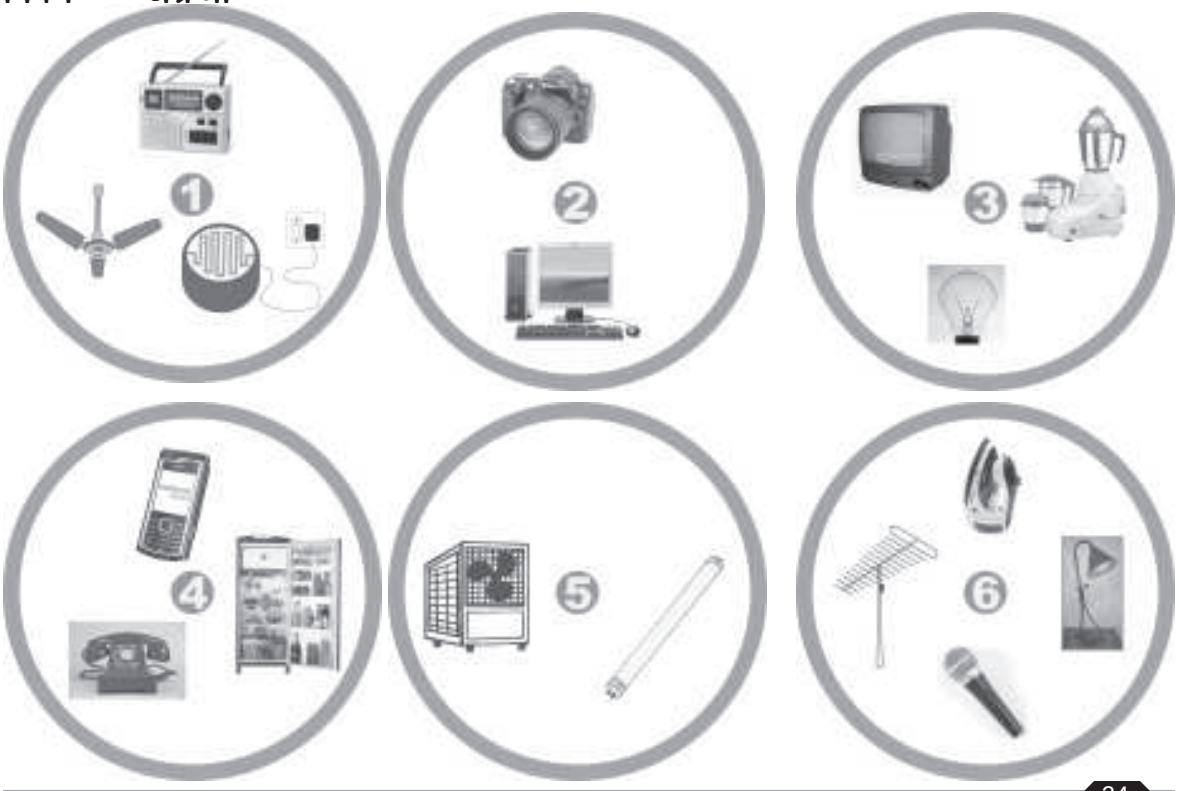

(इ) मूल्यांकन सीटः

प्रत्येक माइल स्टोन में मूल्यांकन की व्यवस्था दी गई है। अतः इसका रिकार्ड रखने हेतु एक बड़ा मूल्यांकन सीट विषयवार तैयार किया गया, जिसमें बच्चों का नाम, माइल स्टोन, दिनांक, निशान के लिए स्थान दिये रहेंगे। शिक्षक निर्धारित नियमों के अनुसार मूल्यांकन सीट भरेंगे।

(फ) अन्य शिक्षण सामग्री :

अन्य शिक्षण सामग्री के रूप में शिक्षक स्थानीय तौर पर सहायक सामग्रियों जैसे – गिन तारा, विभिन्न गणितीय आकृतियाँ, मुखौटा आदि उपलब्ध करायेंगे। पासा, सामान्य कार्ड आदि कीट के साथ प्रदान किये जायेंगे।

3. लोगो

लोगो एक प्रतीक चिन्ह है इसका उपयोग प्रत्येक कार्ड के ऊपर बांयी ओर कोने पर किया गया है एवं दाहिने ओर उसका क्रमांक लिखा गया है। यह माइल स्टोन का क्रमांक नहीं है। माइल स्टोन के आधार पर कार्ड का निर्माण हो जाने के बाद हमारे पास बहुत से कार्ड इकठ्ठा हो जाते है। अतः कार्डों की पहचान, उनका वर्गीकरण एवं रखरखाव आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु लोगो आवश्यक है। बच्चों को पशु–पक्षी, पेड़–पौधे आदि बड़े प्रिय लगते हैं। यदि उनको उन्हें देखने का मौका मिल जायेगा तो क्या पूछना है और यदि ये सब चीजें शाला में विभिन्न चित्रों के रूप में देखने को मिले तो वे अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं।

इन पशु पक्षियों तथा आसपास की वस्तुओं को लोगो के रूप में देखकर बच्चे इनके प्रति स्वमेव आकर्षित होते हैं। लोगो के आधार पर हम विषय वस्तु को व्यवस्थित रख पाते हैं। इन्हीं के माध्यम से लेडर (सीढ़ी) का निर्माण होता है। लोगो के माध्यम से ही समूह का निर्माण होता है। बच्चा जिस लोगो का कार्ड उठाकर लाता है। उसी लोगो वाले समूह (थाली) में बच्चा जाकर स्वयं बैठ जाता है। लोगो के माध्यम से बच्चे किस गतिविधि पर काम कर रहे हैं। इसकी जानकारी हो जाती है। इसके साथ–साथ लोगो के माध्यम से ही बच्चों के मन में विभिन्न प्रकार के पशु पक्षी, फल तथा सामानों के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा पैदा होती है। लोगो की संख्या एवं उपयोग होने वाली वस्तु का विवरण इस प्रकार है।

क्र.	विषय	लोगो की संख्या	लोगो की वस्तु
1	हिन्दी	19	पशु
2.	गणित	21	पक्षी
3.	पर्यावरण	12	फल– फूल
4.	अंग्रेजी	18	इलेक्ट्रॉनिक सामान
5.	सामान्य किट	6	दैनिक जीवन के उपयोगी वस्तु
	योग	**76**	

लोगो का उपयोग

1.मनोरंजक :– बच्चे, पशु, पक्षी आदि के चित्रों को देखकर उन्हें अपने पूर्व अनुभवों से जोड़कर प्रसन्न होते हैं। इससे उनका एक तरह से मनोरंजन होता है।

2. **विषयवस्तु का ज्ञान** :– लोगो से छात्र एवं शिक्षक को विषय की जानकारी होगी। जैसे पशु के चित्र से भाषा, पक्षी के चित्र से गणित, फल के चित्र से पर्यावरण विषय की तथा इलेक्ट्रानिक सामानों से अंग्रेजी विषय की जानकारी होगी।

3. **क्रमबद्ध तरीके से सीखना** :– बच्चे कार्ड में लोगो देखकर उसी क्रम से कार्ड उठाते है जिस क्रम से सीढ़ी में व्यवस्थित किया गया है। इससे उनको क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन करने का मौका मिलता है।

4 **बच्चों के स्तर का ज्ञान** :–बच्चा किस लोगो पर कार्य कर रहा है और कितने समय से कर रहा है। इससे बच्चे के स्तर का ज्ञान होगा और उसके स्तर में सुधार हेतु आवश्यक गतिविधियों का चयन किया जा सकेगा।

5. **लोगो से गतिविधि का निर्धारण** :– लोगो देखकर बच्चे निर्धारित गतिविधि के अनुसार कार्य करेंगे। पूर्व में किये गये कार्यों के अनुभव के आधार पर स्वअधिगम/ सहअधिगम प्रक्रिया को क्रियान्वित करेंगे और अगली गतिविधि का चयन स्वयं करेंगे।

6. **कार्ड उठाने में एवं रखने में सुविधा** :– सीढ़ी पर बने लोगो और कार्ड के क्रमांक को देखकर छात्र कार्ड उठायेंगे और वापस रखेंगे। इससे छात्र अपनी आवश्यकतानुसार कार्ड उठा

सकेंगे। बिना विषय का ध्यान दिए हुए अलग–अलग ट्रे में लोगो के आधार पर कार्ड रखे होते हैं। उनके क्रमांक को देखकर एवं रंग से पहचान कर कक्षा का पता करते है।

7. **सीखने की गति का सम्मान** :– बच्चा, लोगो में निर्धारित कार्य को पूर्णकर अपनी गति के अनुसार माइल स्टोन पूरा कर सकता है। उसे शिक्षक के निर्देश या साथियों के इंतजार की आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रकार सभी बच्चे अपनी गति के अनुसार कार्य कर सकते हैं।

8 **रूचि के अनुसार सीखना** : माइल स्टोन के लोगो को पूरा करने के लिये समय–सीमा का बंधन नहीं है। छात्र अपनी क्षमता के अनुसार कम या अधिक समय में माइल स्टोन की गतिविधियों को पूरा कर सकता है। इससे छात्र अपनी रूचि के अनुसार सीखेंगे।

9. **समूह निर्धारण में सुविधा** : बच्चे, लोगो के अनुसार कौन सी गतिविधि करना है, किस समूह पर बैठना है, किन साथियों के साथ बैठना है, का निर्धारण स्वयं कर सकते हैं।

विषयवस्तु से संबंधित लोगो का विवरण :–

भाषा –

1. – बिल्ली – कविता सुनाना/अवधारणा कार्ड

2. – घोड़ा– कहानी सुनाना/ अवधारणा कार्ड

3. – हिरण – चित्र कार्ड (शब्दकोष)

4. – शेर– निर्देश/आदेश कार्ड/आदर सूचक

5. – गिलहरी – पासा वाले खेल

6. – कुत्ता – कठिन शब्द कार्ड/व्यवहारिक व्याकरण

7. – भेड़ – रेलगाड़ी

8. – बंदर – अभिनय/वर्णन करना

9. – बकरी – कक्षा के अंदर खेल/ वर्ग पहेली

10. – ऊँट – कक्षा के बाहर का खेल/बिल्लस खेल

11. – चूहा – मूल अक्षर से बने शब्द चित्र कार्ड

12. – कछुआ – खिड़की मात्रा कार्ड

13. 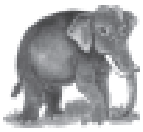 – हाथी – लेखन अभ्यास

14. – बैल जोड़ – अभ्यास कार्ड।

15. – लोमड़ी – स्क्रैप बुक

16. – पुस्तक पढ़ता बंदर – रीडर्स

17. – गाय – मूल्यांकन

18. – भालू – उपचारात्मक शिक्षण/निदानात्मक प्रशिक्षण

19. – गैंडा – मध्य/अंतिम मूल्यांकन

विषय – गणित

1. – मुर्गा – अवधारणात्मक कार्ड/शिक्षक कार्ड

   गीत/कहानी को/गणित को रोचक बनाने के लिए

2. – कौआ – गणितीय खेल – (बाहर का खेल)

   (1) कूदने का
   (2) बोलो जी बोलो कितने
   (3) मैं हूं कौन
   (4) दो समूहों का खेल

3. – कबूतर – अंक कार्ड

4. – चील – घटाना से संबंधित अभ्यास

5. – बया – भाग

6. – तोता – जोड़ना से संबंधित अभ्यास

7. – बगुला – मोटा–पतला,छोटा–बड़ा, कम–ज्यादा, लम्बा–ऊंचा,

   तुलना करना, अंतर निकालना

8. – कठफोड़वा – गुणा

9. – नीलकंठ – सम विषम, स्थानीय मान

10. – किंगफिशर – गिनना, अभ्यास समूह बनाना, बोलना, पहाड़ा

11. – बतख – गणितीय खेल –

(1) सांप सीढ़ी

(2) रेलगाड़ी

(3) रास्ता ढूंढो

(4) पासे का खेल

12. – चमगादड़ – उल्टा क्रम/सीधा क्रम, पहले बाद और बीच की संख्या। घटते–बढ़ते क्रम।

13. – तीतर – रिक्त स्थान

14. – गौरैया – समय, सप्ताह, दिन, वर्ष, माह

15. – मैना – लिखने का अभ्यास

16. – उल्लू – मापन से संबंधित अभ्यास

17. – उड़ती चिड़िया – मुद्रा

18. – सारस – ज्यामितीय आकृति से संबंधित

19. – मोर – मूल्यांकन कार्य

20. – गिद्ध – मध्य मूल्यांकन/अंतिम मूल्यांकन

21. – हंस – उपचारात्मक शिक्षण

विषय – अंग्रेजी

1. – रेडियो – कविता कहानी

2. – फेन – सृजनात्मक

3. – हीटर – वर्ण की अवधारणा

4. – कैमरा – क्रिया

5. – कम्प्युटर – गणना

6. – टेलीविजन – शब्द चित्र संवाद कार्ड

7. – मिक्सी – पासा खेल

8. – बल्ब – परिचय खेल

9. – टेलीफोन – चित्र देखकर संवाद, अभिनय, वर्णन

10. – मोबाइल – खेल वार्ता, स्थानीय खेल

11. – फ्रिज – शब्द, अक्षर कार्ड जमाना

12. – ट्यूब लाईट – रंग भरना, बिन्दु मिलाओ

13. – कुलर – लेखन

14. – माइक – वर्ण कार्ड

15. – टेबल लैम्प – मूल्यांकन

16. – एंटिना – उपचारात्मक

17. – आयरन – मध्य/अंतिम मूल्यांकन

18. रोबोट – लोगो परिचय

विषय – पर्यावरण अध्ययन

1. – आम – सर्वेक्षण करना

2. – अनार – संकलन + वर्गीकरण

3. – नारियल – कविता एवं कहानी

4. – केला – चर्चा कार्ड

5. – सीताफल – अभिनय

6. – अंगूर – अभ्यास

7. – सेब – कक्षा के अंदर का खेल

8. – अमरूद – कक्षा के बाहर खेल

9. – अनानास – चित्र बनाना और रंग भरना

10. – पपीता – गतिविधि/प्रयोग करना

11. – इमली – मूल्यांकन

12. आंवला – त्रैमासिक, छैमाही वार्षिक मूल्यांकन

'सामान्य किट' में उपयोग किए गए चिह्न एवं लोगो :

1. माँ की कहानी के लिए

2. शिक्षक द्वारा लिखी गई कहानी के लिए

3. बच्चों द्वारा रचित कहानी एवं कविता के लिए

4. सुनियोजित योजना

5. आकस्मिक योजना

6. बाल पुस्तकालय

4. सीढ़ी (Ladder) से परिचय

सीखने के उद्देश्यों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बांटकर माइल स्टोन बनाए गए हैं। इससे संबंधित विविध विषयवस्तु के कार्ड बनाकर उन्हें लोगो (चिन्ह) प्रदान किया गया है। हमारे सामने यह समस्या आ सकती है कि इसे बच्चों एवं शिक्षकों की सुविधा के लिए कैसे व्यवस्थित करें। सीखने की स्थिति एवं कार्ड उठाने/रखने का नियंत्रक कौन हो? इसकी पूर्ति हेतु एक सीढ़ी की कल्पना की गई है वास्तव में यह एक मार्ग है, जो कार्डों को स्थान प्रदान करता है। अर्थात सीढ़ी ही कार्डों को यथास्थान व्यवस्थित करने एवं सीखने की स्थिति/सीखने के क्रम का निर्धारण करती है।

प्रत्येक विषय में उपरोक्त प्रक्रियाओं का अनुसरण करने हेतु चिन्ह युक्त कार्ड बनाए गए हैं। प्रत्येक कार्ड में विषयवस्तु से संबंधित गतिविधियाँ होती हैं। पर्यावरण विषय की सीढ़ी अन्य विषयों से कुछ पृथक है जिसमें शिक्षक स्वतंत्र गतिविधियों का चयन कर सकता है। इसके लिए संबंधित कार्ड स्वयं बनायेंगे। अतः शिक्षक उन स्थानों पर अपनी आवश्यकतानुसार गतिविधि करा सकता है। हिन्दी, गणित और अंग्रेजी की सीढ़ी सर्पाकार है जबकि पर्यावरण की सीढ़ी को फूलों की पंखुड़ियों द्वारा दर्शाया गया है।

विषय के अनुसार सारी गतिविधियों का एक सुनियोजित एवं चरणबद्ध क्रम होता है। सम्पूर्ण चरणबद्ध क्रम को सीढ़ी (Ladder) कहते हैं।

सीढ़ी में वर्ष भर के पाठ्यक्रम को स्थापित किया गया है। इस पाठ्यक्रम को छोटे–छोटे भागों में विभिक्त किया गया है, जिसे हम माइल स्टोन की संज्ञा देते है। माइल स्टोन में सीखने के क्रम के आधार पर लोगो को व्यवस्थित किया गया है। सीढ़ी से छात्र कौन–कौन से कार्डों से संबंधित कक्षा कार्य या गतिविधियाँ कर रहे हैं इसकी जानकारी शिक्षक को आसानी से हो जाती है। सीढ़ी वह माध्यम है जिससे छात्र सीखने की विधियों द्वारा निरंतर प्रगति कर सकता है। जिससे बच्चों में अधिक से अधिक तथ्यों को सीखने की इच्छा उत्पन्न होगी। शिक्षक यह बता सकेंगे कि उनकी कक्षा का कौन सा छात्र तेज गति से और कौन से छात्र मंद गति से सीख रहा है। इसमें यदि कोई बच्चा कक्षा में अनुपस्थित हो जाता है और कुछ दिनों के बाद पुनः वापस आता है तो ऐसी स्थिति में अध्यापक एवं बच्चे को यह मालूम हो जाता है कि उसने कहां तक सीखा था और अब कहां से प्रारंभ करना है।

सीढ़ी की प्रकृति :

भाषा, गणित एवं अंग्रेजी विषय में अध्ययन के लिए एक निश्चित क्रम निर्धारित होता है। बच्चे एक निश्चित उद्देश्य में निर्धारित किये गये निश्चित ज्ञान को अर्जित करते हुए आगे बढ़ेंगे। अतः गणित एवं भाषा के सीढ़ी की प्रकृति सर्पाकार होती है एवं एक निश्चित क्रम में आगे बढ़ती है। लोगो को क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित किया है। ठीक इसी तरह अंग्रेजी भी भाषा की तरह सीखने में व्यवहार करती है, अतः इसे भी सर्पाकार सीढ़ी से दर्शाया गया। पर्यावरण का क्षेत्र एक ओर असीमित तथा व्यापक है, तो दूसरी ओर इसे एक क्रम में रख पाना मुश्किल है। इसे क्रमबद्ध नहीं रखा जा सकता, अतः इसके माइल स्टोन को एक फूल की आकृति दिया गया है।

इसके सीढ़ी पर हम प्रत्येक फूल के नीचे से प्रवेश करते हैं, जहां सामान्य तौर पर आम लोगो मिलेगा। यह सर्वेक्षण कार्ड का प्रतीक है। पर्यावरण अध्ययन में प्रत्यक्ष अवलोकन एक अनिवार्य पक्ष है, अतः इसे प्रारंभिक अध्ययन में ही स्थान देने का प्रयास किया गया है। आम, अनार, नारियल व केला लोगो वाले कार्ड को शिक्षक स्वयं कराता है। इसके बाद शिक्षक सेव, सीताफल, अंगूर, बिही व अनानास लोगो को समूह निर्धारण कर गतिविधि करने हेतु दे सकता है। अंत में इमली कार्ड के माध्यम से बच्चे का मूल्यांकन किया जायेगा।

सीढ़ी में लोगो को जमाने की आवश्यकता :

1. लोगो विषय का ज्ञान कराता है :– बहुकक्षा शिक्षण में चारों विषयों को लेकर सीढ़ी तैयार किया गया है – चारों विषयों की पहचान के लिए लोगो को सीढ़ी पर दर्शाना जरूरी है जैसेः– हिंदी की सीढ़ी में जानवर, गणित की सीढ़ी में पक्षी, पर्यावरण में फल, अंग्रेजी की सीढ़ी में इलेक्ट्रॉनिक सामान से संबंधित लोगो का इस्तेमाल किया गया है।

2. लोगो, गतिविधि को निर्धारित करता है :– सीढ़ी में अलग–अलग लोगो के लिए अलग–अलग गतिविधियाँ हैं जैसे :– गणित में चील से घटाना संक्रिया, चमगादड़ से उल्टे क्रम एवं सीधे क्रम में संख्याओं को जमाना, बया से भाग संक्रिया, बतख लोगो खेल गतिविधि को निर्धारित करता है, इसी प्रकार पर्यावरण विषय में आम लोगो से सर्वेक्षण, केला लोगो से चर्चा, सेब, खेल गतिविधि को निर्धारित करता है तथा हिंदी में बिल्ली लोगो से कविता, बैलजोड़ी लोगो से जोड़ी बनाना, गिलहरी लोगो पासा के खेल की गतिविधि को निर्धारित करता है। इस प्रकार प्रत्येक विषय की सीढ़ी पर लोगो का निर्धारण आवश्यक है।

3. कार्ड को उठाने व रखने में आसानी :– सीढ़ी में दर्शाए गए सीखने के क्रमानुसार कार्ड्स छाँटकर उठाए तथा उनके अनुसार उद्देश्य पूरा होने पर पुनः निर्धारित स्थान पर रखे जा सकते हैं।

4. सीखने का क्रम जानने हेतु :– सीढ़ी में छोटे–छोटे टुकडों में विभक्त उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु कार्ड का निर्माण किया गया है। प्रत्येक कार्ड को एक लोगो व नम्बर दिया गया है। उन कार्डों को सीखने के क्रम में व्यवस्थित किया गया है। सीढ़ी के माध्यम से सीखने के क्रम को शिक्षक एवं बच्चे जान सकेंगे।

5. उद्देश्य की पूर्णता :– प्रत्येक कक्षा के, प्रत्येक विषय में उद्देश्य (विषयवस्तु) निर्धारित किए गए हैं, इन उद्देश्यों को कार्ड्स में दर्शाया गया है, जिन पर लोगो अंकित है। अतः सीढ़ी के अंतिम उद्देश्य तक पहुंचने हेतु लोगो का उपयोग किया गया है।

6. कक्षा एवं स्तर की प्रगति :– क्रमशः लोगो का चयन कर गतिविधि करते–करते सारे माइल स्टोन पूर्ण किए जाएंगे। जिससे हमें कक्षोन्नति या उच्च स्तर प्राप्त होगा। इस प्रकार प्रगति के लिए लोगो को सीढ़ी में स्थान दिया गया है।

7. मूल्यांकन कार्य की आसानी हेतु :– सीढ़ी में हर माइल स्टोन में मूल्यांकन होता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया, सीखने की पूर्णता की पहचान होती है। बच्चे जब क्रमिक रूप से रूचिपूर्ण ढंग से सीखते हुए बच्चे मूल्यांकन कार्ड में पहुंच जाता है। बच्चा वह कार्ड भी अन्य कार्डों की भांति सरलता से पूर्ण करता है। जिससे बच्चे के मन से मूल्यांकन का भय समाप्त हो जाता है।

8. लम्बी अनुपस्थिति वाले छात्रों को सुविधा – लम्बी अनुपस्थिति वाले बच्चे जब कक्षा में पुनः उपस्थित होते हैं, तब वह अपना स्तर सीढ़ी में देखकर जानते हैं।

सीढ़ी का उपयोग :

छात्रों को भाषा और गणित की सीढ़ी में एकदम नीचे से प्राणियों के मुंह की दिशा की ओर आगे बढ़ते हुए क्रम संख्या के अनुसार कार्डों एवं गतिविधियों को पूरा करते हुए सबसे ऊपर वाली सीढ़ी के आखिरी चरण तक पहुंचना होता है, ऐसा करने वाला छात्र उस कक्षा की पढ़ाई पूरी कर लेता है। पर्यावरण में आवश्यकतावश अलग–अलग माइल स्टोन से सीढ़ी पर कार्य करना होगा।

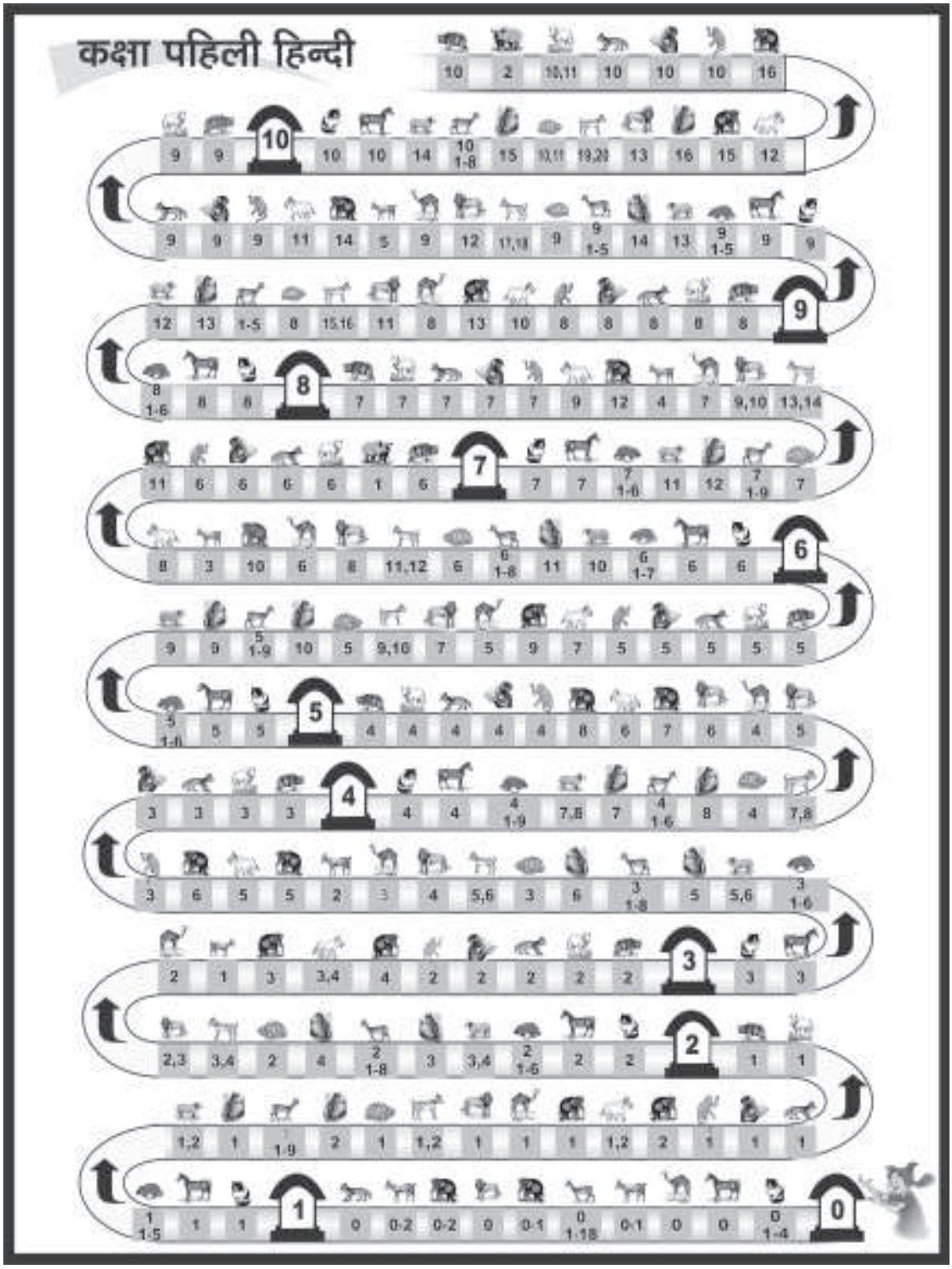
कक्षा पहिली हिन्दी
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
0

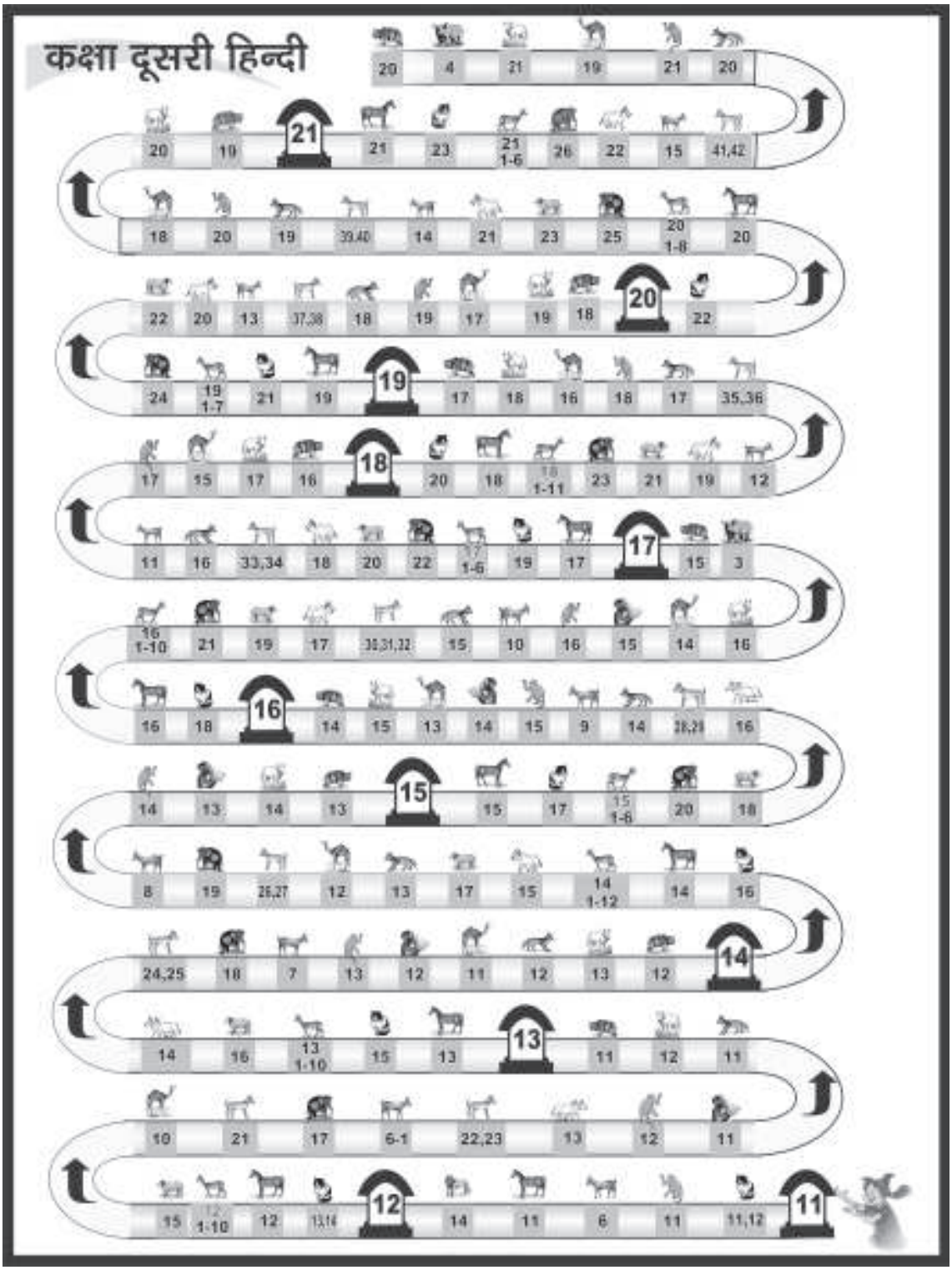
कक्षा दूसरी हिन्दी
20 4 21 19 21 20
20 19 21 21 23 21 1-6 26 22 15 41,42
18 20 19 39,40 14 21 23 25 20 1-8 20
22 20 13 37,38 18 19 17 19 18 20 22
24 19 1-7 21 19 19 17 18 16 18 17 35,36
17 15 17 16 18 20 18 18 1-11 23 21 19 12
11 16 33,34 18 20 22 17 1-6 19 17 17 15 3
16 1-10 21 19 17 30,31,32 15 10 16 15 14 16
16 18 16 14 15 13 14 15 9 14 28,29 16
14 13 14 13 15 15 17 15 1-6 20 18
8 19 26,27 12 13 17 15 14 1-12 14 16
24,25 18 7 13 12 11 12 13 12 14
14 16 13 1-10 15 13 13 11 12 11
10 21 17 6-1 22,23 13 12 11
15 12 1-10 12 13,14 12 14 11 6 11 11,12 11

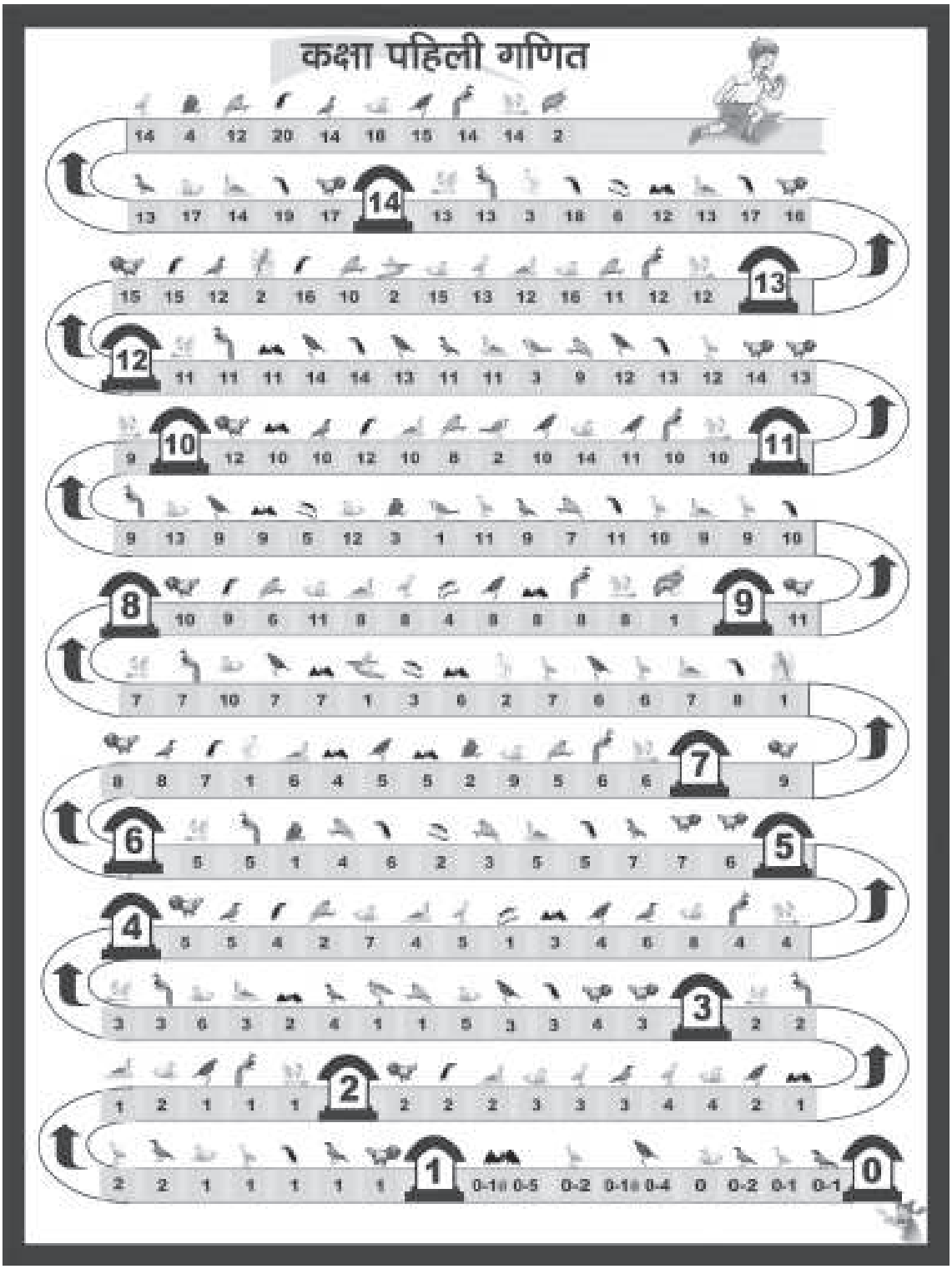
कक्षा पहिली गणित
14 4 12 20 14 18 15 14 14 2
13 17 14 19 17 14 13 13 3 18 8 12 13 17 16
15 15 12 2 16 10 2 15 13 12 16 11 12 12 13
12 11 11 11 14 14 13 11 11 3 9 12 13 12 14 13
9 10 12 10 10 12 10 8 2 10 14 11 10 10 11
9 13 9 9 5 12 3 1 11 9 7 11 10 9 9 10
8 10 9 6 11 8 8 4 8 8 8 8 1 9 11
7 7 10 7 7 1 3 6 2 7 6 6 7 8 1
8 8 7 1 6 4 5 5 2 9 5 6 6 7 9
6 5 5 1 4 6 2 3 5 5 7 7 6 5
4 5 5 4 2 7 4 5 1 3 4 6 8 4 4
3 3 6 3 2 4 1 1 5 3 3 4 3 3 2 2
1 2 1 1 1 2 2 2 2 3 3 3 4 4 2 1
2 2 1 1 1 1 1 1 0-1 0-5 0-2 0-1 0-4 0 0-2 0-1 0-1 0

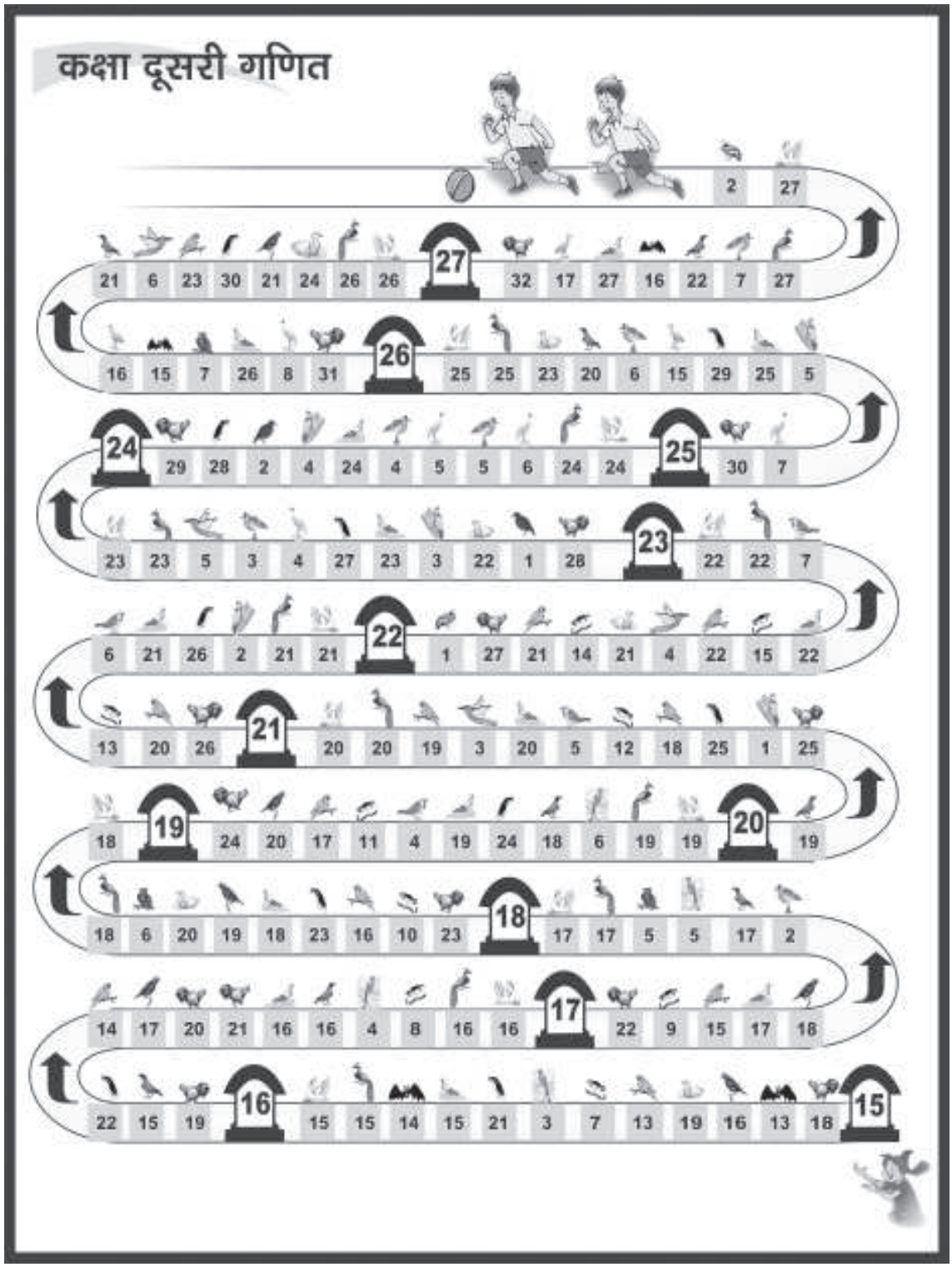
कक्षा दूसरी गणित
2 27
27
21 6 23 30 21 24 26 26 32 17 27 16 22 7 27
26
16 15 7 26 8 31 25 25 23 20 6 15 29 25 5
24
29 28 2 4 24 4 5 5 6 24 24
25
30 7
23
23 23 5 3 4 27 23 3 22 1 28 22 22 7
22
6 21 26 2 21 21 1 27 21 14 21 4 22 15 22
21
13 20 26 20 20 19 3 20 5 12 18 25 1 25
19
18 24 20 17 11 4 19 24 18 6 19 19
20
19
18
18 6 20 19 18 23 16 10 23 17 17 5 5 17 2
17
14 17 20 21 16 16 4 8 16 16 22 9 15 17 18
16
22 15 19 15 15 14 15 21 3 7 13 19 16 13 18
15

कक्षा पहिली अंग्रेजी
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
0

कक्षा दूसरी अंग्रेजी
18 24 24 25 25 34 29 18,19 19 25 25
15,16,17 26,27,28 33 24 24 23 23 24,25 17 13,14 32 23
10 15 21 21 22 22 30,31 23 11,12 16 22 22 23
22 28,29 21 21 20 20 9 14 14 27 21 20 1-6 14
24 13 19 1-8 20 13 13 25 8 19 19 20 20 26
19 19 18 18 19 18 1-8 12 12 23 7 22 6
17 21 11 17 1-8 11 18 12 5 17 17 18 10
17 16 16 10,11 10 13,14 16,17 15 1-8 10 18,19,20 16 16
15 16 9 17 14 1-6 15 11 9 12 3,4 9 15 15
15 14 14 2 8 8 10 14 14 1-8 8 14,15 14 14

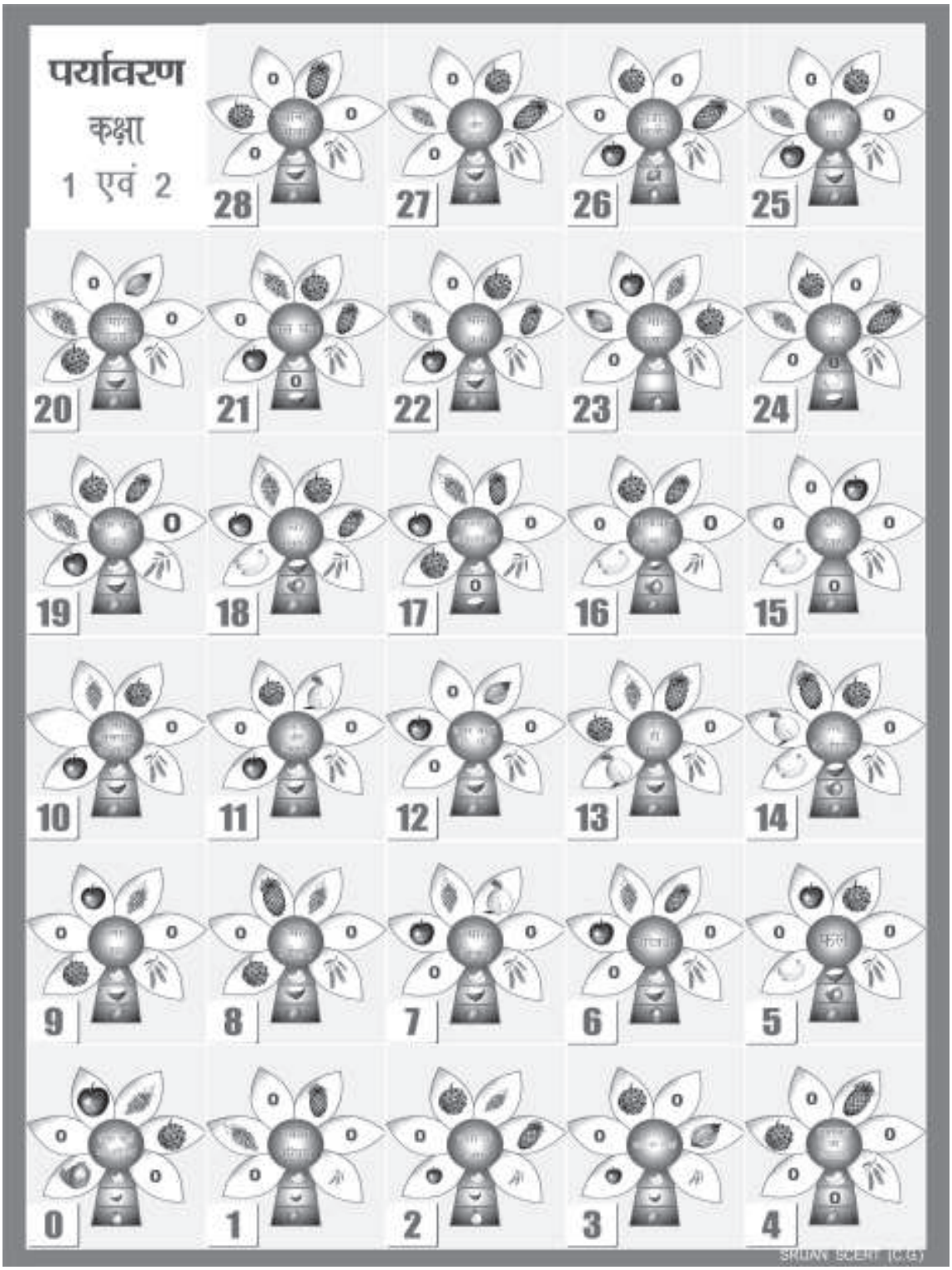
पर्यावरण
कक्षा
1 एवं 2
28
27
26
25
20
21
22
23
24
19
18
17
16
15
10
11
12
13
14
9
8
7
6
5
0
1
2
3
4

5. समूह :

सम्पूर्ण MGML शिक्षण प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण अंग समूह बनाना है। पारम्परिक शिक्षा प्रणाली में एक कक्षा के बच्चे एक ही समूह में पंक्तिबद्ध बैठते हैं। यहां समूह की बात नहीं होती। कक्षा पहिली से चौथी के बच्चों को एक साथ एक ही कक्ष में समूहवार बैठाकर कार्य करना होगा। भाषा, गणित एवं अंग्रेजी विषयों के लिए निर्धारित छः समूह बनाये जाते हैं। इन समूहों में बच्चे लोगो के आधार पर बैठते हैं। समूहों की विशेषता यह है कि वह कार्डों में लिखे लोगो एवं विषयवस्तु से मेल खाता है। आइये देखें ये समूह कौन–कौन से हैं और इनकी क्या विशेषताएँ हैं–

1. शिक्षक समर्थित समूह :

प्रारंभिक अवधारणा अथवा कोई नवीन गतिविधि हेतु बच्चों को शिक्षक की अधिक आवश्यकता होती है। अतः इस तरह की अवधारणाओं से संबंधित कार्ड तैयार किये गये हैं। जिन्हें अवधारणा कार्ड कहते है। जिसके लोगो को शिक्षक समर्थित समूह में रखा गया है। शिक्षक इस समूह में बैठकर अधिक समय तक गतिविधि करायेंगे एवं अवधारणा स्प्ष्ट करेंगे। हिन्दी में बिल्ली, घोड़ा कार्ड, गणित में मुर्गा, अंग्रेजी में रेडियो कार्ड एवं पर्यावरण में नारियल कार्ड अवधारणा कार्ड है। बच्चे किसी माईल स्टोन को पार करने के बाद यही से नये माइल स्टोन की गतिविधि प्रारंभ करते हैं। किसी भी माईल स्टोन का यह पहला कार्ड होता है।

2. आंशिक शिक्षक समूह :

अवधारणा स्पष्ट होने के पश्चात बच्चों को इसके अभ्यास की आवश्यकता होती है। क्योंकि अवधारणा जानने के बाद यदि बार–बार अभ्यास के मौके नहीं मिलते है। तो बच्चे उस अवधारणा को भूल सकते है। अतः अभ्यास के लिए अनेक कार्ड बनाये गए है। आंशिक शिक्षक समूह में शिक्षक थोड़े समय के लिए बैठते है एवं निर्देश देते है। इस लिए इस समूह को पहले समूह के नजदीक रखा जाना चाहिए। ताकि शिक्षक दूर से ही इस पर ही नजर रख सके।

जैसे – हिन्दी में हिरण लोगो का कार्ड आंशिक शिक्षक समूह में आता है। इस तरह के कार्डों में ऐसा अभ्यास रखा गया है जिसमें थोड़े से मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी।

3. सहपाठी समर्थित समूह :

बच्चों के सीखने की एक महत्वपूर्ण विधि है। साथियों से सीखना। बच्चे आपस में बाते करते हुए बहुत कुछ ज्ञान ग्रहण कर लेते है। उनके इस गुण का उपयोग कर सहपाठी समर्थित समूह बनाया गया है। इसमें दी गई गतिविधि में इस तरह के अभ्यास हैं। जो अपने साथियों से मिलजुल कर खेलने–कूदने या इस तरह की गतिविधि से संबंधित है। चूंकि कक्षा एक से चार तक के सभी बच्चे साथ–साथ बैठेंगे अतः नीचले माईल स्टोन वाले बच्चे की सहायता उच्च माईल स्टोन वाला बच्चा कर सकता है। उदाहरण–गणित विषय में बगुला लोगो इस समूह में रखा गया जो बच्चा पाँचवें माइल स्टोन के बगुला कार्ड पर काम करता है और जो बच्चा 18वें माइल स्टोन के बगुला कार्ड पर काम करता है। ये दोनों बच्चे एक साथ इस समूह में बैठेंगे एवं एक दूसरे के सहयोग से सीखेंगे।

4. आंशिक सहपाठी समर्थित समूह :–

इस समूह में ऐसे लोगो के कार्ड रखे गये हैं। जिसकी गतिविधि में साथियों का आंशिक रूप से सहायता लेना होगा। उसके पश्चात वह स्वयं ही गतिविधि कर अभ्यास कर सकता है।

5. स्व–अधिगम समूह :–

बच्चों को स्व–अधिगम कार्य हेतु अवसर प्रदान किया जाता है। इस समूह में बच्चे स्वयं सीखते हैं। इसमें इस तरह के कार्ड तैयार किये गये हैं, जिसे वह स्वयं कर सके। स्व–अधिगम का तात्पर्य अकेले बैठकर विभिन्न सामग्रियों के माध्यम से सीखना है। बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में स्व–अधिगम का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। इन कार्डों में इस तरह की गतिविधि दिया गया है कि बच्चा स्वयं स्वतंत्र रूप से गतिविधि करता है। एवं सीखे हुए ज्ञान को अच्छी तरह से पुष्ट करता है।

6. मूल्यांकन समूह :–

प्रत्येक माइल स्टोन के अंत में मूल्यांकन कार्ड एवं उपचारात्मक कार्ड रखे गये हैं, इसके अतिरिक्ति भाषा, गणित एवं अंग्रेजी विषयों में मध्य मूल्यांकन एवं अंतिम मूल्यांकन के कार्ड है। इन सभी कार्डों पर गतिविधि शिक्षक अपने मार्गदर्शन में करेंगे, अतः यह कार्य मूल्यांकन समूह में होगा। मूल्यांकन के साथ–साथ उपचारात्मक कार्ड वाले बच्चे भी इसी समूह पर बैठेगा। यह समूह शिक्षक के पास वाले जगह पर होगा, ताकि शिक्षक आवश्यक सहयोग प्रदान कर सके।

इन छः समूह में बच्चे लेडर के अनुसार लोगो देखकर बैठते हैं। मूल्यांकन हेतु विशेष रूप से शिक्षक समर्थित समूह में एक अलग स्थान होता है, ताकि मूल्यांकन कार्य में बच्चे को कोई असुविधा न हो। पर्यावरण विषय में बच्चों को समूह बनाकर सर्वे अथवा अवलोकन हेतु भेजा जाता है। अतः इसमें समूह व्यवस्था इसके आधार पर किया जाता है। इस तरह छः समूह हमेशा याद रखना चाहिए।

विषय – हिन्दी

शिक्षक समर्थित समूह

आंशिक शिक्षक समर्थित समूह

साथी समर्थित समूह

आंशिक साथी समर्थित समूह

स्वअधिगम समूह

मूल्यांकन समूह

विषय – हिन्दी

शिक्षक समर्थित समूह

आंशिक शिक्षक समर्थित समूह

साथी समर्थित समूह

आंशिक साथी समर्थित समूह

स्वअधिगम समूह

मूल्यांकन समूह

विषय – अंग्रेजी

शिक्षक समर्थित समूह

आंशिक शिक्षक समर्थित समूह

साथी समर्थित समूह

आंशिक साथी समर्थित समूह

स्वअधिगम समूह

मूल्यांकन समूह

अध्याय – 4

MGML की कार्य प्रणाली

MGML की अलग–अलग तत्वों का अध्ययन कर लेने के पश्चात् इनकी मूल अवधारणा की सारी बातें स्पष्ट हो जाती है। अब हम इन सभी कड़ियों को जोड़कर कार्य प्रणाली को जानेगें। प्रारंभ से अंत तक कक्षा संचालन करने में कौन–कौन से स्तर से गुजरना पड़ेगा। यह इसकी कार्य प्रणाली होगी। समस्त कीट बाक्स एवं आवश्यक सामग्री एकत्रित हो जाने के पश्चात् इस तरह कार्य का संचालन किया जाय, मुख्य रूप से निम्नलिखित चरणों में MGML की सारी प्रक्रिया को स्पष्ट किया जा सकता है।

1. कक्षा कक्ष की व्यवस्था एवं सजावट :–

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कक्षा कक्ष की सजावट एवं बैठक व्यवस्था पारंपरिक ढंग से है, चूंकि हम MGML में शिक्षण भी सारी प्रविधि को परिवर्तित कर गति स्वतंत्रता के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अपना रहे हैं। निश्चित रूप से कक्षा की सजावट व्यवस्था में काफी परिवर्तन करना पड़ेगा। निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट किया गया है–

(अ) **कक्षा की दीवार** :– कक्षा की दीवार की सजावट बच्चों के रूचि के अनुरूप शिक्षण सामग्री आदि से किया जावे। चारों दीवार के नीचे ढाई फीट तक काले रंग का पेंट करें। दो–दो फीट के अंतर में सफेद रंग की खड़ी लाईन खींचा जायें। इस तरह एक खण्ड एक बच्चे के लिए स्लेट के रूप में उपयोग होगा। यदि खण्डों की संख्या बच्चों से कम है तो दो बच्चों की

जोड़ी बनाकर दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त दीवार सीट पर सीढ़ी एवं मूल्यांकन सीट लगाये जायेंगे। ऊपर में महापुरूषों के चित्र लगे हो तथा उनसे संबंधित स्लोगन लिखा हो। 6 समूहों में बैठने के लिए छः समूह लोगो कार्ड (थाली लोगो) कीट के साथ प्रदान किया जायेगा। इसे शिक्षक पहले ही समूह के बीच मे रखेंगे। ताकि बच्चे उसे देखकर वहां आकर अपने नियत स्थान में बैठ सके। समूह लोगो को दीवार में स्थायी रूप से भी बनाया जा सकता है।

दीवार पर रैक के नजदीक चारों विषयों के लेडर को लगाया जायेगा। जो बच्चों के पहुँच में हो, साथ ही दूसरे दीवार पर मूल्यांकन शीट लगाया जावेगा।

सृजन उत्सव

कक्षा व्यवस्था एवं सजावट की सारी तैयारी हो जाने के बाद शाला के समस्त शिक्षक मिलकर एक उत्सव का आयोजन करेंगे। जिसमें समुदाय के लोगों एवं पालकों को आमंत्रित किया जायेगा। इस उत्सव में समस्त कीट बाक्स एवं MGML की प्रणाली का प्रदर्शन किया जायेगा।

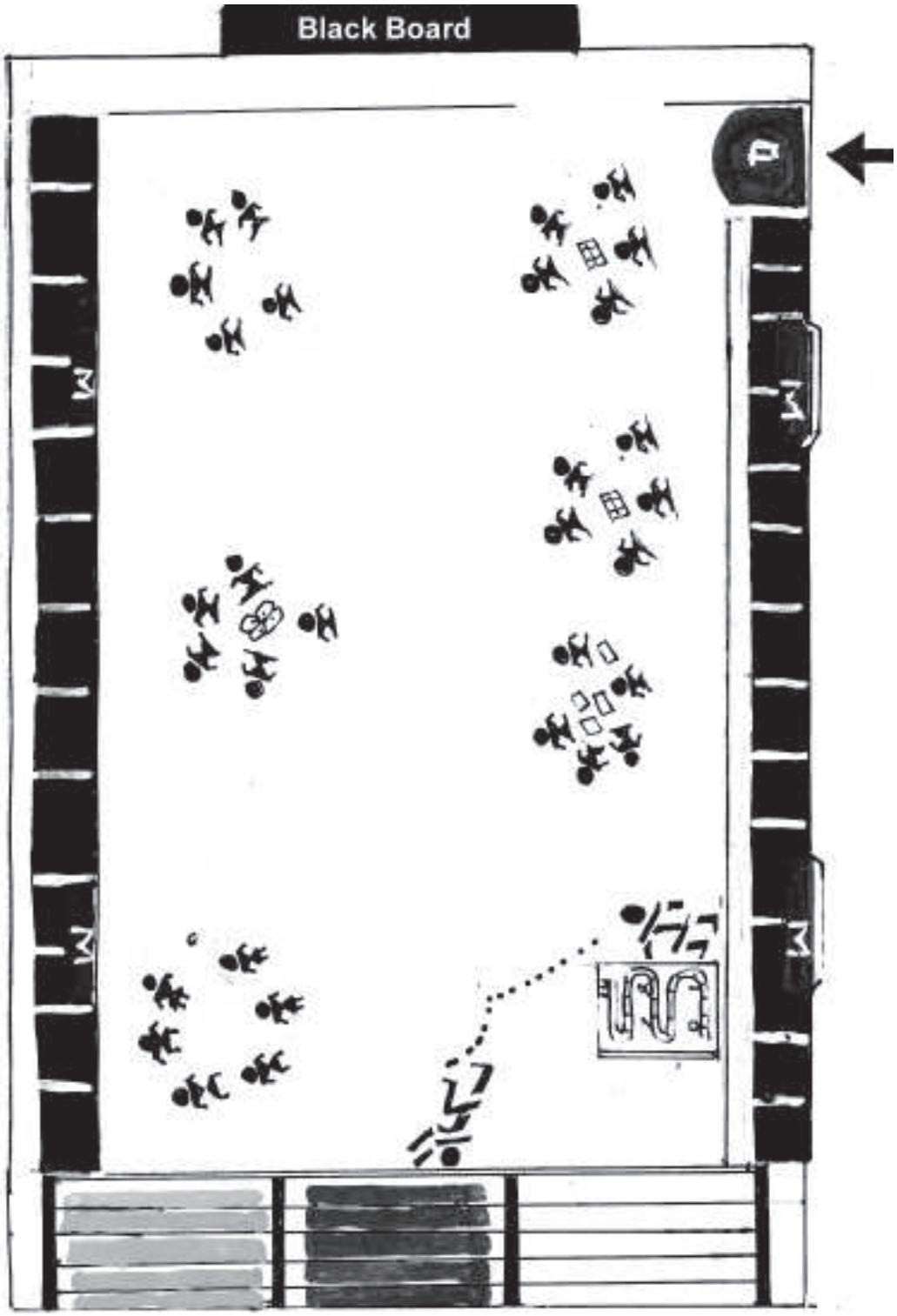
Black Board
D
W
W
W
W

(ब) छत में तार की जाली लगाना :– कक्षा में दीवार के किनारे–किनारे या बीचों–बीच तार एवं तार की जाली बनायी जाए। इसका उपयोग बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र कविता, कहानी, माँ की कहानी या शिक्षक द्वारा तैयार किया गया कहानी, चित्र को लगाने में होगा। तार को ऐसा लगाया जाए कि कक्षा में बैठे बच्चे उस कार्ड को देख सकें व पढ़ सकें।

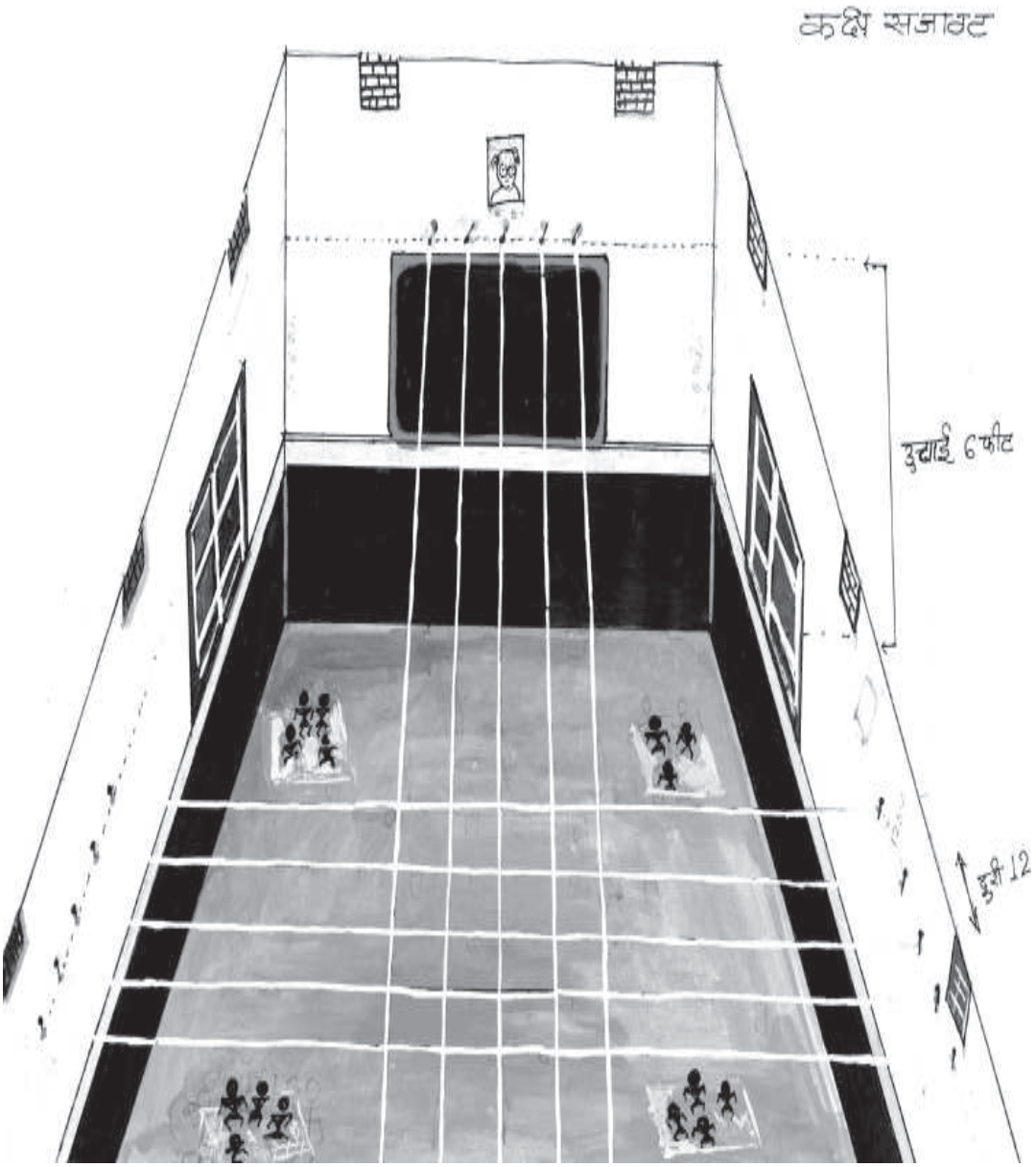

(स) बैठक व्यवस्था :– कक्षा में बैठक व्यवस्था के लिए छोटी–छोटी दरी या चटाई होनी चाहिए। चटाई प्रत्येक समूह के लिए अलग–अलग हो। दरी या चटाई के बीच समूह लोगो रखा जायेगा। शिक्षक बच्चों के बीच बैठकर गतिविधि करायेंगे। कुर्सी टेबल में बैठने पर शिक्षक और बच्चों के बीच आत्मीयता का संबंध नहीं बन पाता।

(द) रैक का स्थान :– कक्षा में रैक दीवार के किनारे रखा जावें। रेक में लोगोवार कार्ड व्यवस्थित रखा जावे। कार्ड रखने के लिए टोकरी की व्यवस्था हो। टोकरी बच्चों की पहुँच के अंदर रखनी होगी। जिससे बच्चे आसानी से कार्ड निकाल कर पढ़ सकें।

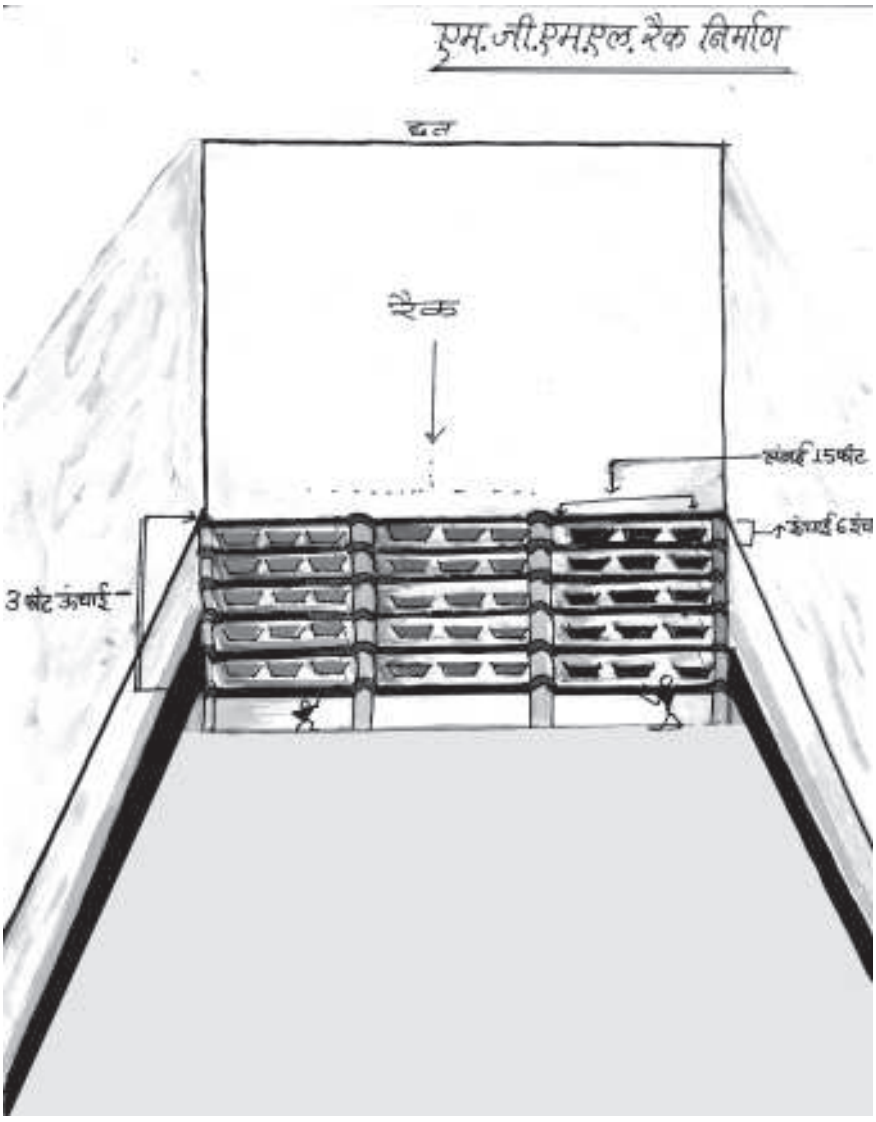

रैक की लम्बाई 15 फीट हो और ऊँचाई 3 फीट। रैक की एक दूसरे से दूरी 6 से 8 इंच होनी चाहिए इस तरह हम पॉच खानों वाले रैक का निर्माण कर सकते हैं। रैक निर्माण हेतु कम खर्च में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करें। जैसे –

1. रैक लकड़ी से आलमारी नुमा भी बनाया जा सकता है।
2. दीवारों में मोटा रॉड गड़ाकर पाटा लगाकर रैक बना सकते हैं।
3. रैक फिनीशिंग पत्थर से भी बना सकते हैं।
4 फिनिशिंग पत्थर से बना रैक अधिक मजबूत टिकाऊ एवं कम लागत में बनने वाला रैक है।

(इ) अन्य सहायक सामग्री :– MGML में जो सहायक सामग्री प्रदान की गई है इसके अतिरिक्त शाला की सहायक सामग्री, शिक्षक द्वारा तैयार सहायक सामग्री या अन्य उपयोग में आने वाली सहायक सामग्री का उपयोग शिक्षक पूर्ण रूप से कर सकते हैं।

(फ) मिश्रित कक्षा :– मिश्रित कक्ष कहने के तत्पर्य कक्षा एक से लेकर कक्षा चार तक के बच्चों का एक ही कक्षा में एक साथ समूह में बैठकर गतिविधि करने से है। हमें प्रत्येक कक्षा के बच्चों को मिलाकर एक मिश्रित कक्ष बनाना होगा। इसे ही MGMLकी कक्ष कहेंगे। इस तरह लगभग 40 बच्चों की कक्षा होगी। यदि बच्चे अधिक हैं तो इसी प्रक्रिया के अंतर्गत उनका दूसरा कक्ष बनाया जावेगा। यदि किसी शाला में कक्षा एक से चार तक की दर्ज संख्या 120 हैं तो इस तरह कुल 3 कक्ष तैयार की जावेगी। माइल स्टोन की संख्या एवं कार्डों के रंग के आधार पर बच्चों की कक्षा को जाना जा सकता है।

2. प्रारंभिक मूल्यांकन :–

कक्षा की सम्पूर्ण तैयारियां हो जाने के बाद MGML की कक्षा प्रारंभ की जा सकती है। इस हेतु शिक्षक को एक डायरी रखनी होगी, जिसमें सभी बच्चों के स्तर एवं माइल स्टोन संबंधी जानकारी हो। सर्वप्रथम बच्चों के स्तर का अध्ययन करेंगे, चूंकि जब हम स्तरानुकूल शिक्षण की बात करते है तब प्रत्येक बच्चे का मानसिक स्तर को जानना अत्यंत आवश्यक है, उनके मानसिक स्तर को माइल स्टोन के रूप में मापा जा सकता है। यहां शिक्षक को पूर्ण सावधानी बरतनी होगी। यदि प्रारंभिक मूल्यांकन सही नहीं किया जायेगा। तो पूरे समूह की

क्रियाकलाप प्रभावित होगा क्योंकि यदि कम स्तर के बच्चों को अधिक स्तर के माइल स्टोन में रखते हैं, तो वह इसे नहीं कर पायेगा। इसी प्रकार यदि अधिक माइल स्टोन के योग्य बच्चों को कम स्तर में रखते हैं, तो उसकी रूचि नहीं रहेगी, क्योंकि इसे वह पहले से ही जानता हैं।

आइये देखें कि प्रारंभिक मूल्यांकन कैसे करें। शिक्षक अपने डायरी में निम्नलिखित प्रारूप बनाये –

विषय – हिन्दी

क्र.	छात्र का नाम	अनुमानित माइल स्टोन	निश्चयात्मक माइल स्टोन	अस्थायी समूह–1	अस्थायी समूह–2
1.	मोहन	06	06	01	01
2.	रवि	07	02	01	01
3.	राहुल	17	16	02	02
4.	गीता	18	22	02	02
5.	राधा	08	07	01	01
6.	मनीष	25	25	03	03
7.	हेमिन	27	25	03	03
8.	डेविड	42	44	03	04
9.	शबाना	50	49	04	04
10.	गायत्री	16	22	02	02

1. सर्वप्रथम शिक्षक परिशिष्ट में लिखे सभी विषय के माइल स्टोन का अध्ययन कर लें।
2. कक्षा 1 एवं 4 के सभी बच्चों का नाम अंकित करें ।
3. प्रत्येक बच्चे को बुलाकर पूछताछ करें, कुछ प्रश्न कर उसकी योग्यता को जानने का प्रयास करें, इसके आधार पर पहले अनुमान लगाना होगा। कि वह उस विषय के किस माइल स्टोन में रखने योग्य है, उसके नाम के सामने अनुमानित माइल स्टोन का क्रमांक लिखें।
4. अब इन बच्चों के लिए निश्चयात्मक माइल स्टोन तय करना है, ताकि यह निश्चित तौर पर पता चल सके, कि वह किस माइल स्टोन का बच्चा है, इसके लिए अस्थायी समूह बनाना होगा।

5. अनुमानित माइल स्टोन के अनुसार नजदीक के माइल स्टोन के बच्चों को मिलाकर अस्थायी समूह बनाया जावे। जैसे – 5 एवं 6 माइल स्टोन के बच्चों को एक साथ रखें। इस तरह कुल 5 या 6 समूह तैयार कर सकते हैं। अस्थायी समूह इस प्रकार बनेगा। समूह में बैठने वाले अनुमानित माइल स्टोन के मूल्यांकन कार्ड लेकर बैठेगें।

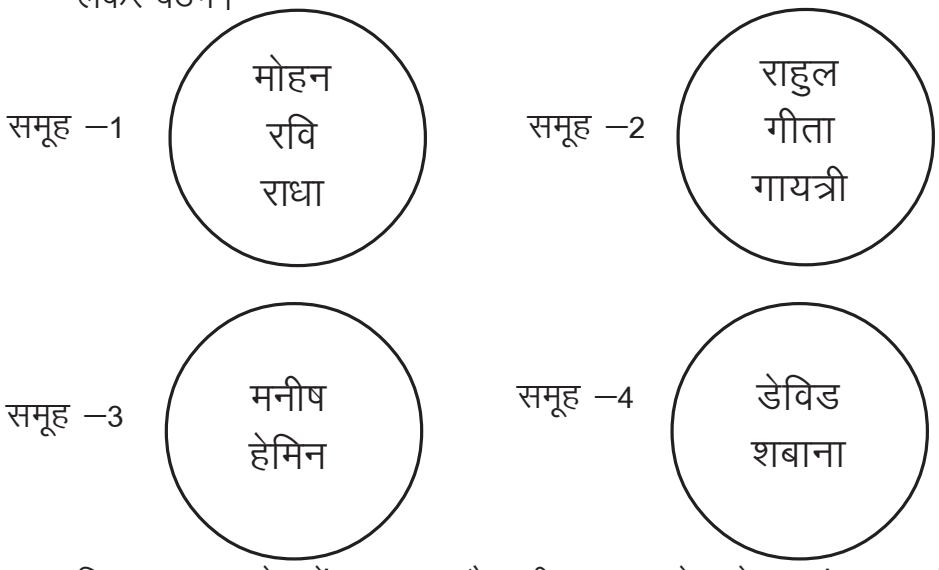

6. जिस माइल स्टोन में वह बच्चा है उसी माइल स्टोन के मूल्यांकन कार्ड को दिया जावेगा एवं वास्तविक परीक्षण किया जावेगा। यदि वह इसके पूरे प्रश्न हल कर लेता है तो अगले माइल स्टोन का मूल्यांकन कार्ड दिया जावेगा। ऐसा करते हुए जिस मूल्यांकन कार्ड को नहीं कर पाता है उसे उसी माइल स्टोन का बच्चा माना जायेगा।

7. इसी प्रकार कोई बच्चा उस माइल स्टोन के मूल्यांकन कार्ड को नहीं कर पाता तो उसे नीचे के माइल स्टोन का मूल्यांकन कार्ड दिया जावेगा। जिस माइल स्टोन के मूल्यांकन कार्ड को पूरा कर लेगा। उसे आगे माइल स्टोन पर रखा जायेगा। जैसे गीता अनुमानित माइल स्टोन 18 में थी। लेकिन वह माइल स्टोन 18 के मूल्यांकन कार्ड को पूरा कर लिया। उसे माइल स्टोन 19 का मूल्यांकन दिया गया। इसे भी उसने हल कर दिया। इस प्रकार बढ़ते हुए माइल स्टोन 22 के मूल्यांकन कार्ड को नहीं कर सकी। अतः उसे माइल 22 में रखा गया। इसी तरह हेमिन पहले 27 माइल स्टोन में थी। लेकिन कम होते– होते 25 में आकर रूकी।

8. इस प्रकार सभी बच्चों का निश्चित माइल स्टोन पता कर प्रारूप में लिखा जावेगा।

9. यही शिक्षक के लिए कक्षा प्रारंभ करने का आधार है।

3. ऐसे बनें समूह :–

प्रत्येक बच्चे के बारे में पता चल गया है कि वह किस माइल स्टोन में है अब शिक्षक को गतिविधि कराने एवं समूह में भेजना आसान हो जायेगा। मान लीजिए मोहन हिन्दी में छठवें माइल स्टोन पर है, उसे यह पहले ही बता दिया जावेगा और वह अपनी निजी लेडर में पाँचवें माइल स्टोन के मूल्यांकन कार्ड में सही का निशान लगायेगा, इसका मतलब यह है कि वह पाँचवे माइल स्टोन पूरा करके छठवें में प्रवेश किया है। मोहन कक्षा में लगे बड़े लेडर के पास जायेगा एवं प्रारंभ से ऊंगली चलाते हुए छठवें माइल स्टोन के प्रारंभ के बिल्ली कार्ड 06 पर रूकेगा, उसे इस नम्बर का कार्ड उठाना है। इसी तरह सभी बच्चे अपने–अपने माइल स्टोन के आधार पर अवधारणा कार्ड उठायेंगे। इन्हें गतिविधि कराने के लिए शिक्षक को अस्थायी समूह–2 का निर्माण करना होगा। जो कि इस प्रकार–

इन अस्थायी समूह में बच्चे अपना–अपना अवधारणा कार्ड लेकर बैठेंगे। धीरे–धीरे शिक्षक की सहायता से स्वंतत्र गतिविधि करते हुए जिस दिन पूरा करेंगे वे बच्चे इस समूह से निकलते जायेंगे और यह अस्थायी समूह समाप्त हो जायेगा।

अस्थायी समूह–2 बनाने की आवश्यकता क्यों हुई इस पर विचार करने से पता चलता है कि शिक्षक को अपनी सुविधा एवं बच्चों के भीड़ को रोकने के लिए यह आवश्यक है। यदि इसे नहीं बनाया जाता तो सभी बच्चे अवधारणा कार्ड लेकर शिक्षक समर्थित समूह में बैठ जाते तब शिक्षक को परेशानी होती। अतः अलग–अलग समूह अस्थायी रूप से बैठाने पर शिक्षक को आसानी होगी। यहाँ शिक्षक के बहुत बड़ी समस्या आ सकती है। कि वह प्रत्येक समूह में जाकर किस तरह गतिविधि करायें।

अस्थायी समूह–2 के निर्माण के बाद शिक्षक को आने वाली समस्या एवं निराकरण के उपाय–

निश्चात्मक माइल स्टोन प्राप्त करने के बाद शिक्षक अपनी डायरी में प्रत्येक बच्चे का रिकार्ड लिखेंगे। नजदीक के माइल स्टोन वाले बच्चों को मिलाकर अस्थायी समूह –2 बनायेंगे। इसे कक्षा के बीच में बच्चों को अपने समूह में बैठाकर अवधारणा कार्ड से गतिविधि करायेंगे। लेकिन यहाँ शिक्षक को परेशानी होती है। प्रत्येक बच्चे का अवधारण स्वयं देंगे। अतः अत्यधिक समय लग जाता है। इस हेतु निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं –

1. शिक्षक एक समूह में बैठकर अवधारण समझाये। शेष समूह के बच्चों में से किसी को खेल, किसी को गीत या रचनात्मक कार्य जैसे– फर्श पर चित्र बनाकर कंकड़ रखना, कागज पर विभिन्न आकृति बनाना आदि गतिविधि से व्यस्त रख सकते हैं।
2. शिक्षक एक समूह में रहकर दूसरे अन्य समूह में भी इनके अवधारणा कार्ड को देंगे। बड़े छोटे बच्चों को मॉनिटर की तरह अवधारणा को सीखाने में मदद करेंगे।
3. शिक्षक अपनी सहयोगी की सहायता लेकर उन बच्चों को गतिविधि करा सकते हैं।
4. बच्चों को रोचक गतिविधि में संलग्न कर बारी–बारी से अवधारणा स्पष्ट करें। जब तक कि सभी बच्चे अपने स्थायी समूह में न आ जाये।

महत्वपूर्ण सुझाव

अस्थायी समूह–2 में अवधारणा कार्ड पर गतिविधि कराने में शिक्षक का बहुत समय लग जाता है। इस हेतु सबसे अच्छा उपाय इस प्रकार हैं–

सबसे पहले हम अस्थायी समूह का निर्माण करेंगे। डायरी में जो बच्चे जिस माइल स्टोन में है उसे नोट करेंगे। अब शिक्षक यह देखें कि अधिक बच्चे किस समूह में है। उस समूह के बच्चे को उसके माइल स्टोन का कार्ड देकर सीधे स्थायी समूह में बैठायेंगे। अर्थात् उन्हें शिक्षक समर्थित समूह में बैठाकर गतिविधि करायेंगे। शेष बच्चे को उसके माइल स्टोन के ठीक पहले वाले माइल स्टोन के विभिन्न कार्डों में से कोई एक कार्ड देंगे। ध्यान रहे कि वह इस माइल स्टोन से आगे निकल गया है लेकिन व्यवस्था होने के दृष्टिकोण से ऐसा किया जा रहा है। सावधानी यह रखे कि अवधारणा कार्ड, मूल्यांकन कार्ड नहीं देंगे। उदाहरण के लिए कोई बच्चा यदि माइल स्टोन 5 में है तो व्यवस्था की दृष्टि से माइल स्टोन 4 का चूहा कार्ड देंगे। इसी प्रकार सभी बच्चों को अलग–अलग लोगों के कार्ड देंगे। तथा अपनी स्थायी समूह में बैठायेंगे। ऐसा करने से पहले दिन से ही सभी बच्चे स्थायी समूह में गतिविधि करने 7

अस्थायी समूह–2 से निकलने के बाद बच्चे लेडर के पास जायेंगे। उसके ठीक आगे का कार्ड उठायेंगे अब अस्थायी समूह में न जाकर दीवाल में बने 6 स्थायी समूह में अपने निध ार्ारित स्थान पर बैठेंगे एवं गतिविधि प्रारंभ करेंगे। इस प्रकार सभी बच्चे इन 6 स्थायी समूहों में गतिविधि करते हुए संलग्न हो जायेंगे। कुछ दिनों के पाश्चात कक्षा रन करने लगा एवं बच्चे स्वसंचालित रूप से समूह में आना–जाना एवं गतिविधि में संलग्न हो जायेंगे।

इसी प्रकार सभी बच्चे समूह में अपने–अपने कार्ड के अनुसार कार्य करेंगे। यहां शिक्षक पूरे कक्ष में नजर रखेंगे। एवं अपनी डायरी में बच्चों की प्रगति एवं उल्लेखनीय बातों को नोट करते जायेंगे। एक शिक्षक का समूह निर्माण के बारे में निम्नलिखित अनुभव है, जिससे समूह निर्माण की सारी बात स्पष्ट हो जाती है।

सत्र का प्रारंभ था। मुझे कक्षा 1ली एवं 2री के बच्चों को सिखाने की जिम्मेदारी मिली। मुझे बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति का प्रशिक्षण मिला। मन में नया उत्साह था। नवाचार का भूत मेरे मन में सवार था। मैंने अधिगम सामग्री व्यवस्थित कर, बच्चों से गतिविधि कराना प्रारंभ किया। मैंने शिक्षक हैण्ड बुक को देखा। उसे कक्षा 1ली के बच्चे के लिये ''बकरी'' (लोगो) से शुरूआत किया गया है। ''बकरी'' से संबंधित गतिविधि को ध्यान से पढ़ा। उसमें परिचय खेल की गतिविधि है। जब मैंने कक्षा दूसरी का प्रथम गतिविधि को पढ़ा उसमें माइल स्टोन 11 ''बिल्ली'' (लोगो) से शुरू किया गया था। जिसमें सरल कविता सुनने–सुनाने की गतिविधि दी गई है। मैंने दोनों कक्षाओं पर एक साथ काम करना शुरू किया। कक्षा दूसरी के बच्चों को एक–एक करके अपनी मन पसंद एक–एक कविता सुनाने के लिये कहा। इसके लिये कमरे का एक स्थान निश्चित कर दिया। बच्चों ने अपनी मन पसंद कविता अपने साथियों को सुनाना प्रारंभ कर दिये। अब मैं कक्षा पहिली के बच्चों को गोल घेरे में बैठाया और सभी बच्चों को ''नीम का पेड़'' से संबंधित एक–एक कार्ड दिया। बच्चे अपने कार्ड के चित्र को देखकर बहुत खुश हुए व एक दूसरे को दिखाने लगे। मैंने खेल का तरीका बताया। मैं बोलूंगा चूहा तो जिन बच्चों के पास ''चूहा'' चित्र वाला कार्ड होगा वे एक दूसरे के पास जायेंगे और अपना अपना नाम बताकर एक दूसरे से हाथ मिलायेंगे। इसके बाद अपने स्थान पर बैठ जायेंगे। खेल प्रारंभ हुआ। मैं उनके कार्डों के चित्रों को देखकर एक नाम बोलता, हाथ मिलाते व एक दूसरे के पास आते, अपना नाम बताते, हाथ मिलाते व अपने स्थान पर बैठ जाते। अब मेरे सभी बच्चे अपने–अपने स्तर के अनुरूप गतिविधि में हिस्सा लेने लगे। कमरे का दृश्य निम्न प्रकार से था।

कक्षा 1ली	कक्षा 2री
परिचय खेल	कविता सुनना
	सुनाना

कुछ समय पश्चात् मैंने देखा कि कक्षा पहिली का एक बच्चा मेरे कार्य को करने के लिये उत्साहित दिखा। मैंने अब कक्षा पहिली के बच्चों से कहा अब चित्र का नाम बोलने का काम मोहन करेगा। यह जिस चित्र का नाम बोलेगा उस नाम कार्ड वाले बच्चे एक दूसरे के पास जाकर अपना नाम बतायेंगे हाथ मिलाएंगे और अपने स्थान पर बैठ जायेंगे। मोहन यह कार्य बहुत ही उत्साह से करने लगा। मैंने अब एक श्यामपट पर माइल स्टोन 11 के बिल्ली कार्ड की कविता नाव चले भई नाव चले, ...एवं ढुल मुल करती चली टमाटर ..... को लिखा, दोनों कविताओं को हाव–भाव के साथ कक्षा 2री के बच्चों को सुनाया। कक्षा 2री के बच्चों को अन्य कविता के साथ–साथ इस कविता को भी सुनाने के लिये प्रेरित किया।

मुझको लगा कि कक्षा पहिली के बच्चे भी कविता सुनने के लिये उत्साहित हो रहे हैं। मैंने उनके स्तर के अनुरूप ''बिल्ली'' लोगो से कविता कार्ड निकाला व ''अगर न होता राजा देश में'' वाला कविता बच्चों को हाव–भाव के साथ सुनाया। सभी बच्चों ने कविता का आनंद लिया।

हिन्दी विषय के अंतर्गत कुछ दिनों तक यही गतिविधि चलती रही। मैंने देखा कि कक्षा दूसरी के कुछ बच्चों को कविता नाव चली भई नाव चली ..... पढ़ने के साथ–साथ याद भी हो गई है। मैं उन 5–6 बच्चों को सीढ़ी में उनके स्थान को दिखाया और बताया कि तुम्हें इस जगह से स्वयं आगे बढ़ना है व घोड़ा–1 वाले कार्ड की गतिविधि को करना है। उसमें लिखी हुई अधूरी कविता को पूर्ण करके बोलना, लिखना व पढ़ना है यह काम अपने साथियों के सहयोग से भी पूरा कर सकते हो। अब मेरी कक्षा में निम्नानुसार छात्रों के दो समूह बन गये।

पूर्ण शिक्षक
समर्थित समूह
कक्षा 1 व 2रीं

पूर्ण शिक्षक
समर्थित समूह
कक्षा 1 व 2रीं

कुछ बच्चों को सीढ़ी के अनुसार आगे बढ़ते देखकर कुछ बच्चों ने 'नाव चली भई नाव चली' एवं 'ढुल मुल करती टमाटर' पर अपना ध्यान लगाया व कविता को याद कर मुझको सुनाना। मैंने उन बच्चों को भी सीढ़ी में उनका स्थान बताया व स्वयं आगे बढ़ने का रास्ता बताया और उन्हें भी साथी समर्थित समूह में गतिविधि उन बच्चों को भी साथी सपोर्टेड समूह में गतिविधि करने के लये भेज दिया। अभी भी मेरे पास दो समूह थे। एक शिक्षक समर्थित समूह और दूसरा साथी समर्थित समूह। कुछ समय पश्चात् कुछ बच्चों द्वारा घोड़ा कार्ड की गतिविधि पूरी कर ली गई। वे सीढ़ी के पास गये। उन्होंने अपना रास्ता स्वयं ढूंढे। आगे बंदर–1 का लोगो था। वे अधिगम सामग्री से बंदर–1 (लोगो) वाला कार्ड निकाल कर मेरे पास आये और मुझे पूछने लगे, हम कहाँ बैठकर काम करेंगे। मैंने उसके लिये जगह बताया। यह ऐसा काम था जिसको दो साथी मिलकर आराम से कर सकते थे। अब मेरे पास तीन समूह हो गये।

चूंकि कक्षा 1ली के माइल स्टोन 1 की अधिकांश गतिविधि शिक्षक समर्थित थी इसलिए मैं कक्षा 1 ली माइल स्टोन 1 के हिरण, घोड़ा बिल्ली लोगो वाले कार्डों से कविता, कहानी, चित्र कार्ड से बच्चों के रुचि के अनुसार गतिविधि कराता। इसका प्रभाव यह हुआ कि कक्षा 1 ली के बच्चे मुझे अपना साथी/हितैषी समझने लगे। वे अपने विचार मेरे सामने खुले मन से रखते। कक्षा 2री के बच्चों में प्रतियोगिता की भावना बढ़ने लगी व अपना रास्ता स्वयं तय करने लगे। जो बच्चे कविता याद कर लेते वे साथी समूह में घोड़ा लोगो वाले बच्चों के पास चले जाते व जो घोड़ा वाली गतिविधि पूरा कर लेते वे आंशिक साथी समर्थित समूह हाथी लोगो वाले कार्ड के साथ काम करने लगते। कुछ समय दो बच्चे बंदर–1 का कार्य पूर्ण कर सीढ़ी के पास गये। उन्होंने देखा कि बंदर–1 के बाद बाघ–1 है। वे दोनों बाघ–1 लोगो वाला कार्ड अधिगम सामग्री से निकाल कर लाये और उस पर काम करने के लिये मुझसे स्थान पूछने लगे। मैंने उन बच्चों को एक स्थान बता दिया। यह काम ऐसा था जिसमें बच्चे को किसी भी साथी के सहयोग की आवश्यकता नहीं है। अब मेरे कक्ष में चार समूह बन गये।

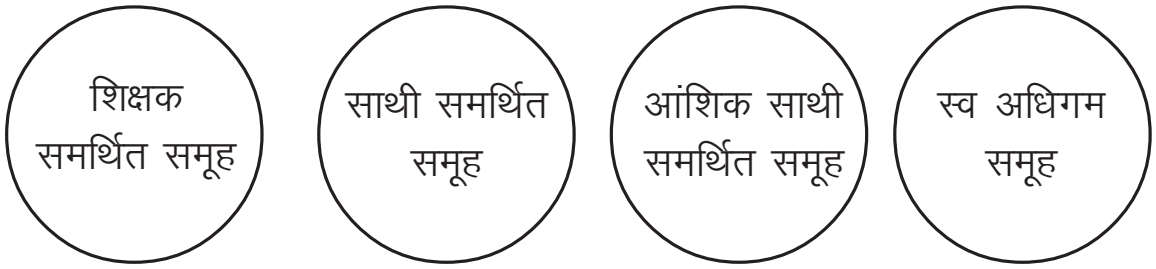

मैंने देखा कि आगे चलने वाले बच्चों को हमेशा जगह की समस्या होती है। इस समस्या को दूर करने के लिये मैंने प्रशिक्षण में मिले हुए लोगो के समूह चार्टों को कक्षा की दीवार पर अलग–अलग कोने में लगा दिया। बच्चों को भी समझाया कि अब उन्हें स्थान ढूंढने के लिये मेरे पास आने की आवश्यकता नहीं है। जिस लोगो से संबंधित काम करना है उस लोगो को समूह चार्ट में खोजो। वह जिस कोने की दीवार पर टंगा है वहीं पर बैठकर अपना काम प्रारंभ कर दो। इस प्रकार स्थान ढूंढने की समस्या का समाधान हो गया। इस प्रकार स्वचालित समूह को देखकर मेरा मन प्रसन्न हो गया। अब मैं पिछड़े बच्चे की गति तेज करने के कुछ नवीन सामग्री तैयार करने में लग गया।

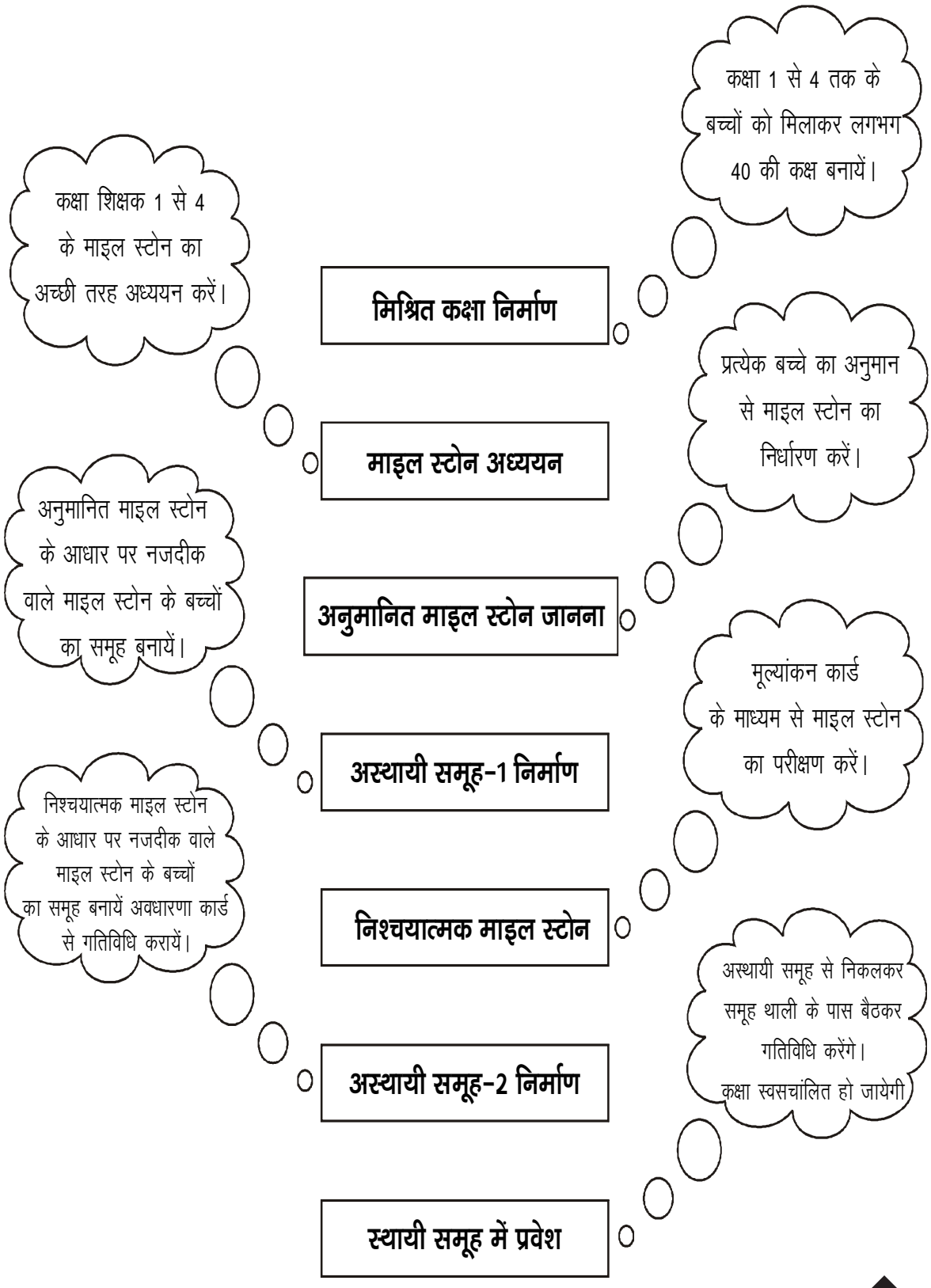
कक्षा 1 से 4 तक के बच्चों को मिलाकर लगभग 40 की कक्ष बनायें।
कक्षा शिक्षक 1 से 4 के माइल स्टोन का अच्छी तरह अध्ययन करें।
मिश्रित कक्षा निर्माण
माइल स्टोन अध्ययन
प्रत्येक बच्चे का अनुमान से माइल स्टोन का निर्धारण करें।
अनुमानित माइल स्टोन के आधार पर नजदीक वाले माइल स्टोन के बच्चों का समूह बनायें।
अनुमानित माइल स्टोन जानना
मूल्यांकन कार्ड के माध्यम से माइल स्टोन का परीक्षण करें।
अस्थायी समूह-1 निर्माण
निश्चयात्मक माइल स्टोन के आधार पर नजदीक वाले माइल स्टोन के बच्चों का समूह बनायें अवधारणा कार्ड से गतिविधि करायें।
निश्चयात्मक माइल स्टोन
अस्थायी समूह से निकलकर समूह थाली के पास बैठकर गतिविधि करेंगे। कक्षा स्वसचांलित हो जायेगी
अस्थायी समूह-2 निर्माण
स्थायी समूह में प्रवेश

4. मूल्यांकन :–

इस प्रकार समूह में कार्य करते हुए बच्चे विभिन्न लोगो को पूरा करते है। प्रत्येक माइल स्टोन में अंत में मूल्यांकन कार्ड रखा गया है, जिसे शिक्षक स्वयं इसका परीक्षण करेंगे एवं उस बच्चे के द्वारा सफलता प्राप्त करने पर अगले माइल स्टोन पर भेजेंगे। प्रत्येक विषय के मध्य में लगभग आधे माइल स्टोन के पूरा होने पर मध्यावधि मूल्यांकन कार्ड इसी प्रकार उस कक्षा के समस्त माइल स्टोन पूरा हो जाने के बाद अंतिम मूल्यांकन लेंगे। इसके आधार पर प्रगति पत्रक तैयार करेंगे एवं उस बच्चे के लिए डायरी के आधार पर टीप लिखेंगे। मूल्यांकन क्या है, उसकी प्रक्रिया क्या है एवं बच्चों के साथ–साथ इसका मूल्यांकन करना ये सारी बातें निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट होती है।

मूल्यांकन का तात्पर्य बच्चे में निहित मूल्यों जिसके अंतर्गत गुणों, आदतों, उपलब्धियों, शारीरिक मानसिक उन्नयन एवं समस्त पक्ष के मापन से है। अर्थात् बालक के द्वारा प्राप्त भिन्न क्षमताओं का मापन करना मूल्यांकन है।

बालक जितना सीखा है अथवा सीखने के दौरान उसकी क्रियाकलाप ग्राह्य क्षमता, विधि, साथियों से व्यवहार, कार्यकुशलता आदि का बारीक अवलोकन करना होगा। मूल्यांकनकर्ता मूल्यांकन होने वाली इकाई का सतत् रूप से हर क्षण उनकी हर गतिविधियों का मूल्यांकन करते रहते हैं। इस प्रणाली में मूल्यांकन क्या है ? अधिक स्पष्ट जानने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं का अध्ययन करें –

- विभिन्न लोगो के कार्ड पर गतिविधियां करते–करते प्रश्न पूछना, वर्णन सुनना, विचारों की अभिव्यक्ति पर ध्यान देना, मूल्यांकन के अंग हैं।
- शिक्षक हर क्षण उनके क्रियाकलापों का अवलोकन करते रहता है एवं उसकी स्थिति जानकर कार्य कराता है यही मूल्यांकन है।
- मूल्यांकन में बच्चे को परीक्षा के बोझ, भय से मुक्त रखा जाता है।
- मूल्यांकन भिन्न परिस्थिति में किया जाता है।
- इसमें समस्त उद्देश्यों पर गतिविधि कराया जाता है, न कि सिर्फ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर।

मूल्यांकन क्यों ?

मूल्यांकन के द्वारा ही हम बच्चे की प्रगति को जान सकते हैं। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह बालक किस स्तर का है ? बालक के व्यक्तित्व का हर पहलू किस गति से विकसित हो रहा है एवं कहाँ रूकावट आ रही है इसको जानने में सहायता मिलती है साथ ही समुदाय के बीच अपनी बात रखने में सहायता मिलती है। निम्नलिखित बिन्दुओं से इसे स्पष्ट किया जा सकता है –

1. बच्चे ने क्या सीखा यह जान सकते हैं।
2. बच्चों के सीखने की गति एवं सीखने की विधि का पता चलता है।
3. बच्चा किन गतिविधियों को ग्रहण करता है और किन गतिविधियों में कठिनाई महसूस करता है यह जानने के लिए।
4. अगले माइल स्टोन में भेजने के लिए ।
5. रूचि जानने के लिए।
6. निदानात्मक परीक्षण करने के लिए।
7. बच्चों का सर्वांगीण विकास, उचित एवं क्रमिक रूप से हो रहा है या नहीं यह जानने के लिए।
8. मूल्यांकन से फीडबैक प्राप्त होता है जिससे आगे की गतिविधियों को निर्धारित करने में सुविधा होती है।
9. शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण की योजना तय करने एवं सामग्रियों का संशोधन तय करने में सुविधा होती है।
10. बच्चे का स्तर जानने के लिए।
11. उपचारात्मक शिक्षण करने के लिए।

मूल्यांकन कैसे –

मूल्यांकन वास्तविक में एक जटिल प्रक्रिया है। जिसमें बच्चे का ही नहीं अपितु प्रणाली से जुड़े अलग–अलग इकाइयों का मूल्यांकन करना होता है। किस MS पर कितनी सफलता मिल रही है, कहाँ पर बाधा आ रही है ? इसे जानने की आवश्यकता है आइए देखें कि –

किस–किस का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है ?

1. **बालकों का मूल्यांकन** – समूह में गतिविधि करने के पश्चात् बालक स्वयं अपना मूल्यांकन करता है। सीढ़ी का उपयोग कर वह यह जानने लगता है कि किस लोगो के अंतर्गत कार्य कर रहा है अतः उसे यह अनुभव होते रहता है कि कहाँ पर बाधा आ रही है? किन बातों को जल्दी से सीख रहे हैं। यही बातें शिक्षक भी जानने का प्रयास करता है। MS की सारी गतिविधियों को क्रमिक रूप से एक के बाद एक सीखता चला जाता है। विद्यार्थी की क्षमताओं की प्रवीणता के निर्धारण के लिए उसकी उपलब्धि का नियमित मापन हो। इस हेतु निम्नलिखित कार्ययोजना बनाई गई है –

मूल्यांकन हेतु कार्ययोजना –

प्रत्येक माइल स्टोन के अंत में एक मूल्यांकन कार्ड की व्यवस्था दी गई है। अतः बच्चे माइल स्टोन के उद्देश्यों को क्रमशः पूर्ण करते हुए आगे बढ़ेगा। जिस दिन वह इन उद्देश्यों पर गतिविधि कर लेगा। उस दिन मूल्यांकन कार्ड दिया जाएगा। मूल्यांकन में असफल होने पर दो उपचारात्मक कार्ड मिलेगा, जिसमें से एक कार्ड को शिक्षक स्वयं तैयार करेगा। इस प्रकार कक्षा पहिली के बच्चों को भाषा विषय में 11 बार एवं दूसरी के बच्चों को 10 बार मूल्यांकन से गुजरना पड़ेगा। शिक्षक यह आंकलन कर लेंगे कि कौन सा बच्चा निर्धारित समय में MS पूर्ण कर रहा है अथवा जल्दी से या देरी से पूर्ण कर रहा है। देरी से पूर्ण करने वाले बच्चों के प्रति शिक्षक अधिक सजग रहेगा एवं समय पर कार्य पूर्ण कराने हेतु प्रयास करेगा।

इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रत्येक उद्देश्य पर कार्य करते हुए बच्चों का हर क्षण, हर पल हर समय सतत् रूप से बारीकी से अवलोकन करते हुए मूल्यांकन करते रहेंगे। इस प्रकार बच्चे के क्रियाकलाप, सक्रियता, कार्य करने की गति, साथियों से सहयोग, उठने–बैठने का ढंग, बातचीत करने का ढंग, व्यवहारिक पक्ष, शारीरिक मानसिक विकास आदि का मूल्यांकन करते रहेगा।

शिक्षक अपनी निजी डायरी में हर बच्चे के सर्वांगीण विकास पर टीप लिखता रहे। जिससे बच्चे की स्थिति जानने में आसानी हो।

MS = Mile Stone (माइल स्टोन)

मूल्यांकन पत्रक भरना –

भाषा विषय के लिए कक्षा पहिली एवं दूसरी के बच्चों के लिए एक साथ एक मूल्यांकन पत्रक तैयार किया गया है। जिसे ड्राइंग शीट पर लिखकर सूचना फलक पर लगाया जाएगा। (मूल्यांकन पत्रक का नमूना संलग्न है।) जिस दिन जिस बच्चे का मूल्यांकन पूरा होगा उसके नाम के सम्मुख उसी MS के सामने समय पर पूरा करने वाले बच्चों के लिए सही का चिन्ह, समय से पहले पूरा करने वाले बच्चे के लिए * का चिन्ह और समय से देर में पूरा करने वाले बच्चे के लिए 0 का चिन्ह रहेगा। इसे अलग–अलग रंगों से भी दर्शाया जा सकता है।

औसत रूप से 200 दिनों को संभावित समय में बांटा गया है। 200 दिन में भी पूरा न करने वाले बच्चों के लिए शेष समय बचाकर रखा गया है, उस समय में बच्चों का विशेष उपचारात्मक शिक्षण किया जाये। ठीक इसी तरह गणित का मूल्यांकन के प्रपत्र को 26 MS में समयानुसार विभाजित किया गया है। पर्यावरण में MS को सिखाने हेतु कोई क्रम निर्धारित नहीं किया गया। परिस्थितिवश जिस तरह का वातावरण उपस्थित होगा। उसी के आधार पर MS पर काम होगा। अतः समय का निर्धारण नहीं किया गया है।

भाषा एवं गणित की भांति मूल्यांकन पत्रक पर कार्य के आधार निशान लगाया जाएगा।

उपरोक्त के आधार पर बच्चों का मूल्यांकन पत्रक कैसे भरेंगे। निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट किया गया है।

मूल्यांकन पत्रक विषय – हिन्दी कक्षा 1 से 4 तक

क्र	नाम	माइल स्टोन	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
		दिन	25	20	20	18	18	17	17	16	15	14	14	25	21	20	19	17	17	17	16	15	13	13
1																								
2																								
3																								
4																								
5																								
6																								

क्र	नाम	माइल स्टोन	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43
		दिन																						
1																								
2																								
3																								
4																								
5																								
6																								

क्र	नाम	माइल स्टोन	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57								
		दिन																						
1																								
2																								
3																								
4																								
5																								
6																								

मूल्यांकन प्रपत्र विषय – गणित कक्षा– 1 से 4

क्र.	नाम	माइल स्टोन	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	
		दिन	25	16	15	14	13	12	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	25	23	22	21	20	15	12	10	10	10	10	10	
1																															
	दिनांक																														
2																															
	दिनांक																														
3																															
	दिनांक																														
4																															
	दिनांक																														
5																															
	दिनांक																														
6																															
	दिनांक																														

क्र.	नाम	माइल स्टोन	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56
		दिन																													
1	दिनांक																														
2	दिनांक																														
3	दिनांक																														
4	दिनांक																														
5	दिनांक																														
6	दिनांक																														

क्र.	नाम	माइल स्टोन	57	58	59	60	61	62	62	63	64																				
		दिन																													
1	दिनांक																														
2	दिनांक																														
3	दिनांक																														
4	दिनांक																														
5	दिनांक																														
6	दिनांक																														

प्रगति पत्रक

छात्रा का नाम ..... पिता का नाम ..... माता का नाम..... जन्म तिथि .....

शाला का नाम संकुल केन्द्र विकासखंड जिला

क्र.	विषय	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	
1	हिन्दी																													
2	गणित																													
3	पर्यावरण																													
4	अंग्रेजी																													

प्रगति कारक टीप :

हस्ताक्षर प्रधान पाठक

कक्षाध्यापक का हस्ताक्षर

5. MGML में समुदाय को कैसे जोड़ें –

बच्चों का सर्वांगीण विकास शिक्षक एवं समुदाय के सम्मिलित प्रयास से ही संभव है। अतः समुदाय को निम्नांकित रूप से शाला से जोड़ा जायेगा।

1. गांव/बस्ती/नगर के विभिन्न समितियों से MGML पर चर्चा कर।
2. गांव/बस्ती/नगर के प्रमुखों/पंचायत/जनपद पंचायत पदाधिकारी एवं सदस्यों के समक्ष चर्चा कर ।
3. पालकों की अपेक्षाओं को स्थान देते हुए ।
4. पालक/मातृ शिक्षक समिति, शाला शिक्षा समिति से चर्चा कर।
5. विविध आयोजनों में जैसे 15 अगस्त, बाल मेला, सांस्कृतिक कार्यक्रम गणतंत्र दिवस में उनकी भागीदारी लेकर।
6. शिक्षा को रोचक एवं उपलब्धि मूलक बनाकर।
7. शिक्षा के बारे में सुझाव देने वाले पालकों को चर्चा हेतु आमंत्रित कर।
8. बालकों के द्वारा निर्मित एवं शिक्षकों के नवाचार के प्रदर्शनी समुदाय के बीच लगाकर उनके बच्चों की उपलब्धि बतायी जायेगी।
9. सामान्य किट के रूप में माँ की कहानियाँ, सुनियोजित एवं आकस्मिक योजना के रूप में समुदाय को जोड़ा गया है।
10. समुदाय के लोगों को शाला की मॉनिटरिंग के लिए आमंत्रित किया जायेगा।
11. पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत बच्चे जब सर्वे हेतु बस्ती में जाये तब वहां जन समुदाय से हर तरह से सहयोग की अपेक्षा होगी।

निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से सामुदायिक सहयोग प्राप्त किया जा सकता है –

(1) शाला प्रबंधन

शाला की रखरखाव, लिपाई–पुताई, चारदीवारी की मरम्मत, प्रांगण में वृक्षारोपण एवं देखभाल, पेयजल आदि कार्य हेतु जन समुदाय से सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न पर्व एवं त्यौहारों में जन सहयोग लिया जा सकता है।

(2) कक्षा प्रबंधन

MGML प्रणाली में रैक निर्माण, बच्चों के बैठने हेतु दरी, चटाई आदि की व्यवस्था समुदाय से की जा सकती है। सजावट हेतु श्रमदान, पंचायत एवं समिति से बिजली, पंखें की व्यवस्था, गणमान्य नागरिकों से महापुरूषों की प्रतिमा आदि के रूप में सहयोग लिया जा सकता है।

(3) नियमित उपस्थिति

लम्बे समय से अनुपस्थित बच्चों को जन सहयोग से शाला में जोड़ा जा सकता है। गरीब बच्चों के लिए आर्थिक सहयोग जैसे – स्लेट, कापी, गणवेश आदि तथा गोद लेने के रूप में सहयोग लिया जा सकता है।

(4) वैकल्पिक शिक्षा :–

शिक्षकों की कमी को जन सहयोग से दूर किया जा सकता है। शिक्षा हेतु शिक्षित बेरोजगार युवकों को निःशुल्क या कम शुल्क पर अध्यापन हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

(5) खेल एवं व्यायाम :

प्राथमिक शाला के बच्चों को खेल में पारंगत करने हेतु जन सहयोग लिया जा सकता है। गाँव के अच्छे जानकार खिलाड़ी व्यक्ति से बच्चों को प्रशिक्षण दिलाया जा सकता है। साथ ही खेल पोशाक की व्यवस्था समुदाय से ली जा सकती है।

(6) शैक्षिक सहयोगः

अच्छे कहानी एवं कविता की अध्यापन में गाँव के शिक्षित लोगों का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा संगीत, हस्त कलाओं के कलाकार को शाला से जोड़कर बच्चों में कला का विकास किया जा सकता है।

•••

अध्याय – 5

हमारी विकास यात्रा

MGML की शिक्षण प्रणाली पर अन्य कुछ राज्यों में काफी कार्य हुए हैं। हमारे राज्य में एस.सी.ई.आर.टी. के द्वारा पूरे छत्तीसगढ़ में MGML की प्रणाली को चरणबद्ध लागू किये जा रहे हैं।

1. पायलेटिंग – एक सुखद अनुभव :–

राज्य में MGML की प्रणाली की विकास यात्रा 15 नवम्बर 2007 को कोर ग्रुप के गठन से प्रारंभ हुआ। इसी समय पायलेटिंग हेतु दुर्ग जिले से 12 प्राथमिक शालाओं का चयन किया गया। साथ ही कार्डों के अध्ययन, चयन एवं लेखन कार्य हेतु समूह का विस्तार करते हुए इन शालाओं के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है। बहुत परिश्रम के पश्चात् समस्त कार्डों एवं सृजन भाग 1, 2 का निर्माण किया गया। तत्पश्चात् 31 दिसम्बर को इन शालाओं में लागू किया गया। इस हेतु पूरी टीम प्राथमिक शाला कंवर में प्रायोगिक प्रशिक्षण एवं समूह निर्माण के लिए छः दिवसीय प्रशिक्षण में उपस्थित हुए। इस प्रशिक्षण की विशेषता यह थी कि बच्चों के बीच इन कार्डों पर प्रारंभिक मूल्यांकन, समूह निर्माण एवं गतिविधि कर व्यवहारिक रूप से समझ बनाया गया। यह प्रशिक्षण बहुत ही रोचक एवं उपयोगी रहा। प्राथमिक शाला कोचेरा में 2 दिवस हिन्दी पर, देवकोट में दो दिवस गणित पर एवं कंवर में दो दिवस पर्यावरण पर कार्य

हुआ है। अंतिम दिवस संयुक्त संचालक महोदय एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर के मुख्य आतिथ्य में बाल मेला का आयोजन हुआ। इसी बीच देवकोट में रात्रिकालीन कार्यक्रम में जन समुदाय को शाला से कैसे जोड़ें ? इस पर टीम के द्वारा नाटक प्रस्तुत किया गया। प्रशिक्षण की पूर्ण सफलता के पश्चात् इन शालाओं में कक्षाएं प्रारंभ हुई। इस कार्य से प्रभावित होकर गुण्डरदेही ब्लाक में 'वर्ल्ड विजन इंडिया' की ओर से स्वयं के खर्च पर 9 प्राथमिक शालाओं में इसे लागू किया गया एवं संचालन का समस्त भार उन्होंने अपने ऊपर ली। 15 दिनों पश्चात् प्रथम रिव्यू मीटिंग पूरे टीम के साथ प्राथमिक शाला भिनपुरी में हुई। जिसमें यूनिसेफ से श्री व्यंकटेश जी भी सम्मिलित हुए। जहां बच्चों एवं शिक्षकों में प्रसन्नता देखी गई। कार्डों पर गतिविधि करते हुए बच्चों को खूब मजा आया, वहीं उनके गुणवत्ता स्तर में काफी वृद्धि पाई गई। समय–समय पर सभी शालाओं की मानीटरिंग होती रही। अंत में एक सुखद अनुभव सफलता के साथ प्राप्त हुई। सत्र 2008–09 में इसे लागू करने हेतु 40 विकासखण्ड का चयन किया गया। पायलेटिंग स्कूल के अनुभव, फीड बैक एवं उपलब्धियों को आधार मानकर पुनः समस्त कीट एवं सृजन का संशोधन, संवर्धन पूरे टीम के द्वारा एक लंबे कार्यशाला में किया गया है। इसके बाद 16 जिलों से 40 विकासखंडों का चयन किया गया। इसके पश्चात् प्रदेश में एक बेहतर वातावरण बनाने के लिए 280 लोगों को चैन्नई का शैक्षिक भ्रमण कराया गया। जिसमें बी.ई.ओ., बी.आर.सी. और शिक्षक शामिल थे। जिसमें एम.जी.एम.एल. को लागू किया गया। साथ ही इन 40 विकास खंडों के बी.ई.ओ., बी.आर.सी. और डाइट के दो–दो प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण हुआ। 40 विकासखंडों में से प्रत्येक से 6–6 बी.आर.जी चुने गये। इनका प्रशिक्षण जुलाई–अगस्त के महिनों में सम्पन्न हुआ। प्रत्येक विकास खंड में बी.आर.जी. द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ। इसकी मॉनीटरिंग सामग्री विकास स्रोत समूह के जिला प्रभारी करते थे। साथ ही राज्य स्तर की मॉनीटरिंग के लिए दो दल तैयार किये गये। पूरे राज्य में अक्टूबर–नवम्बर तक शिक्षक प्रशिक्षण संपन्न हुए। प्रशिक्षण संपन्न होने के बाद दिसंबर में कार्डों को वितरण हुआ और स्कूलों में एम.जी.एम.एल. प्रणाली शुरू हुई। एम.जी.एम.एल. के क्रियान्वयन में मिलाजुला स्वरूप सामने आया।

क्र.	स्तर	उपलब्धियाँ	कमियाँ
1.	राज्य स्तर	• 40 विकासखंड के समस्त शालाओं में एम.जी.एम.एल. का आधार तैयार हुआ। • 240 बी.आर.जी.सदस्यों का प्रशिक्षण प्रभावकारी से सपन्न हुआ। • एम.जी.एम.एल. की प्रक्रिया का अवलोकन करने हेतु अन्य राज्य से एक्सपोज़र टीम का दौरा, हुआ सराहना की गई। • राज्य के बी.आर.सी., बी.आर.जी. ग्रुप के सदस्य , रिसोर्स ग्रुप के सदस्यों का चैन्नई विज़िट कराया गया।	• कार्डों की छपाई में विलंब हुआ। • कार्डों की वितरण की व्यवस्था त्रुटिपूर्ण रही। • एक ही शीट में अलग–अलग लोगो के कार्ड रहने के कारण बाँटने एवं टेली करने में असुविधा हुई। • मॉनीटरिंग की प्रक्रिया सतत् एवं सशक्त नहीं बन सकी। • शिक्षकों के स्थानांतरण होने से उस शाला के अन्य शिक्षकों का प्रशिक्षण नहीं हो सका। • अंतिम मूल्यांकन सटिक प्रणाली नहीं बनाई जा सकती।
2.	विकास खंड स्तर	• विकास खंड के समस्त चयनित शालाओं के एक–एक शिक्षक को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिक्षकों ने इसे अत्यंत रूचिकर बताकर सहर्ष स्वीकार किया। • आधे से अधिक शालाओं में रैक एवं ट्रे का निर्माण किया गया। • कार्डों को शालाओं तक पहुँचाया गया। • बच्चों एवं समुदाय को यह प्रणाली बहुत पसंद आया।	2 • कार्डों के वितरण व्यवस्था ठीक नहीं थी। • कुछ स्थानों में विभिन्न प्रभारियों के बीच समन्वय का अभाव रहा। • विकासखंड स्तर पर बैठकों एवं समीक्षा का अभाव रहा।
3.	शाला स्तर	• शालाओं के शिक्षकों ने एम.जी.एम.एल. के प्रणाली से शिक्षा प्रारंभ किया जिसमें उनको अच्छी सफलता मिली। • पालकों को शाला से जोड़ने में यह प्रणाली कारगर साबित हुई। • सामग्रियों का अच्छा उपयोग हुआ।	• बहुत सी शालाओं में कार्डों को काटा भी नहीं गया। • कार्डों को ट्रे में नहीं सजाया गया। • कुछ स्थानों में कार्डों की गतिविधियाँ निर्देशानुसार नहीं कराया गया। • जनसमुदाय को नहीं जोड़ गया।

इस वर्ष की हमारी रणनीति इस प्रकार है–

1. 1 जुलाई से स्कूलों में एम.जी.एम.एल. की कक्षाएँ प्रारंभ हो जायेगी।
2. कक्षा 1 एवं 4 के लिए बी.आर.जी. का प्रशिक्षण जुलाई में संपन्न हो जायेगा।
3. प्रशिक्षित शिक्षकों के कमी को दूर करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण होगा।
4. कक्षा 1 से 4 तक शिक्षण करने वाले सभी शिक्षकों का प्रशिक्षण 15 जुलाई से अगस्त के प्रथम सप्ताह तक पूर्ण किया जायेगा।
5. मॉनिटरिंग हेतु सी.ए.सी. और बी.आर.जी. का प्रशिक्षण किया जायेगा।
6. वर्ष भर समस्त स्रोत व्यक्तियों द्वारा मॉनिटरिंग कर प्रणाली को गति प्रदान की जायेगी।
7. एजूसेट के माध्यम से कार्डों का वितरण सुनिश्चित कराया गया। साथ ही एम.जी.एम.एल. की सी.डी. भी प्रत्येक बी.आर.सी. को दे दी गयी है जिससे कार्डों की कमी को पूरा किया जायेगा।

2. माँ की कहानी :–

प्राथमिक शाला गुजरा, विकासखण्ड डौंडी, जिला दुर्ग, छ.ग. बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण प्रणाली के तहत एक पायलेंटिंग शाला के रूप में चयनित शाला है।

समाज और शाला के बीच मधुर संबंध स्थापित हो, एम.जी.एम.एल. के इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमने एक अभिनव प्रयास किया। शाला और समाज को जोड़ने के लिए हम कई प्रकार के कार्यक्रम करते हैं, पर हमने प्राथमिक शाला गुजरा में MGML के सफल क्रियान्वयन हेतु दिनांक 08.01.2008 को एक बैठक आयोजित कर शिक्षण पद्धति, बैठक व्यवस्था आदि कई विषयों पर चर्चा किये। इस बैठक में हमने महिलाओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया था। उनकी उपस्थिति भी अच्छी थी। इन महिलाओं को कक्षा में ले जाकर उचित स्थान पर बैठाया। बैठाने के बाद शाला व बच्चों से संबंधित सामान्य चर्चाएं हुई। चर्चा में हमने एक माता श्रीमती सुशीला नेताम से कहानी कहकर बच्चों को सुनाने के लिए कहे। वह सहर्ष तैयार होकर सुनाने लगी। बच्चे अपने ही गाँव की बुजुर्ग महिला के द्वारा कही जाने वाली कहानी ''बंदर और मगर'' को पूरे उत्साह व ध्यान मग्न होकर सुने। इससे बच्चे भी खुश, सुनाने वाली महिला और सुनने वाली महिलाएं सभी खुश थे।

फिर मैं धन्यवाद के साथ अगले सप्ताह और आकर सुनाने का निवेदन अन्य महिलाओं से किया। यह सिलसिला लगातार श्रीमती बदरू निशा, वीणा देवी साहू, अनुसुईयां, राधिका, गंगा बाई के रूप में चलता रहा। हम लोग इस कहानी को लिखकर छत से बंधे तार पर लटका देते थे।

ये महिलाएँ कहानी के साथ–साथ बालिकाओं को रंगोली बनाना भी सिखाती थीं।

इस प्रकार के कार्यक्रम से हमारी शाला को बहुत लाभ हुआ। हमारी शाला में गांव के लोग आने–जाने लगे, गतिविधियों को देखने लगे, इससे समाज और शाला के संबंध में प्रगाढ़ता आयी है। इसी मधुर संबंध के परिणाम स्वरूप हम शाला के लिए कार्ड को सुरक्षित रखने हेतु निःशुल्क रैक व टोकरी तथा अन्य सामग्री प्राप्त करने में सफल रहे। इसके साथ ही महिलाओं एवं पुरूषों द्वारा श्रमदान करने की सोच भी विकसित हुई।

प्रधान पाठक, गुजरा

वि.खं. डौंडी

EUROPEAN UNION JRM VISIT
28/5/09.

We have visited Primary School KENDVAVI AND WE ARE VERY IMPRESSED WITH THE QUALITY OF TEACHING & LEARNING. THE CHILDREN DISPLAYED A GOOD UNDERSTANDING & ABILITY IN ENGLISH.

EXCELLENT WORK & CONGRATULATIONS TO THE TEACHERS & PARENTS

DR RICHARD SLATER.
Dr. S K Chaudhuri
N K Saxena
Samarat Singh

02.19.2009 19:13

MGML

मेरा अनुभव :–

प्राथमिक शाला आड़ेझर :

MGML प्रणाली में हिन्दी, गणित के अतिरिक्त पर्यावरण विषय शामिल किया गया है, चूंकि पर्यावरण में नई विधि का प्रयोग किया है। बच्चे इसमें अत्यधिक रूचि लेते हैं। सर्वेक्षण कार्ड को और भी अधिक उत्साह से करते हैं। कमजोर बालक के लिए MGML एक संजीवनी है, जो बच्चे लगभग छः माह में कुछ भी नहीं सीखें थे, वह मात्र तीन माह के प्रयास में पढ़ना–लिखना सीख गये।

ए. आर. भारती

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण के द्वारा बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता में विशेष उपलब्धियां

एमजीएमएल शिक्षा पद्धति हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति व गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं संस्कृति का दिग्दर्शन कराती है, जिसके अन्तर्गत बच्चे सहज एवं स्वाभाविक वातावरण में अपने सीखने के स्तर और क्षमता के अनुरूप खेल-खेल में विविध आनंददायी क्रियाकलापों के द्वारा सहजता एवं सरलता से सीखने की प्रक्रियाओं की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

शा.प्रा.शा. लखनपुरी में एमजीएमएल की शिक्षा प्रणाली ने संजीवनी औषधि का कार्य किया है। सर्वप्रथम स्कूल नहीं आने वाले बच्चों ने माइलस्टोन, चित्र कार्ड एवं कक्षा सजावट से आकर्षित होकर नियमित स्कूल आने लगे । एमजीएमएल की विविध सहायक सामग्री ने बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजन क्षमता का विकास करके सीखने की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावशाली बना दिया है। समूह में रहकर कार्य करने से बच्चों के बीच परस्पर सहयोग वाचनकौशल दया, प्रेम और सहभागिता जैसे नैतिक मूल्यों का विकास हुआ । बच्चे आपस में मित्रवत् व्यवहार करने लगे । शिक्षण प्रक्रिया आनंददायी होने के कारण बच्चे शाला में शतप्रतिशत् उपस्थित रहने लगे । कुछ संकोची और शर्मीले बच्चे भी समूह में रहकर अपने साथियों का अनुकरण करके खुशी–खुशी पढ़ाई की ओर प्रेरित हुए । अपने साथियों से सीखने में उन्हें ज्यादा सुविधा महसूस हुई । बच्चों के मन में परीक्षा का भय नहीं रहा । बस्ते का बोझ कम हुआ । समूह में कार्य करने से स्व–अनुशासन समय पालन जैसे गुणों का विकास हुआ । शिक्षा की इस नई व्यवस्था की चर्चा ग्राम के पालकों में भी होने लगी। और उनका रुझान शाला के प्रति बढ़ने लगा । फलस्वरूप निजी स्कूलों से अपने बच्चों को निकाल कर उन्होंने उत्साहपूर्वक शा.बा.प्रा.शा. लखनपुरी में अपने बच्चों का दाखिला करवाया और वे स्वयं बच्चों को तैयार करके स्कूल पहुंचाने के लिए आने लगे। बच्चों से साक्षात्कार के दौरान इस प्रणाली की रोचकता और उपादेयता का ज्ञान हुआ। कुछ बच्चों की मुंह जुबानी प्रश्नावली उल्लेखित है:–

प्रश्नावली

स्वयं– तुम्हारा क्या नाम है? स्कूल आना कैसा लगता है?

मोहनीश– मेरा नाम मोहनीश है । मुझे स्कूल आना बहुत अच्छा लगता है ।

स्वयं– तुम कौन सी कक्षा में पढ़ते हो, तुम्हें क्या अच्छा लगता है?

कुबेर – मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता हूँ । मुझे कविता और कहानियों से पढ़ना अच्छा लगा है।

स्वयं– तुम्हें कौन सा विषय अच्छा लगता है?

लवकी– मुझे गणित का जोड़–घटाने का खेल तीलियों के द्वारा खेलना अच्छा लगता है।

स्वयं–तुम्हें कौन सा खेल पसंद है?

आशीष– मुझे चित्र कार्ड देखकर नाम बोलना और अपने साथियों से हाथ मिलाने का खेल पसंद है।

इन प्रश्नावलियों से एमजीएमएल शिक्षा पद्धति के बारे में बच्चों की शिक्षा के प्रति उत्साह आकर्षक और सीखने के प्रति जिज्ञासा को प्रकट करता है, साथ ही शिक्षकों के आत्मविश्वास और मनोबल को भी बढ़ाता है। पढ़ाई की बोझिलता और जटिलता दूर होने लगी है। इस प्रकार हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि एमजीएमएल शिक्षा पद्धति शा. बा.प्रा.शा.लखनपुरी के बच्चों की तरह समस्त शालाओं के बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि एवं गुणवत्तामूलक शिक्षा प्रदान करने का बहुआयामी अवसर प्रदान करती है जिससे बालकों के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है।

शा.बा.प्रा.शा. के प्रधान पाठक देवेन्द्र कुमार बघेल के मार्गदर्शन एवं एमजीएमएल प्रभारी शिक्षक चैनसिंग नाग के मेहनत,लगन और निष्ठा से बच्चों के शैक्षिक और चारित्रिक गुणों का उत्तरोतर विकास होता रहेगा। इन्हीं शुभाकांक्षाओं के साथ...

(श्रीमती आशा ठाकुर)
शिक्षिका
बा.प्रा.शा.लखनपुरी
वि.खं.चारामा
जिला–उ.ब.कांकेर(छ.ग.)

—एम0जी0एम0एल0 का वि0ख0पुसौर में सफल कियान्वयन —

एम0जी0एम0एल0शिक्षण पद्धति विकास खंड पुसौर जिला रायगढ़ में योजनाबद्ध एवं सफलतापूर्वक कक्षा पहली एवं दूसरी में सत्र 2008:09 से संचालित हो रही है । इस सफल संचालन में सर्वप्रथम बी0आर0जी0ग्रुपद्वारा शिक्षकों को गुणवत्तापरक प्रशिक्षण दियागया। प्रशिक्षण उपरांत कार्डो का वितरण किया गया पश्चात शालाओं में सफल संचालन के पहले शिक्षकों को विकासखंड स्तर पर बी0आर0जी0ग्रुप द्वारा पुनः एक विशेष प्रशिक्षण दिया गया जो शिक्षको के लिये बहुत उपयोगी साबित हुआ ।

हमारे विकास खंड में प्रत्येक विद्यालयों में रेक एवं ट्रे की व्यवस्था कर ली गई है इस पद्धति को जनभागीदारी से जोड़ने के लिये भी प्रयास किये गये जैसे प्रत्येक प्रशिक्षण के दौरान जनभागीदारी सदस्यों को इनकी महत्ता के बारे में बताया गया । छ0ग0शासन के आदेशानुसार किसान सम्मेलन में भी पुसौर विकास खंड के ग्राम बड़े भंडार,नेतनागर एवं पुसौर में भी एक प्रदर्शनी लगाई गई एवं लोगों को इसके महत्ता के बारे में जानकारी दी गई । साथ ही माननीय मुख्यमंत्री महोदय के रायगढ़ विकास खंड ग्राम कोतरा के आगमन पर भी प्रदर्शनी लगाई गई ।

बी0आर0जी0ग्रुप एवं विकास खंड शिक्षा अधिकारियों एवं बीआरसीसी द्वारा इस पद्धति के सफल संचालन के लिये शालाओं का नियमित अवलोकन किया गया।प्रत्येक शनिवार को बी0आर0जी0ग्रुप द्वारा समीक्षा बैठक की जाती है साथ ही प्रत्येक माहसंकुल स्तर पर बैठक का आयोजन किया जाता है।

यह पद्धति छात्रों में गुणवत्तापरक-शिक्षा हेतु मील का पत्थर साबित होगा।

विकास खंड शिक्षा अधिकारी
पुसौर

दिनेश कुमार पटेल
(BEO- Pussore)

जनसमुदाय जुड़ने लगे शाला से

दिनांक 23.1.09 को संकुल केन्द्र कन्हारपुरी क्षेत्रांतर्गत प्रा.शा. मारीपारा देवरी में सृजन उत्सव सम्पन्न हुआ। सृजन उत्सव हेतु वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से कक्षा पाँचवी व छठी के बच्चों द्वारा आमंत्रण पत्र लिखकर शाला क्षेत्र के समस्त अभिभावकों को आमंत्रित किया गया। सृजन उत्सव के दिन सभी अभिभावक एवं माता पिता उपस्थित हुये। विधिवत कक्षा संचालन श्री सी.आर. साहू एवं श्रीमती मधु शर्मा सहा. शिक्षिका के सहयोग से करते हुये सृजन कार्यक्रम की जानकारी एवं कार्डों के माध्यम से बच्चे स्वयं कैसे सीखते हैं की जानकारी दी। बच्चों की रुचि एवं गतिविधि (चित्र) को देखते हुये जनसमुदाय शाला की ओर आकर्षित हुये, और शाला की आवश्यकता पर चर्चा किये। समुदाय की सहयोग से सृजन कक्ष हेतु दो दरियाँ 15x12 की एवं 1 दीवाल घड़ी देने का निर्णय उसी दिन कर लिये। तत्काल राशि जमाकर उसी दिन शाला को भेंट किये। शाला में सृजन कक्ष हेतु श्रमदान समर्पित करते हुये श्री बीतू राम राजमिस्त्री ने रैक निर्माण करने का वचन दिया। सृजन कार्यक्रम के तहत बच्चों में सीखने की गतिविधि में रुचि को देखते हुये अब समुदाय शाला की ओर आकर्षित हुई है। पहले समुदाय की इतनी उपस्थिति व सहयोग नहीं मिल पाता था अब ग्राम-वासी शाला के प्रति समर्पित भाव रखना प्रारंभ कर दिये हैं।

सही/-
श्रीमती मधु शर्मा
सहायक शिक्षिका
प्रा.शा. मारीपारा देवरी
वि.खं. - कांकेर

5. रीडर्स

क्या है –

1. चित्रात्मक बाल कहानी एवं कविताओं का संग्रह है।
2. बच्चों के द्वारा बोलचाल में उपयोग होने वाले अधिक वर्णों से बने शब्दों (जिनके आधार पर माइल स्टोन बनाये गये हैं।) का क्रमबद्ध संग्रह है।
3. सीखे हुए वर्णों से सरलता से सीखने का माध्यम है।
4. सीखने के क्रम को ध्यान में रखते हुए माइल स्टोन में आये निश्चित वर्णों से बने शब्दों की कहानी का संग्रह है।

रीडर्स कैसे बने –

1. बच्चों द्वारा उपयोग किये जाने वाले शब्दों को चिन्हांकित किया गया।
2. अधिक उपयोग में होने वाले वर्णों की गणना की गई।
3. वर्णों को प्राथमिकता के आधार पर माइल स्टोन में बांटा गया।
4. माइल स्टोन वार वर्णों को जोड़ते हुए शब्द सूची तैयार की गई।
5. सार्थक एवं निरर्थक शब्दों का वर्गीकरण किया गया।
6. बच्चों द्वारा अधिक उपयोग में लाये जाने वाले सार्थक परिवेशीय शब्दों को चिन्हांकित किया गया।
7. ऐसे शब्दों को लेकर कविता/कहानी का निर्माण किया गया।
8. क्रमिक रूप से बढ़ते हुए पिछले माइल स्टोन के शब्दों को आगे के माइल स्टोनों में समाहित किया गया है। ताकि पुनः अभ्यास हो सके।
9. ऐसे शब्दों को प्राथमिकता दी गई है, जिसके चित्र बनाये जा सकते हैं।
10. बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए शब्दों की संख्या निर्धारित की गई है। पहले के माइल स्टोन में कम शब्द एवं बाद के माइल स्टोन में अधिक शब्द लिये गये हैं।
11. रीडर्स को दो भागों में बांटा गया है। जिसमें दायां पेज बच्चों के लिए है। एवं बायें पेज में कहानी को स्पष्ट किया गया है।
12. 16 रीडर्स में छत्तीसगढ़ी भाषा के साथ अन्य बोलियों का उपयोग किया जायेगा।

13. भाव अभिव्यक्ति के लिए चित्रों का उपयोग किया गया है।

उपयोग का तरीका

1. रीडर्स को दो भागों में बांटा गया है –

दायां भाग – इसमें माइल स्टोन के वर्णों से बने शब्दों से निर्मित कविता/कहानी लिखी हुई होगी।

बायां भाग – इस पेज पर कहानी लिखा हुआ होगा।

1. सर्व प्रथम शिक्षक कविता/कहानी को पढ़कर सुनायेंगे।
2. उसके पश्चात कविता के नीचे बने चित्रों पर बच्चों के साथ चर्चा करेंगे।
3. अंत में छात्र दायीं ओर लिखी कविता को पढ़ेंगे।
4. कुछ रीडर्स केवल बच्चों के उपयोग हेतु निर्मित है।

लाभ

1. बच्चे सरलता से पढ़ना सीखेंगे।
2. बच्चों में पढ़ने के प्रति रूचि जागृत होगी।
3. बच्चे बिना अटके तीव्र गति से पढ़ पायेंगे।
4. कल्पना शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास होगा।
5. बच्चे पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण कर पायेंगे।
6. बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि होगी।
7. अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होगा।
8. बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

इस प्रकार रीडर्स एक नई शैक्षिक समाग्री है जो सामान्यतः प्राप्त नहीं होती है। प्राथमिक शाला में कक्षा 1 में से पढ़ना कौशल के ऊपर काफी ध्यान दिया गया है। रीडर्स उसमें बहुत काफी हद तक सहायक है। साथ–साथ ही यह काफी रोचक एवं मनोरंजक हैं। एक रीडर्स का उदाहरण इस प्रकार है –

लाला आ
कार ला

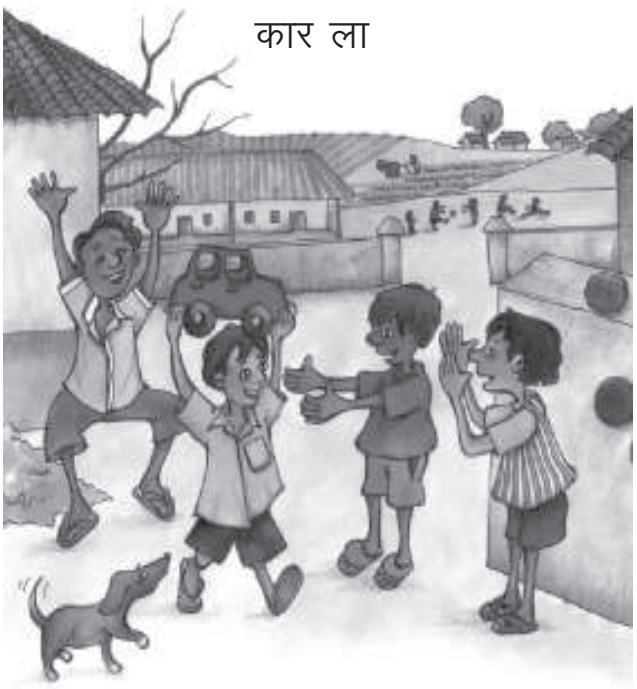

लाला अपनी कार लेकर आया। आंगन में पहुँचने पर टुन्नु पिल्ला अचानक कूदकर कार में बैठा। कला ने टुन्नु को हार पहना दिया। यह देख सब हंसने लगे। हे हे! हो हो! हा हा! कर ताली बजाने लगे।

कला आ
हार ला

लाला के पड़ोस में कला रहती थी। वह उस दिन लाल फूलों से और हरे पत्तों से माला बना रही थी। सभी बच्चे कला को हार लाने के लिये बुला रहे थे। वे नई कार को हार पहनाना चाहते थे।

आमगाँव के स्कूल में लाला पढ़ता था। एक बार उसके चाचा ने जन्मदिन पर मोटर कार उपहार में दी। उसके मित्र मुनीर, जगन और रमन आये। सभी लाला को बुला रहे थे। जहाँ–जहाँ जाता, वहाँ–वहाँ पिल्ला टुन्नु भी जाता।

लाल हरा काला
लाल हरा काला
हा हा हा

लाल कार

हरा	भरा	चरा	डरा
कार	मार	पार	वार
लाला	काला	जाला	माला

6. MGML प्रणाली के लाभ :–

इस प्रणाली के निम्नांकित लाभ हैं –

1. बच्चे क्रमबद्ध तरीके से सीखते हैं।
2. बच्चों के सीखने की क्षमता को सीढ़ी पर उनकी प्रगति देखकर पहचाना जा सकता है।
3. धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए उपचारात्मक शिक्षण कार्ड की व्यवस्था रहती है।
4. तीव्र गति से सीखने वाले बच्चे अपने सहपाठियों की सहायता कर सकते हैं।
5. बच्चे स्वयं कहाँ तक सीखे हैं, उसकी जानकारी स्वयं बच्चों को होती है।
6. अनुपस्थित बच्चे अपने स्तर को पहचान कर, उसी स्थान से अपनी गतिविधि प्रारंभ कर सकते हैं।
7. शिक्षक को प्रत्येक गतिविधि स्वयं नहीं करानी पड़ती।
8. शिक्षक को यह महसूस हो जाता है कि किस बच्चे को सीखने की किस विशिष्ट कठिनाई में उनकी मदद की जरूरत है।
9. बच्चों के लिए सतत् मूल्यांकन की व्यवस्था है।
10. माइल स्टोन के अनुसार 6 समूह होते हैं, जिसमें शिक्षक समर्थित समूह, स्वअधिगम, सहअधिगम, अभ्यास, मूल्यांकन एवं पुनर्बलन समूह हैं।
11. प्रत्येक माइल स्टोन में लगने वाले समय की गणना शिक्षक द्वारा किया जाता है।
12. शिक्षक प्रत्येक विषय में बच्चों की कठिनाई को जानते हैं।
13. बच्चों के लिए सीखने की प्रक्रिया सरल होती है।
14. बच्चे उत्साहपूर्वक गतिविधि करते हुए सीखते हैं।
15. एक माइल स्टोन में उद्देश्यों को छोटे–छोटे भागों में विभक्त करने से, अपने आप सीखने हेतु बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है।
16. बच्चे अपनी स्वयं की गति के अनुसार सीखते हैं।
17. बच्चे आत्ममूल्यांकन करके, आगे क्या सीखना है, इसकी जानकारी रखेंगे।

18. माइल स्टोन बनाने से उद्देश्यों की जटिलता कम होती है। जिससे माइल स्टोन को सहज ही पार कर लेने से बच्चों में आत्मविश्वास जागृत होता है।
19. बच्चों को परीक्षा का भय नहीं होता ।
20. बच्चों में तर्कशक्ति का विकास होता है।
21. बच्चों में अनुशासन की भावना बलवती होती है।
22. नेतृत्व की भावना आती है।
23. जिम्मेदारी और सहयोग की भावना उत्पन्न होती है।
24. पढ़ाई में अरुचि लेने वाले बच्चे भी रूचि के साथ गतिविधि करते हैं।
25. बच्चों को अधिक गृहकार्य करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
26. शिक्षक एवं बच्चों में सकारात्मक सोच की भावना उत्पन्न होती है।
27. शिक्षक हर बच्चे को पूरी तरह से सीखने का अवसर दे पाते हैं।
28. नई–नई गतिविधियों एवं नवाचार का अवसर मिलता है।
29. शिक्षक, सहायक सामग्रियों का पूर्णतया उपयोग कर सकते हैं।
30. समुदाय को स्वस्थ नागरिक मिलेंगे।
31. शाला से संबंधित समिति के लोग छात्रों की प्रगति को आसानी से जान सकते हैं।
32. पुस्तकों का या मानसिक बोझ का अनुभव नहीं होगा।
33. प्रत्येक विषय में कार्ड एवं अन्य सामग्री की प्रचुरता है जिससे बच्चों को अपनी रुचि के अनुसार गतिविधि के कई अवसर मिलेंगे और सभी बच्चों को सीखने की प्रक्रिया के आधार पर सीखने में आसानी होगी।

•••

अध्याय – 6

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. शिक्षक की भूमिका :–

MGML

कक्षा व्यवस्था

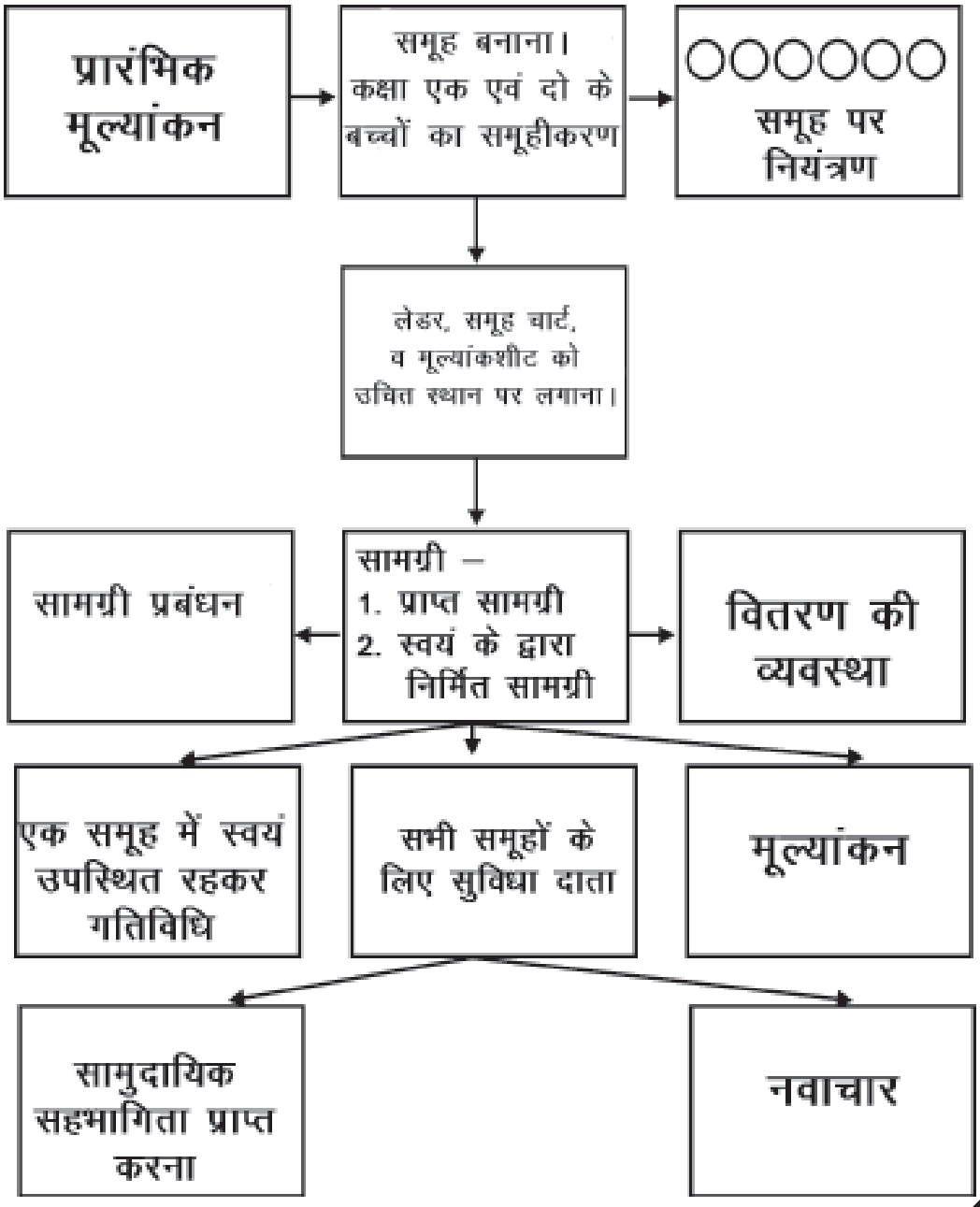

MGML की इस प्रणाली में शिक्षक की भूमिका सुविधा दाता के साथ–साथ बहुत सक्रिय मार्ग दर्शक भी हो जाता है। इस प्रणाली में शिक्षक की भूमिका निम्न है –

1. कक्षा कक्ष एवं आसपास की सजावट कर प्राारंभिक मूल्यांकन लेना।
2. प्रारंभिक मूल्यांकन के पश्चात् कक्षा एक व दो के बच्चों का समूह बनाने के लिए समूहीकरण करना। समूहीकरण बच्चों की योग्यता के अनुरूप होगा।
3. सर्वप्रथम MGML की कक्षा प्रारंभ करने से पहले शिक्षक को कक्षा की दीवार में समूहवार लोगो बनवाना, छत पर तार लगाना, चटाई /दरी व्यवस्था, रैक की व्यवस्था व रैक पर प्राप्त सामग्री व्यवस्थित रूप में हो। इसलिए टोकरी की व्यवस्था करना, लेडर की उचित जगह पर लगाना, मूल्यांकन पत्रक कक्ष में लगाना होगा।
4. समूहीकरण के बाद बच्चों को लेडर व लोगो से परिचित कराना।
5. लेडर लोगो से परिचित होने के पश्चात् बच्चे अपना लोगो उठाकर कार्य करेंगे व समूह निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ होगी।
6. शिक्षक बच्चों द्वारा लाये गये अवधारणा कार्ड समूह में समझायेगा अवधारणा पश्चात् ही बच्चा उसकी अगली गतिविधि प्रारंभ करेगा। अवधारणा कार्ड किसी एक दक्षता को प्रतिपादित करता है। अवधारणा कार्ड के माध्यम से उस बिन्दु पर बच्चे को पूर्ण दक्ष करना शिक्षक की महत्वपूर्ण जवाबदारी है। यदि अवधारणा कार्ड को बच्चा भली–भांति समझ जाता है, तो आगे कार्डों का अध ययन अभ्यास में काफी आसानी होगी।
7. शिक्षक, शिक्षक समर्थित समूह में रहेगा, साथ ही साथ सभी समूहों के लिए सुविधा दाता के रूप में कार्य करेगा, सभी समूहों पर उसका नियंत्रण होगा।
8. प्रत्येक माइल स्टोन के अंत में मूल्यांकन कार्ड दिया गया है उसे बच्चे लेकर शिक्षक समर्थित समूह में बैठकर स्वयं करेंगे। जो बच्चे मूल्यांकन पूर्ण करने में असफल होंगे, उसके लिए शिक्षक उपचारात्मक शिक्षण करेंगे।

9. बच्चे का मूल्यांकन पूर्ण होने पर शिक्षक मूल्यांकन पत्रक भरेंगे व दीर्घकालीन प्रयोजना गतिविधि को पूर्ण करायेंगे।

10. शिक्षक आवश्यकतानुसार स्वयं सामग्री निर्मित कर सकते हैं।

11. इस प्रणाली के लिए सामुदायिक सहभागिता भी प्राप्त कर सकते हैं।

12. शिक्षक नवाचारी है तो अपने कार्यों एवं की गई नवाचार को लिपिबद्ध कर रखें और उससे अन्य शिक्षकों को भी लाभान्वित करें।

13. प्रभारी / प्रधान पाठक के सहयोग से MGML की गतिविधियों की जानकारी अन्य शिक्षको को भी दें। आपकी लगन और कड़ी मेहनत ही MGML की सफलता है।

2. मॉनिटरिंग :–

मॉनिटरिंग के समय अवलोकनकर्ता का व्यवहार बच्चों से व शिक्षक से सौहार्द्रपूर्ण हों। MGML की प्रक्रिया को सतत् जारी रखने एवं गति प्रदान करने के लिए व मार्गदर्शन के लिए मॉनिटरिंग आवश्यक है, निम्न बिन्दुओं के आधार पर मॉनिटरिंग किया जाए :–

1. क्या शिक्षक ने समूह का निर्माण किया है ?

2. क्या शिक्षक अपने समूह के साथ कार्य कर रहे हैं ?

3. क्या शिक्षक अन्य समूहों पर ध्यान दे पा रहे हैं ?

4. क्या बच्चे समूह में बैठकर गतिविधि कर रहे हैं ?

5. क्या सामग्री का चयन निर्धारित लोगो के अनुसार हो रहा है ?

6. क्या कार्डों के अतिरिक्त, सहायक सामग्रियों का उपयोग हो रहा है ?

7. क्या प्रदत्त सामग्री के अलावा शिक्षक ने अन्य सामग्री का निर्माण किया है?

8. क्या सामग्री के रखरखाव की उचित व्यवस्था है ?

9. क्या कक्षा के अंदर एवं बाहर की गतिविधियां कराई जा रही हैं ?

10. क्या बच्चे अपनी रूचि के अनुरूप गतिविधि में भाग ले रहे हैं ?

11. क्या बच्चों में माइल स्टोन के उद्देश्यों के अनुरूप क्षमता विकास हो रहा है ?
12. क्या बच्चे लेडर के अनुरूप अपने समूह में बैठ रहे हैं ?
13. क्या बच्चे बिना भय के प्रश्नों के उत्तर दे रहे व प्रश्न कर रहे हैं ?
14. क्या शिक्षक समय पर एवं नियमित रूप से गतिविधि करा रहे हैं ?
15. क्या शिक्षक कक्षा में धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को अतिरिक्त सहायता दे रहे हैं ?
16. क्या शिक्षक मूल्यांकन कार्ड पूर्ण करा पा रहे हैं ?
17. क्या शिक्षक मूल्यांकन चार्ट नियमित रूप से भर रहे हैं ?
18. क्या समय पर मध्यावधि मूल्यांकन लिये गये हैं ?
19. क्या छात्र सीढ़ी के अनुसार आगे बढ़ रहे हैं ?
20. क्या दीवार पर विषयवार सीढ़ियों एवं मूल्यांकन चार्ट को लगाया गया है ?
21. क्या दी गई अभ्यास पुस्तिका में बच्चों के कार्यों की जॉच की जा रही है ?
22. क्या बच्चे, शिक्षक एवं पालकों के द्वारा लिखी गई कहानी/कविता को तार पर लगाये जा रहे हैं ?
23. क्या शिक्षक कराई जा रही गतिविधियों पर टीप को अपनी निजी डायरी में लिख रहे हैं ?
24. क्या शिक्षक कार्ड के नीचे दी गई निर्देशों के अनुसार गतिविधि करा रहे हैं?
25. क्या समुदाय की सहभागिता रहती है ?
26. क्या बच्चों को पर्यावरण का अवलोकन कराया जा रहा है ?
27. क्या शिक्षक MGML की बैठकों में सहभागिता करते हैं ?

अवलोकन कर्ता का अभिमत –

.....

.....

.....

.....

.....

अवलोकन कर्ता का

हस्ताक्षर

पद .....

दिनांक .....

अवलोकन प्रतिवेदन

1. शाला का नाम ..... विकासखंड ..... जिला .....
2. शिक्षक का नाम .....
3. कुल दर्ज .....उपस्थिति..... अनुपस्थित ..... लंबी अनुपस्थिति.....
4. विषय .....
5. बच्चों की गतिविधि एवं सहभागिता पर अभिमत .....

   .....
6. बच्चों के स्तर एवं सीखने की गति पर अभिमत .....

.....

7. शिक्षक की सहभागिता .....

.....

(1) डायरी लेखन .....

(2) मूल्यांकन पत्रक .....

8. धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए शिक्षक का प्रयास .....

.....

9. लंबी अनुपस्थिति वाले छात्रों के लिए शिक्षकों एवं जनभागीदारी के सदस्यों द्वारा किया गया प्रयास .....

.....

10. ग्रामवासियों द्वारा शिक्षण प्रक्रिया में दिया गया सहयोग .....

.....

11. शिक्षक की कठिनाईयों पर अभिमत .....

.....

12. विभिन्न कठिन बिन्दुओं पर आपका अभिमत .....

.....

कक्षा शिक्षक

हस्ताक्षर –

पदनाम –

दिनांक –

अवलोकन कर्ता

हस्ताक्षर –

पदनाम –

दिनांक –

3. MGML में विकलांग बच्चों की शिक्षा :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में समानता के लिए शिक्षा की बात कही गई है। इसमें यह कहा गया है कि शिक्षा पर सबका अधिकार है। कोई भी व्यक्ति शिक्षा से वंचित न हो। इसकी पूर्ति के लिए केन्द्र शासन द्वारा निःशक्त व्यक्ति अधिनियम 1995 बनाई गई।

जब प्रारंभिक शिक्षा के अंतर्गत सीखने सिखाने की प्रक्रिया को सहज बनाने का प्रयास MGML कार्यक्रम के रूप में की जा रही है तब विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सुविधा देने की व्यवस्था की जाएगी।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे – विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का आशय ऐसे बच्चों से है जिन्हें सामान्य बच्चों से अलग विभिन्न प्रकार की आवश्यकता होती है। अर्थात् ऐसे बच्चे शारीरिक रूप से या ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर असामान्य होते हैं।

इस प्रकार के बच्चों का शिक्षण करने में शिक्षकों की भूमिका अहम होती है। इसके लिए शिक्षकों को –

1. इस वर्ग के बच्चों के लिए संवेदनशील होना होगा।
2. उनकी आवश्यकता के लिए सजग रहना होगा।
3. शाला में समता का व्यवहार को प्रेरित करना होगा।
4. शाला में अतिरिक्त समय देने होंगे।
5. उनकी आवश्यकता के अनुरूप सुविधा देने का प्रयास करेंगे जैसे – गतिविधियों के लिए प्रयुक्त सामग्री विकलांग बच्चों के पहुंच में हों।

MGML में इस वर्ग के बच्चों को सुविधा प्रदान करने के पूर्व इनकी आवश्यकता की पहचान कर लेना आवश्यक होगा।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

जो सामान्य बच्चों के साथ गतिविधियों में जोड़ा जा सकता है।	जो सामान्य बच्चों के साथ गति–विधियां में जोड़ने में कठिनाइयां होगी।
आंशिक रूप से विकलांग	बहुविकलांग
1. एक आंख, पैर, हाथ से विकलांग	1. दृष्टिहीन, मूक बधिर 2. मानसिक विकलांग
2. तुतलाना या हकलाना	3. शाला पहुंचने में कठिनाई

आंशिक रूप से विकलांग बच्चों को कुछ विशेष प्रकार की सुविधाएं देकर जैसे पैर से विकलांग बच्चों को कूदने, चलने की गतिविधि से मुक्त रखें, पर अवलोकन हेतु पास में रहें।

अधिक विकलांग बच्चों के लिए नीतिगत योजना से जोड़ने या उपकरण आदि सुविधा प्रदान करने के लिए योजना/जानकारी बनानी चाहिए तथा सुविधा हेतु यथासंभव सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

4. MGML में लिंग भेद रहित शिक्षा कैसे –

MGML शिक्षण पद्धति में सीखने सिखाने की प्रक्रिया पूर्णतः सामग्री के साथ–साथ समूह में सीखने के अवसर प्रदान करता है। इस पद्धति में गतिविधि कराते समय बालक, बालिका समूह अलग–अलग न बनाकर मिश्रित समूह होगी।

कहीं–कहीं सामाजिक, पारिवारिक बाधाएं या पूर्वाग्रह रूपी बाधाएं (जैसे– माता–पिता को, शिक्षकों को, समुदाय को, आर्थिक विषमता वाले बच्चों को एक साथ बिठाया नहीं जा सकता आदि) सामने आ सकता है। इसके लिए हमें समुदाय के साथ सामंजस्य बनाकर दूर करने के लिए सजग रहना होगा।

5. समय सारणी का निर्धारण :–

दिन	सुबह	दोपहर	शाम
सोमवार	भाषा	गणित	अंग्रेजी
मंगलवार	भाषा	गणित	पर्यावरण
बुधवार	गणित	भाषा	अंग्रेजी
गुरूवार	गणित	भाषा	पर्यावरण
शुक्रवार	भाषा	गणित	अंग्रेजी
शनिवार	भाषा	गणित	पर्यावरण
टीप :–			

(1) उपरोक्त सारणी में शिक्षक अपनी शाला की परिस्थिति एवं बच्चों की रूचि के आधार पर स्वयं निर्धारण करेंगे।

(2) दिवसवार करायी हुई गतिविधि की जानकारी रखेंगे।

•••

अध्याय – 7

परिशिष्ट

इस अध्याय में लोगो संबंधी सम्पूर्ण जानकारी विषयवार प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके साथ चारों विषयों के माइल स्टोन की सूची मूल्यांकन सीट एवं प्रगति पत्रक का नमूना दिया जा रहा है। आवश्यकतानुसार इनसे संबंधित अध्याय के साथ अध्ययन करें।

कार्डों के उद्देश्य एवं उपयोग विधि

विषय – भाषा

1. बिल्ली – कविता कार्ड

उद्देश्य :– बिल्ली लोगो अवधारणा कार्ड के रूप में कविता कार्ड है। यह पूरी तरह शिक्षक समर्थित कार्ड है। इस कार्ड के माध्यम से बच्चों को सरल व परिचित कविता के माध्यम से प्रत्येक माइल स्टोन के लिए निर्धारित वर्णों की पहचान कराना है।

विवरण :– माइल स्टोन 1 में निर्धारित वर्ण र, क, ल, ह, आ एवं ा की मात्रा, माइल स्टोन 2 में न,ज, स, त, ए, व, ो की मात्रा, माइल स्टोन 3 में म, प, ग, य, इ, ई, व, ि ी की मात्रा, माइल स्टोन 4 में द, च, ब, ख, अ, ऐ व ै की मात्रा, माइल स्टोन 5 में भ, र, घ, व, ड, रू, व ु ू की मात्रा, माइल स्टोन 6 में थ, ठ, फ, झ, छ, ओ, औ व ो ौ की मात्रा, माइल स्टोन 7 में ध, ड, ढ, ण, श, अं व ं की मात्रा माइल स्टोन 8 में त्र, ज्ञ, क्ष, ञ, ड़, अः तथा माइल स्टोन 9 में ष,ऋ, श्र, ड., व, ढ़ वर्ण लिये गये है। ये वर्ण माइल स्टोन अनुसार बिल्ली कार्ड में है। इन कार्डों का वाचन शिक्षक के द्वारा ही होगा। जिसमें संबंधित वर्णों को कविता के माध्यम से बताया जाएगा। कविता पठन के समय शिक्षक ऐसे वर्णों पर विशेष ध्यान कर बच्चों को उन वर्णों की पहचान करायेंगे। वर्णों की पहचान के लिए कविता में सरल व परिचित शब्द रखे गए हैं। बिल्ली लोगो वाले कार्डों की संख्या कक्षा पहिली में 10 तथा दूसरी में 13 है।

2. घोड़ा (कहानी कार्ड)

उद्देश्य :– घोड़ा लोगो भी कहानी कार्ड के रूप में पूर्ण अवधारणात्मक है, इसलिए घोड़ा लोगो पूर्णतः शिक्षक समर्थित समूह में रखा गया है। जिस प्रकार बिल्ली कार्ड का उद्देश्य माइल स्टोन में निर्धारित वर्णों को सरल व परिचित कविता के माध्यम बताना व सिखाना है।

उसी प्रकार घोड़ा कार्ड का उद्देश्य भी सरल व परिचित कहानियों के माध्यम से उन वर्णों को सिखाना है।

विवरण :– घोड़ा लोगो वाले कार्डों में लाल कार, नाव चली, नागपंचमी, दशहरा, बाड़ी में, हाय मेरे लाल, पूंछ और दौड़ आदि कहानियाँ ली गई है।

3. हिरण – चित्र कार्ड/शब्दकोष

उद्देश्य :– चित्र चार्ट के माध्यम से शब्द भण्डार में वृद्धि करना।

विवरण :– देखने में तो यह चूहा कार्ड की ही तरह नजर आता है, पर इसका उपयोग शब्द भण्डार अर्जित करने में किया जाता है। इस कार्ड में संपूर्ण माइल स्टोनों में आये हुए वर्णों एवं मात्राओं को सम्मिलित कर शब्द निर्माण करते हैं।

उपयोग :– प्रत्येक माइल स्टोन में हिरण कार्ड के रूप में छोटे–छोटे कार्ड बनाये गये हैं, इन कार्डों में एक ओर चित्र और दूसरी ओर चित्र का नाम लिखा हुआ है। इसी प्रकार सम्पूर्ण माइल स्टोन हेतु बहुत सारे कार्ड बनाये गये है जो बच्चों को शब्द भण्डार में वृद्धि करेगा।

4. शेर – आदर सूचक व निर्देश कार्ड

1. माइल स्टोन में आए व्याकरण से संबंधित विभिन्न आदर सूचक शब्दों को समाहित किया गया है।

उद्देश्य :– शेर कार्ड का उद्देश्य छोटे बच्चों में अपने से बड़ों के प्रति अनेक प्रकार के आदर सूचक शब्दों का प्रयोग कर संबंधित करना तथा शिक्षक एवं बच्चों के द्वारा दिए गए निर्देशों को समझना व पालन करना है।

विवरण :– आप, श्रीमान, श्रीमती, माननीय, आदरणीय, कृपया, धन्यवाद आदि आदर सूचक शब्दों का मौखिक व लिखित रूप से प्रयोग कर सकेंगे तथा शिक्षक के द्वारा बच्चों को दिए निर्देशों का पालन कर सकेंगे।

5. गिलहरी – पासा खेल

उद्देश्य :– गिलहरी कार्ड का उद्देश्य पासा खेल के माध्यम से बच्चों को चित्र, वर्ण, शब्द, मात्रा, शब्द चित्र आदि की सहायता से वर्णों एवं शब्दों का ज्ञान कराना है।

विवरण :–

आवश्यक सामग्री :–

1. पासा (लूडो) के छः खानों में ा, ि, ी, ु , ू , ै की मात्राएँ अंकित रहेंगी।
2. 30 खानों में विभिन्न अक्षरों का लिखा हुआ चौसर (बिसात) होगा।

विधि :– बच्चे पासा खेलेंगे। पासा में आए मात्रा को चौसर में दिए वर्ण में लगाकर उच्चारण करेंगे।

6. कुत्ता – व्यावहारिक व्याकरण

उद्देश्य :– कुत्ता कार्ड का उद्देश्य व्यावहारिक व्याकरण का अभ्यास कर व्याकरण संबंधी त्रुटियों को दूर करना है।

विवरण :– इस कार्ड में शब्द पट्टी तथा वाक्य पट्टी बनाया गया हैं। इस कार्ड के माध्यम से बच्चे खेल–खेल में नये–नये शब्द एवं वाक्य बनायेंगे। बनाये शब्दों एवं वाक्यों को पढ़कर अपने दैनिक जीवन में उपयोग करेंगे।

उदाहरण :– (माइल स्टोन 4 का कुत्ता कार्ड)

निर्देश :– शिक्षक इसके अलावा अन्य चित्रों का संकलन कर चर्चा करावें।

7. भेड़ – रेलगाड़ी

उद्देश्य :– भेड़ कार्ड का मूल उद्देश्य चित्र को चित्र से, वर्ण को वर्ण से, शब्द को शब्द से शब्द चित्र को शब्द चित्र से मिलान कर चित्र, वर्ण तथा शब्दों से बच्चों को पहचान कराना है।

विवरण :– उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए रेलगाड़ी को माध्यम के रूप में लिया गया है। एक जैसे दो चित्र, एक जैसे दो वर्ण, एक जैसे दो शब्द तथा एक जैसे दो शब्द चित्र दो अलग–अलग रेलगाड़ी के डिब्बों में अंकित हैं। जिसे पहचान कर संबंधित डिब्बों को एक दूसरे के पास–पास रखकर रेलगाड़ी तैयार की जाती है।

उपयोग :– (माइल स्टोन 3 का रेलगाड़ी का चित्र)

रेलगाड़ी के इंजन वाले डिब्बे में मटका का चित्र दूसरे में यज्ञ और इमली का, तीसरे में मटका और पैर का, चौथे में इमली और ईख का, पॉचवें में पैर और गमला का, छठवें में गमला और यज्ञ का तथा अंतिम डिब्बे में ईख और कार्ड का चित्र दिया गया है।

इसे यही क्रम में रखकर रेलगाड़ी बनाना है। जैसे इंजन वाला डिब्बा में मटका के साथ मटका का चित्र वाला डिब्बा, फिर बैट के साथ बैट वाला डिब्बा, गमला के साथ गमला वाला डिब्बा मिलाते हुए क्रम को आगे बढ़ाना है। अंत में कार्ड डिब्बा मिलने पर रेलगाड़ी बन गई।

8. बंदर – अभिनय/वर्णन करना

उद्देश्य :– अभिनय क्षमता का विकास करते हुए शैक्षिक कार्य पूर्ण करना।

विवरण :– बच्चे हाव–भाव के साथ अभिनय करेंगे। दिए गए निर्देश जैसे– झाड़ू लगाना, ब्रश करना, नाखून करना, कंघी करना, नहाना आदि कार्यों को अभिनय के माध्यम से प्रदर्शित कर सकेंगे।

इसमें मुखौटे लगाकर भी अभिनय किया जा सकता है। सामग्री विभिन्न पशु पक्षी का मुखौटा।

9. बकरी – वर्ग पहेली

उद्देश्य :– अक्षर, शब्द पहेली, अक्षर पासा, कठिन शब्द, शब्दार्थ एवं लोगो परिचय कराना।

विवरण :– वर्ग पहेली के माध्यम से शब्द निर्माण करना और उच्चारण के साथ बोलने का अभ्यास करना। वर्णों एवं मात्राओं को जोड़कर नये शब्द बनाना जैसे–

माइल स्टोन 02 बकरी कार्ड लेवें।

निर्देश :– चित्र चार्ट के माध्यम से शब्द का निर्माण किया जा सकता है। जैसे – सजाना, सरला, बाना आदि शब्द। अक्षरों को आड़े तिरछे खड़ी जोड़कर सार्थक/ निरर्थक शब्द बनाना।

10. ऊंट – बाहर का खेल

उद्देश्य :– बाहर के खेल के लिये इस कार्ड को विकसित किया गया है।

विवरण :– इस कार्ड के माध्यम से अध्यापन से संबंधित विभिन्न खेलों को समाहित किया गया है। जिसमें बिल्लस और करें क्या बतलाओं नदी–पहाड़, धूप–छांव, पिट्ठूल आदि।

उपयोग :– मैदान या फर्श पर बिल्लस खेल का मैदान बनायेंगे उसके ऊपर कठिन वर्णों को लिखेंगे जैसे – अं, श, ण, अः, ड़ आदि सभी खानों में लिखेंगे। बच्चे बिल्लस फेककर एक पैर से कूदते हुए वर्णो को पढ़ते हुए आगे बढ़ते जायेंगे। इसी प्रकार सभी बच्चों के द्वारा कठिन वर्णों का अभ्यास होगा भूलने वाले बच्चों के वर्णों की जानकारी देंगे।

11. चूहा – मूल अक्षर से बने शब्द चित्र कार्ड

उद्देश्य :– माइल स्टोन से संबंधित शब्द, चित्र कार्ड, के माध्यम से पूर्व की ज्ञान को पुष्ट करना।

विवरण :– कक्षा 1ली के प्रत्येक माइल स्टोन में एक निश्चित वर्णों को लिया गया हैं जैसे – माइल स्टोन 04 में द, च, ब, ख, अ, ऐ, इन वर्णो से प्रारंभ होने वाले नये शब्दों के अभ्यास हेतु चूहा कार्ड का उपयोग किया गया है, यह छोटा कार्ड है। इसके प्रथम पृष्ठ पर चित्र एवं पृष्ठ भाग पर संचित्र से संबंधित शब्द के साथ अलग–अलग वर्णो को भी लिखा गया है। दिये गये शब्द माइल स्टोन के कहानी, कविता पर आधारित रहा है।

निर्देश :– इस कार्ड के माध्यम से चित्र देखकर शब्द का उच्चारण करेंगे। शब्दों के ध्वनियों को अलग–अलग मूल वर्ण से पहचान करायें।

12. कछुआ – खिड़की कार्ड

उद्देश्य :– कछुआ लोगो मात्रा, अक्षर, शब्द निर्माण एवं अध्यापन हेतु बनाया गया है।

विवरण :– खिड़की कार्ड, वर्ण में मात्रा लगाकर स्वर उच्चारण का अभ्यास कराया गया है। दो वर्णो को जोड़कर शब्द बनाना एवं उच्चारण करता इस कार्ड के माध्यम से कराया गया है। खिड़की कार्ड के माध्यम से मात्रा लगाने के उचित स्थान की जानकारी बच्चों को अच्छी तरह होती है।

उपयोग :– 4/5'' के बने कार्ड में 1.5/1.5'' की खिड़की बनी होती है। इस खिड़की वाले कार्ड में अलग–अलग मात्राएँ उपयुक्त स्थान पर बनी होती है इस कार्ड के पीछे कोई भी वर्ण कार्ड लगाकर स्वर युक्त वर्ण उच्चारण किया जाता है।

13. हाथी – लिखना

उद्देश्य :– हाथी लोगो लिखना, ऊंगली फिराना, बिन्दु मिलाना और चित्र बनाना।

विवरण :– टूटे हुए लाइन को जोड़कर वर्ग बनाना। तीर के निशान के अनुरूप ऊंगली फिराना। लिखने का पूर्व अभ्यास करना। पेन, पेन्सिल से बिन्दु मिलाकर अक्षर लिखना। अक्षर से अक्षर मिलाकर शब्द बनाने का अभ्यास और शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाने की गतिविधि करायी गयी है। साथ ही सुनकर लिखने का कार्य कराया गया है।

उपयोग विधि :– बच्चे रेत में ऊंगली चलाकर लिखने का अभ्यास करें। दीवार पर बने श्यामपट में वर्ण लिखा हुआ है, जिस पर बच्चे पेन्सिल चलाकर लिखने का पूर्वाभ्यास करें।

14. बैलजोड़ी – अभ्यास कार्ड

उद्देश्य :– माइल स्टोन से संबंधित गतिविधियों को पुनः अभ्यास कर बच्चों को दक्ष बनाना।

विवरण :– बैलजोड़ी कार्डों में जोड़ी मिलाना, खाली स्थान भरना, पहचानो और मिलाओ, प्रश्नों के उत्तर लिखो, उत्तर खोजकर लिखो जैसे प्रश्न समाहित है।

जैसे :– (बैलजोड़ी माइल स्टोन 2–2 जोड़ी मिलाओ)

जोड़ी मिलाने हेतु कार्ड में दोनों ओर संबंधित चित्र अलग–अलग क्रम में दिए गए है। उन चित्रों को रस्सी/धागे की सहायता से जोड़ी के रूप में मिलाएंगे।

15. लोमड़ी

उद्देश्य :– यह कार्ड स्क्रेप बुक हेतु रखा गया है। पशु–पक्षियों के चित्र संकलन के प्रति रूचि उत्पन्न करता है। साथ ही संकलित चित्र के बारे में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करता है।

विवरण :– स्क्रैपबुक में अपनी रूचि के अनुरूप चित्र ढूँढ़कर लायेंगे। और अपनी कापी में लगायेंगे। व उसका नाम अपनी बोली में लिखेंगे। शिक्षक उस चित्र का वस्ताविक नाम बच्चों

के कापी में लिखेंगे। कक्षा पहिली में चित्र लगाकर उसका नाम अपनी बोली में लिखना। कक्षा दूसरी इन कार्डों पर चित्रों का नाम लिखकर उसके बारे में लिखकर बोलने को कहा गया है।

16. पुस्तक पढ़ता बंदर –

उद्देश्य :– यह लोगो रीडर्स के उपयोग के लिए किया गया है। बच्चों में अक्षर मात्राओं से संबंधित पढ़ने की कला विकसित करना।

विवरण :– रीडर्स माइल स्टोनवार वर्णों को लेकर बनाया गया है। वर्णों से कई शब्द बनाकर उसे कविता, कहानी बनाया गया है। जो अधिकांशतः परिवेशीय चीजों दृश्यों से संबंधित है। जिसे बच्चे आसानी से समझकर पढ़ सकते हैं।

17. गाय – मूल्यांकन कार्ड

उद्देश्य :– गाय लोगो माइल स्टोन में की गई गतिविधियों से प्राप्त दक्षता का आकलन करने हेतु गतिविधियों से संबंधित मूल्यांकन कार्ड बनाया गया है।

विवरण :– यह लोगो मूल्यांकन कार्ड हेतु बनाया गया है। इस कार्ड में माइल स्टोन के अनुरूप गतिविधियों पर आधारित अभ्यास बनाया गया है। इस कार्ड में जोड़ी बनाओ, मात्रा लगाकर पढ़ना, सही वर्ण पहचानकर गोला लगाना, शब्द पहेली, प्रश्नोत्तर खाली स्थान इत्यादि है। इस कार्ड के माध्यम से बच्चों की दक्षता एवं शैक्षिक कार्य क्षमता का अवलोकन होता है। बच्चे इस माइल स्टोन को पूर्ण कर अगले माइल स्टोन की गतिविधि प्रारंभ करते हैं।

18. भालू – उपचारात्मक शिक्षण

उद्देश्य :– कठिन बिन्दु के समस्या के समाधान हेतु कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु दी गई है।

विवरण :– माइल स्टोन में आने वाले कुछ कठिन अवधारणा जिसे बच्चे पूर्ण रूप में समझ नहीं पाते है बच्चो के मन में भ्रम बनी रहती है। ये बातें उनके अभ्यास एवं मूल्यांकन से परिलक्षित होता है। इस समस्या को दूर करने हेतु कुछ सुझाव दिये गये हैं। उपरोक्त समस्या के समाधान हेतु शिक्षक अपने परिवेश पर आधारित गतिविधि स्वयं तैयार कर सकते हैं।

19. गैण्डा – मध्य एवं अंतिम मूल्यांकन

उद्देश्य :– बच्चों का स्पायरल लर्निंग कराना।

विवरण :– गैण्डा लोगो की संख्या कक्षा पहिली में 2 व कक्षा दूसरी में 2 है। इसे कक्षा के मध्य तथा अंतिम मूल्यांकन हेतु रखा गया है। मध्य एवं अंतिम माइल स्टोन पार करने के बाद यह ज्ञात किया जाता है कि बच्चे का अर्जित ज्ञान स्थायी है अथवा नहीं। अर्जित ज्ञान स्थायी न होने की स्थिति में शिक्षक इसकी जानकारी रख सकें व स्थायी ज्ञान हेतु रणनीति बनाकर स्पायरल लर्निंग करा सके। कक्षा पहिली में गैण्डा 1 माइल स्टोन 6 पर, गैण्डा 2 माइल स्टोन 10 पर है। इसी तरह कक्षा दूसरी में गैण्डा 3 माइल स्टोन 16 पर तथा गैण्डा 4 माइल स्टोन 21 पर रखा गया है।

विषय – गणित

1. मुर्गा कार्ड – अवधारणा

उद्देश्य :– मुर्गा लोगो अवधारणात्मक समझ के लिए तैयार किया गया है, इसलिए इसे पूर्णतः शिक्षक समर्थित समूह में रखा गया है। समस्त गणितीय अवधारणाओं आंकिक एवं ज्यामितीय आकृति की प्रारंभिक समझ, विभिन्न ठोस वस्तुओं के माध्यम से विकसित करने के उद्देश्य से मुर्गा लोगो का कार्ड तैयार किया गया है।

विवरण :– एक माइल स्टोन के समस्त उद्देश्यों में महत्वपूर्ण एवं कठिन अवधारणाओं को लेकर अवधारणा कार्ड बनाया गया है। एक माइल स्टोन में एक आवधारणा कार्ड रखा गया है। किसी माइल स्टोन में कार्ड के दोनों तरफ प्रिन्ट किया गया है। इसमें विभिन्न ठोस वस्तुओं कंकड़, तिलियों के बंडल, चित्र चार्ट, अंक कार्ड, बिन्दी कार्ड, ज्यामितीय से संबंधित ठोस वस्तु के माध्यम से शिक्षक अवधारणा स्पष्ट करेंगे। कक्षा पहली में कार्ड संख्या 17 है एवं दूसरी में कार्ड संख्या

15 है। इसके अतिरिक्त अंक कार्ड 1 से 100 तक गिनती चार्ट, पासा, पहाड़ा चार्ट, नोट एवं सिक्के आदि हैं। इन सबका उपयोग करते हुए विभिन्न अवधारणा जैसे – अंकों की पहचान, घटते–बढ़ते क्रम, शून्य की अवधारणा, जोड़, घटाना, गुणा, भाग की क्रिया, पहाड़ा का निर्माण, स्थानीय मान, दिन व महीनों के नाम, धारिता, लंबाई, वर्ग, त्रिभुज, वृत्त इत्यादि की जानकारियां बच्चों को दी जा सकेगी।

vo/kkj.kk dkMk dh fo'k"krk,¡

1. सर्वप्रथम विभिन्न ठोस वस्तुओं के साथ क्रियाकलाप के द्वारा बच्चों में अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है।
2. उपरोक्त गतिविधि के बाद उन्हीं अवधारणाओं को स्लेट, कापी, अभ्यास पुस्तक, श्यामपट आदि के माध्यम से अभ्यास कर जानकारी को पुष्ट करते हैं।
3. बच्चों के रूचि के अनुकूल एंव उसके अनुभवों का उपयोग करते हुए कार्डों को रोचक बनाया गया है।
4. शिक्षक गणित से संबंधी अन्य सामाग्रियों का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र है। उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित गतिविधियों का विवरण दिया गया है –

1. वस्तु का 1 जोड़ी बनाया गया है।
2. इसी प्रकार दूसरे क्रम में 4 हंस को दो जोड़ी बनाया गया है।
3. छः मुर्गा को दो–दो की तीन जोड़ी बनाया गया है।
4. आठ ऊँट को दो–दो की चार जोड़ी बनाया गया है। इसी प्रकार जोड़ी बनने वाले संख्या को सम संख्या के रूप में दर्शाया गया है। शिक्षक ठोस वस्तु के द्वारा दो–दो की जोड़ी बनाकर सम संख्या की अवधारणा स्पष्ट किया गया।

1. वृत्त की अवधारणा की समझ स्पष्ट करने के लिए दैनिक जीवन में उपयोगी, आसपास पायी जाने वाली ठोस वस्तुओं का प्रत्यक्ष अवलोकन कर वृत्त की पहचान करना सीखेंगे।

जैसे – (1) सिक्का – सिक्के की आकृति गोल है। सिक्के को कागज पर रखकर पेन्सिल गोल घुमाया जाय तो वृत्त की आकृति बनती है। इसी प्रकार घड़ी, चूड़ी से भी आकृति बनायी जा सकती है।

(2) टायर– टायर को मैदान में ले जाकर जमीन पर रखकर उसके किनारे में लकड़ी की सहायता से लाइन खींचा जाये तो वहॉ पर भी एक वृत्त की आकृति बनती है।

2. कौआ कार्ड – कक्षा के बाहर खेल

उद्देश्य :– कौआ लोगो कक्षा में गणित से संबंधित सीखी जाने वाली अवधारणाओं को कक्षा के बाहर खेल के माध्यम से छात्रों को परिचित करवाते हुए उनके मन में गणित के प्रति बसे भय को दूर कर अवधारणा की समझ स्पष्ट करना।

विवरण :– इस लोगो के अंतर्गत बाहर के खेल को रखा गया है। कौआ लोगो को आंशिक शिक्षक समूह में रखा गया है। शिक्षक निर्देश देने के बाद गतिविधि मॉनीटर के द्वारा करा सकते हैं। खेल प्रारंभ कराने से पहले शिक्षक बच्चों को खेल से संबंधित स्पष्ट निर्देश दें।

कौआ लोगो वाले कार्डों की संख्या कक्षा 1ली में 16 एवं कक्षा 2री में 08 है। खेल कार्डों में खेल का विवरण निम्नानुसार है –

	खेल का नाम	विवरण
1.	बिल्लस खेल	इस खेल के माध्यम से निश्चित संख्या का ज्ञान उल्टा क्रम और सीधा क्रम में कराया गया है। इसके अंतर्गत पहाड़ा का अभ्यास भी किया गया है।
2.	बोल भाई कितने	इस खेल में 1 से 100 तक की संख्याओं का अभ्यास एवं समूह बनाने का खेल बताया गया है।

इसी प्रकार कुछ अन्य खेलों के नाम निम्नानुसार हैः–

(1) बोल भाई बोल क्या है गोल (2) गॉव का मेंला (3) कट्टम पहाड़ा आदि है जिसका विधि कार्ड में उल्लेखित है।

3. कबूतर कार्ड – अंक

उद्देश्यः– यह एक बहुद्देशीय कार्ड है गणित के कई अवधारण जैसे – घटते बढ़ते क्रम, छोटी बड़ी संख्या, स्थनीय मान आदि अनेक अवधारणाओं के अभ्यास के लिए बनाया गया है। इन कार्डों को कबूतर लोगो दिया गया है।

विवरणः– इन कार्डों का उपयोग पॉकेट बोर्ड, फर्श पर रखकर अथवा फलालेन बोर्ड पर रखकर शिक्षक द्वारा कराया जाता है। बोलो भाई कितने एवं अन्य खेलों में अंकों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। इसमें 1 से 100 तक के अंक कार्ड बने हुए हैं। कार्ड के एक तरफ बण्डल से बनाये हुए चित्र द्वारा संख्या को प्रकट किया गया है।

4. चील कार्ड – घटाना

उद्देश्यः– सर्वप्रथम ठोस वस्तुओं के माध्यम से एवं बाद में बिना ठोस की सहायता से 1 से 100 तक अंकों को घटाने से संबंधित विविध प्रश्न जिसमें दैनिक जीवन की समस्याएँ सम्मिलित हैं का अभ्यास।

विवरणः– बच्चों में रूचि उत्पन्न करने हेतु विभिन्न सवालों को हल करने के लिए आकर्षक चित्रों को समाहित किया गया है। सवाल को सरल करने के लिए बंडल तीलियों का उपयोग किया गया है कक्षा पहली मे कार्डों की संख्या 6 है एवं कक्षा दूसरी में कार्डों की संख्या 9 है। यह कार्ड आंशिक शिक्षक समूह में रखा गया है सवालों को हन करने के लिए बंडल तीली के अलावा कंकड़, कंचे और अन्य ठोस सामग्री ले सकते है।

5. बया कार्ड – भाग

उद्देश्य :– बया लोगो भाग से संबंधित विभिन्न सवालों को ठोस वस्तुओं के माध्यम से एवं स्लेट पर हल करने का अभ्यास करना।

विवरण :– भाग से संबंधित सवालो को हल करने के लिए ठोस वस्तुओं से बार–बार घटाने की क्रिया का अभ्यास कराना। शिक्षक इसके अतिरिक्त और भी अभ्यास देकर हल करा सकते हैं। कक्षा 1ली में भाग से संबंधित कोई कार्ड नहीं है एवं कक्षा 2री में कार्ड संख्या 02 है। यह आंशिक शिक्षक समूह है। जिसमें बच्चे शिक्षक की सहायता से यह सवाल हल करेंगे। बार–बार घटाने की क्रिया के माध्यम से भाज्य संख्या में से भाजक को बार–बार घटाया जायेगा। इसे ठोस वस्तुओं के माध्यम से हल करवाएं।

6. तोता कार्ड (जोड़ना)

उद्देश्यः– सर्वप्रथम ठोस वस्तुओं के माध्यम से एवं बाद में बिना ठोस की सहायता से 1 से

100 तक अंकों को जोड़ने से संबंधित विविध प्रश्न जिसमें दैनिक जीवन की समस्याओं से संबंधित अभ्यास सम्मिलित हैं।

विवरणः– जोड़ से संबंधित अभ्यास कार्ड का लोगो तोता है। कक्षा में ठोस वस्तुओं जैसे – कंकड़, बीज, बंडल, तीली, और मिट्टी की गोलियों, नोट व सिक्कों की सहायता से जोड़ने की क्रिया को अच्छी तरह से समझाया जा सकता है। बच्चों में रूचि उत्पन्न करने हेतु आकर्षक चित्रों को समाहित किया गया है। कक्षा 1 में कार्डो की संख्या 12 है एवं कक्षा 2 में कार्डो की संख्या 11 है।

यह कार्ड सहपाठी समर्थित है। ठोस वस्तु को गिनकर बच्चे जोड़ने का अभ्यास करेंगे।

7. बगुला कार्ड – तुलना अंतर करने वाला

उद्देश्य :– इस कार्ड का उद्देश्य अंकों की तुलना एवं पहचान करना है।

विवरण :– इसमें कार्डों की संख्या कक्षा पहिली में 16 तथा कक्षा दूसरी में 03 है। इसमें अंकों को चित्रों के माध्यम से बतलाने का प्रयास किया गया है। तुलना हेतु हल्का एवं भारी वस्तुओं का प्रयोग किया गया है। छोटी एवं बड़ी संख्याओं की पहचान के लिए तीली बंडल का प्रयोग बताया गया है। ठोस वस्तु का प्रयोग भी किया जा सकता है।

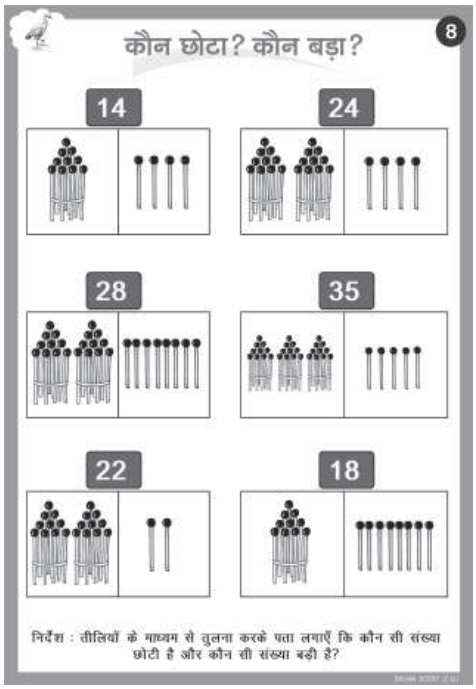

उपयोग विधि :– अंकों एवं वस्तुओं के बीच संबंध स्थापित करने के लिए रस्सी या धागे की सहायता ली जानी चाहिए। प्रश्न खण्ड के तरफ रस्सी रखें तथा रस्सी के दूसरे सिरे को उत्तर खण्ड से मिलान करें। यह सहपाठी समर्थित समूह है। अतः आनंददायी कार्य करके सीखेंगे।

8. कठफोड़वा कार्ड – गुणा

उद्देश्य :– गुणा से संबंधित विभिन्न सवालों को ठोस वस्तुओं के सहयोग से एवं स्लेट पर हल करने का अभ्यास करना।

विवरण :– गुणा से संबंधित प्रश्नों को हल करने के लिए ठोस वस्तुओं से बार–बार जोड़ने की क्रिया का अभ्यास कराना। शिक्षक इसके अतिरिक्त और भी अभ्यास देकर हल करा सकते हैं। कक्षा 1ली में कार्ड संख्या शून्य है एवं कक्षा 2री में 05 है। गुणा का सवाल कक्षा 2री से प्रारंभ किया गया है। गुणा का सवाल हल कराने से पहले पहाड़ा का पूर्ण अभ्यास होना चाहिए। यह सहयोगी समर्थित समूह है।

गुणा में पहले ठोस वस्तु के माध्यम से बार–बार जोड़ने की क्रिया कराएँ उसके बाद पहाड़े की सहायता से गुणा का अभ्यास करायें।

9. नीलकंठ कार्ड – स्थानीयमान/सम विषम संख्याएं

उद्देश्य :– स्थानीय मान एवं सम विषम संबंधी सवालों को ठोस वस्तुओं से एवं कापी या स्लेट पर लिखकर अभ्यास की गतिविधि कर सके।

विवरण :– सम विषम संख्या को दो–दो की जोड़ी बनाने एवं शेष बचने को खेल के माध्यम से सिखाया गया है। स्थानीय मान का अभ्यास गिनतारा एवं बंडल बांधकर कराया गया है। बाद में इस तरह के सवालों को लिखकर बनाने का अभ्यास कराया गया है। यह सहपाठी समर्थित समूह है। कक्षा 1ली में कार्ड संख्या 02 है एवं कक्षा 2री में कार्ड संख्या 04 है।

शिक्षक स्थानीय मान के प्रश्न को हल कराने के लिए गिनतारा का उपयोग करायें चित्र की स्थिति को गिनतारा में बतायें एवं स्थानीय मान का अभ्यास करायें।

10. फिशरकिंग – गिनना, समूह बनाना, पहाड़ा

उद्देश्य :– फिशरकिंग लोगो कार्ड में गिनना, समूह बनाना पहाड़ा निर्माण ठोस वस्तुओं के माध्यम से एवं 1 से 100 तक गिनती समूह बनाते हुए पहाड़े का अभ्यास करना।

विवरण :– 1 से 100 तक संख्याओं का विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अभ्यास करना। अंकों की पहचान, इकाई, दहाई की पहचान एवं बंडल बनाने की विधि का अभ्यास कराया गया है। कक्षा 1ली में कार्ड संख्या 20 है एवं कक्षा 2री में कार्ड संख्या 10 है। यह आंशिक सहपाठी समूह है। पहाड़ा बनाने एवं पढ़ने का अभ्यास कराया गया है। बार–बार ठोस वस्तुओं से जोड़ने की क्रिया से पहाड़ा का निर्माण करवाना। साथ–साथ पहाड़ा का निर्माण करवाना। साथ–साथ पहाड़ा बनाने के समय ठोस सामग्रियों को बच्चों द्वारा गिनवाया जाय जिससे बच्चों में गिनने का अभ्यास होगा। इसी प्रकार से और अभ्यास कराया जाय।

11. बतख कार्ड – अंदर का खेल

उद्देश्यः– गणित से संबंधित अवधारणा को कक्षा के अंदर विभिन्न खेल गतिविधियों के माध्यम से स्पष्ट करना एवं समझ विकसित करना।

विवरणः– इस लोगो में अंदर के खेल को रखा गया है। यह कार्ड आशिंक सहपाठी समर्थित समूह है। विभिन्न गतिविधयाँ शिक्षक के निर्देश के बाद मानीटर एवं बच्चों के द्वारा किया जाना है। बतख लोगो वाले कार्डों की संख्या कक्षा पहिली में 19 एवं कक्षा दूसरी में 6 है।

इसके अंतर्गत रेलगाड़ी के डिब्बों को क्रमबद्ध जोड़ना, पासा का खेल में गिनती का अभ्यास, इकाई दहाई का ज्ञान, पहाड़ा का निर्माण, जोड़ने घटाने के अभ्यास का कार्य दिया गया है। बिल्लस खेल के माध्यम से पहाड़ा निर्माण की गतिविधि दी गई है। कुछ खेल का उदाहरण निम्न अनुसार हैः–

सामग्री :– पासा जिसमें 0 से 6 तक अंक हो, खुली तीलियाँ , रबर बैण्ड।

यह खेल दहाई की जानकारी के लिए है। जिसमें बच्चे पासा फेंक कर तीली अपने पास रखेंगे यदि तीलियों की संख्या 10 से अधिक हो तो उसे बंडल बनाते जाएँगे। जो दहाई की अवधारणा को दर्शाता है।

12. चमगादड़ कार्ड – घटते बढते क्रम का अभ्यास

उद्देश्यः– चमगादड़ लोगो संख्याओं की सम्पूर्ण समझ उत्पन्न करने के लिए संख्याओं का विभिन्न तरह से घटते बढ़ते क्रम, छूटे हुए संख्या, छोटी–बड़ी संख्याएँ आदि का अभ्यास कर उससे संबंधित सवालों को हल कर सके।

विवरण :– संख्याओं को समझने के लिए घटते–बढ़ते क्रम, छोटी संख्या, बड़ी संख्या, छूटे हुए संख्या आदि का पहचान करने हेतु पर्याप्त अभ्यास दिया गया है। कक्षा पहली में कार्डों की संख्या 13 है, कक्षा दूसरी में 4 है। यह आंशिक सहपाठी समूह है, जिसमें बच्चे अपने सहपाठी के सहयोग से कार्य करेंगे।

चित्र में बंदर के पेड़ में चढ़ना को बढ़ते क्रम में पढ़ते जायेंगे एवं बंदर का पेड़ से उतरना घटते क्रम में पढ़ते जायेंगे।

13. तीतर कार्ड – अंकों एवं शब्दों में लिखने से संबंधित इबारती प्रश्न

उद्देश्यः– दैनिक जीवन संबंधित समस्याओं को उनके अनुभव से जोड़ते हुए गणितीय संक्रियाओं का उपयोग कर इबारती प्रश्नों को हल करने का अभ्यास कराना, साथ ही अंकों को शब्दों एवं शब्दों को अंकों मे लिखने का अभ्यास कराना।

विवरणः–गणितीय संक्रियाओं जोड़, घटाना, गुणा, भाग, की अवधारणा एवं अभ्यास की गतिविधि कर लेने के पश्चात् विभिन्न समस्यात्मक प्रश्न बच्चों से हल करवाना। पहले, प्रश्न को बच्चों से अच्छी तरह बार बार पढ़वाना एवं बाद में हल कराना चाहिए। वास्तविक में बच्चों को दैनिक जीवन में विभिन्न स्थानों में गणितीय समस्याओं से जूझना पडता है। अतः इन प्रश्नों के माध्यम से उनमें गणितीय समझ विकसित की जाती है। इस हेतु कक्षा दूसरी में इबारती प्रश्न का पर्याप्त अभ्यास कराया जाए। शिक्षक चाहे तो इसके अतिरिक्त और भी अभ्यास करा सकते हैं। कक्षा 1ली में 01 कार्ड एवं दूसरी में कार्डों की संख्या 06 है।

इसे आंशिक सहपाठी समूह में रखा गया है। शिक्षक इन प्रश्नों को हल कराते समय बच्चों से कई बार पढ़वाएं। बाद में ज्ञात एवं अज्ञात तथ्यों की जानकरी करायें। इसे गणितीय संक्रिया से जोड़ते हुए हल करवाने का प्रयास करें।

14. गौरैया – समय मापन

उद्देश्य :– गौरेया लोगो समय मापन के रूप में दिन, सप्ताह, महिनों एवं घड़ी के उपयोग कर सकने की क्षमता उत्पन्न करना।

विवरण :– इस लोगो के अंतर्गत घड़ी में समय देखना, सीखना, सप्ताह के दिनों के नाम, महिनों के नाम आदि का रोचक ढंग से अभ्यास कराया गया है, इसके लिए शिक्षक वास्तविक घड़ी अथवा घड़ी के मॉडल एवं कैलेण्डर का उपयोग कर सकते हैं। कक्षा 1ली में कार्ड संख्या 03 है एवं कक्षा 2री में कार्ड संख्या 04 है। यह आंशिक सहपाठी समूह है।

इस चक्र में माह के नाम दिवस एवं क्रम लिखे गये हैं। शिक्षक चाहे तो इस कार्ड का फोटो स्टेट करा कर दीवार में लगा सकते हैं। बच्चों को रोज अध्ययन करने के लिए बोल सकते हैं।

15. मैना कार्ड – लिखना

उद्देश्य :– कागज या स्लेट की पेंसिल को ठीक से पकड़ने की आदत डालते हुए लेखन

कौशल के लिए ऊंगलियों का विकास करना ताकि लेख कौशल का पूर्ण विकास हो।

विवरण :– चूंकि हिन्दी में लेखन कौशल का विकास चौथे माइल स्टोन से प्रारंभ किया गया है। अतः गणित में भी तीसरे, चौथे माइल स्टोन में पेंसिल पकड़ाने एवं चित्रों आदि पर रंग भरवाने, डाट लाइन पूरा करने का कार्य किया जावेगा। बाद में लेखन क्षमता का विकास करते हुए अंकों को संख्याओं एवं प्रश्नों को हल करने का अभ्यास कराया जावेगा। कक्षा 1ली में ऊंगली के कौशल के विकास के लिए इस लोगो में पर्याप्त अभ्यास दिया गया है। कक्षा 2री में लेखन हेतु अधिक अभ्यास है।

16. उल्लू – मापन

उद्देश्य :– विभिन्न प्रकार के मापन की अनुमान लगाने एवं बाद में निश्चयात्मक मापन कर सकने की क्षमता के साथ–साथ उनसे संबंधित सवालों को हल कर सकना।

विवरण :– बच्चे दैनिक जीवन में लम्बाई, निशान लगाना धारिता, वजन आदि के बारे में खेल–खेल में अनुमान लगाते रहते हैं। अतः उससे संबंधित बहुत से गतिविधियों का समावेश किया गया है। कक्षा 1ली में कार्ड संख्या 04 है एवं कक्षा 2री में कार्ड संख्या 03 है।

उपयोग विधि :– मापन संबंधी गतिविधि कराने से पहले शिक्षक ध्यान देंगे कि सामग्री बाल्टी, गिलास, तराजू, धारिता मापन के बर्तन आदि को सावधानी पूर्वक उपलब्ध करायें एवं पहली गतिविधि स्वयं करें। यह स्व अधिगम समूह है जिसमें बच्चे स्वयं कार्य करते हैं, यहाँ उदाहरण स्वरूप कार्ड 20 को देखें।

चित्र में दिए अनुसार बाल्टी में कितना मग पानी आयेगा। सभी बच्चे बारी–बारी से अनुमान लगायेंगे एवं अपने अनुमान को स्लेट या कापी में लिखेंगे। अब बच्चे बारी–बारी से एक–एक मग पानी बाल्टी में डालते जायेंगे। जब तक वह भर न जाए।

17. उड़ती चिड़िया कार्ड – मुद्रा

उद्देश्य :– मुद्रा सिक्का एवं विभिन्न मापों के नोटो की पहचान कराना तथा दैनिक जीवन में उपयोग कर पाना।

विवरण :– इस कार्ड में विभिन्न प्रचलित नोट एवं सिक्का के चित्र दर्शाए गए हैं। शिक्षक इसी प्रकार के नोटों एवं सिक्को का प्रत्यक्ष अवलोकन भी करा सकते हैं। साथ ही विभिन्न नोट

को जोड़ने घटाने का अभ्यास कराया जा सकता है। उड़ती चिड़ियाँ कार्डों की संख्या कक्षा 1ली में 02 एवं कक्षा 2री में 04 है। इसके अलावा सहायक सामग्री के रूप में विभिन्न नोटों एवं सिक्कों के कार्ड का संग्रह शालाओं को दी जा रही है।

उपयोग विधि :– सहायक सामग्री में नकली नोटों का बंडल दिया गया है। उन नोटों से परिचय के बाद, नोटों को जोड़ने–घटाने का मौखिक अभ्यास दिया जायेगा। इसके पश्चात् लिखित अभ्यास करायें। 1 से 100 तक के ही नोटों का ही परिचय कराया गया है।

18. सारस कार्ड – ज्यामितीय आकृति

उद्देश्य :– विभिन्न प्रकार की आकृति की पहचान ठोस वस्तु के माध्यम से कराना तथा आसपास की विभिन्न आकृतियों से परिचय कराना।

विवरण :– अपने आसपास पाये जाने वाले विभिन्न आकार की वस्तुओं जैसे चूड़ी, सिक्का, टायर, पराठा, समोसा, टेबल, खिड़की, दरवाजा आदि के माध्यम से गोला, त्रिभूज, आयत, वर्ग से परिचय कराया जाना है। इसके अंतर्गत कार्डों की संख्या कक्षा 1ली में 03 एवं कक्षा 2री में 05 है।

उपयोग विधि :– सारस लोगो स्व–अधिगम समूह में रखा गया है जिसमें बच्चे शिक्षक के निर्देशानुसार विभिन्न कीट सामग्री से सामग्री निकालकर उनके नाम से परिचित होंगे। छात्रों को एक ही आकार की तीलियाँ देकर उनकी सहायता से त्रिभूज, वर्ग, आयत आदि बनाने का अभ्यास करायें जावें। छात्र विभिन्न आकृति वाले वस्तु को कापी या जमीन श्यामपट पर रखकर खाका खींचकर आकृति बनाएंगे और उनका नाम भी बतायेंगे।

बच्चों द्वारा बनाए गए आकृतियों में जैसे त्रिभूज के माध्यम से उनके तीन कोण, तीन भुजाएं आदि से शिक्षक परिचित करावें इसी प्रकार आयत एवं वर्ग के विषय में भी परिचित करावें।

19. मोर कार्ड – मूल्यांकन

उद्देश्यः– सीखी हुई विषयवस्तु का परीक्षण करना ।

विवरणः– प्रत्येक माइल स्टोन से संबंधित कार्डों पर क्रमवार गतिविधि कर लेने के पश्चात् अंत में मूल्यांकन कार्ड बच्चे को दिया जाता हैं। पूरे माइल स्टोन में सीखे गये उद्देश्यों का

भिन्न परिस्थिति में मूल्यांकन किया जाता है। इस कार्ड को लेकर बच्चे अलग से मूल्यांकन समूह में बैठता है। मूल्यांकन लेते समय शिक्षक को चाहिए कि वह रोचक ढ़ंग से खेल विधि में मूल्यांकन करें। बच्चें को परीक्षा देने का भय न हो। मूल्यांकन के प्रश्नों को अलग कार्ड में लिखकर या श्यामपट पर करायें । शिक्षक अच्छी तरह से संतुष्ट हो जायें। तभी वह अगले माइल स्टोन में जाएगा। कक्षा एक में कुल 14 और कक्षा 2 में 13 मूल्यांकन कार्ड हैं।

कक्षा पहली के 13 वें माइल स्टोन का मूल्यांकन कार्ड का उदाहरण इस प्रकार हैः–

कार्ड में दिये गये प्रश्नों को बच्चे हल करेंगे। शिक्षक सही जाँच करेंगे। मूल्यांकन कार्ड पर बच्चे नहीं लिखेंगे, बल्कि शिक्षक चाहे तो फोटो कापी करवाकर दे सकते हैं। अथवा भू – श्यामपट पर या उनकी कापी पर प्रश्न दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त आवश्यकता अनुसार अन्य प्रश्न दें सकते है। मूल्यांकन में यदि बच्चा सफल हो जाते हैं तब शिक्षक मूल्यांकन शीट मे दिनांक और निशान लगायेंगे।

20. गिद्ध कार्ड – मध्य एवं अंतिम मूल्यांकन

उद्देश्य :– बच्चों का स्पायरल लर्निंग कराना।

विवरण :– गिद्ध लोगो की संख्या कक्षा पहिली में 2 व कक्षा दूसरी में 2 है। इसे कक्षा के मध्य तथा अंतिम मूल्यांकन हेतु रखा गया है। मध्य एवं अंतिम माइल स्टोन पार करने के बाद यह ज्ञात किया जाता है कि बच्चे का अर्जित ज्ञान स्थायी है अथवा नहीं। अर्जित ज्ञान स्थायी न होने की स्थिति में शिक्षक इसकी जानकारी रख सकें व स्थायी ज्ञान हेतु रणनीति बनाकर स्पायरल लर्निंग करा सके। कक्षा पहिली में गिद्ध 1 माइल स्टोन 8 पर, गिद्ध 2 माइल स्टोन 14 पर है। इसी तरह कक्षा दूसरी में गिद्ध 1 माइल स्टोन 22 पर तथा गिद्ध 2 माइल स्टोन 27 पर रखा गया है।

21. *हंस कार्ड* – उपचारात्मक

उद्देश्यः– मूल्यांकन पश्चात् असफल होने वाले बिन्दुओ पर पुनः सरल गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण कराना उपचारात्मक शिक्षण का उददेश्य है ।

विवरणः– उपचारात्मक शिक्षणकार्ड पर सिर्फ वे बच्चे गतिविधि करेंगे जो मूल्यांकन में सफल नहीं हो पाते या किसी कारणवश यदि शिक्षक बच्चों के मूल्यांकन से संतुष्ट नहीं होता तब वह

उस बच्चे को उपचारात्मक कार्ड गतिविधि कराता है। उपचारात्मक कार्ड में उस माइल स्टोन में कठिन अंकों को लेकर सरल गतिविधि बनाने का प्रयास किया गया है कुछ कार्ड खाली छोड़े गये हैं फिर भी शिक्षक उस बच्चे की आवश्यकता के अनुरूप गतिविधि में परिवर्तन कर सकते हैं अथवा और अन्य गतिविधि कर सकते हैं। उपचारात्मक शिक्षण करा लेने के पश्चात् पुनः उसको मूल्यांकन कार्ड दिया जाएगा। यदि उसमें सफल होता है तब उसे अगले माइल स्टोन में भेजा जाएगा। एक उपचारात्मक शिक्षण की गतिविधि प्रस्तुत है।

गणितीय आकृति को सरल रूप से प्रस्तुत करना, चित्र शब्द की मिलान की रेलगाड़ी है जिसंके माध्यम से बच्चे गतिविधि कर अपना उद्देश्य को पूर्ण करेंगे।

विषय– अंग्रेजी

1. Radio - कविता / कहानी

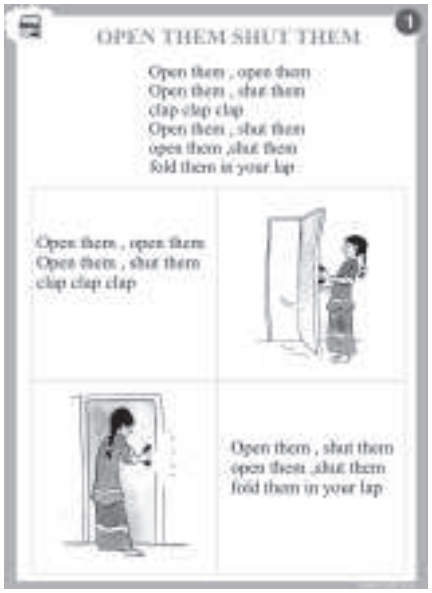

उद्देश्य :– रेडियो लोगो अंग्रेजी विषय में कविता को सुनना, दोहराना एवं कविता के कुछ शब्दों को जानना।

विवरण :– इन कार्डों में कुछ परिवेशीय वस्तु व क्रियाकलापों को कविता के माध्यम से जानकारी देने का प्रयास किया गया है। जैसे – One, Two, I like, Going to School, How Many, I Love Colours इत्यादि। इन कविताओं के माध्यम से कुछ शब्द का उच्चारण कर सकेगा।

उपयोग :–

I Like eating Banana,

She Likes eating Mangoes.

I Like eating apples,

He Likes eating Coconuts,

We Like eating Fruits.

इस कविता को शिक्षक हावभाव के साथ बोलेंगे व बच्चे सुनकर दोहराएंगे। इस कविता

में आये हुए शब्द को बच्चे जानते हैं, तो यह इसकी उपलब्धि होगी और नहीं जानते है तो इसके अगली गतिविधियों का अभ्यास कर सीखेंगे।

2. Fan

उद्देश्य :– बच्चों को स्वस्फूर्त बनाने व गतिविधि में सक्रिय भागीदारी बनाना तथा बच्चों को विषयवस्तु के लिए प्रयुक्त सामग्री का परिचय कराना।

विवरण :– अंग्रेजी विषय के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधि ा का निर्माण तथा उक्त गतिविधि के सफल निष्पादन करने के लिए व्यवस्थित कक्षा प्रबंधन के लिए 18 लोगो का परिचय कार्डों का परिचय लेडर में आगे पढ़ने का क्रम बैठक व्यवस्था एवं अन्य सामग्री का उपयोग रखरखाव हेतु आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया गया है।

3. Heater- वर्ण की अवधारणा

उद्देश्य :– वर्णों की अवधारणा स्पष्ट करना।

विवरण :– हीटर कार्डों में वर्णों की अवधारणा स्पष्ट करने हेतु सभी वर्णों को लेकर चित्र व उससे बने शब्द दिये गये जिसे बच्चे चित्र को देखकर पढ़ेंगे उसके बाद उस शब्द का अंग्रेजी नाम जानेंगे जैसे–

A	Apple
B	Bat
C	Car

4.Camera- क्रियात्मक गतिविधि

उद्देश्य :– Camera लोगो में शब्दों के माध्यम से अभ्यास कराया गया है।

विवरण :– इन कार्डो में अंग्रेजी क्रिया शब्द के माध्यम से कार्य कराया गया है। जैसे – Comeing में अंदर आना, Out में बाहर जाना, Eat खाने का, Play खेलना इत्यादि इसी क्रम में, Big, Small, Hot, Cold, Dancing की क्रियाओं का अभ्यास कराया गया है।

उपयोग :– उपरोक्त गतिविधि कराने हेतु Come, Go Out, Playing, Dancing इत्यादि के माध्यम से गतिविधि करायें तथा Thin, Fat, Shart, Tall की जानकारी वस्तुओं के माध्यम से देवें।

5. Computer- संख्यात्मक जानकारी

उद्देश्य :– अंग्रेजी में गिनती से संबंधित संख्या व अंकों को सीखाना।

विवरण :– इस कार्ड में बच्चों को गिनती से संबंधित विषयवस्तु के माध्यम से सिखने–सीखाने के लिए अभ्यास दिया गया है। इस कार्ड में अंक पहचान के साथ–साथ उच्चारण हेतु One, Two .... आदि शब्दों में भी बताने का प्रयास किया गया है।

6. T. V.- शब्द चित्र कार्ड

उद्देश्य :– चित्रों के माध्यम से शब्दों की पहचान करना।

विवरण :– परिवेशीय वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के नाम से बच्चों को परिचित कराने हेतु चित्र शब्द कार्ड तैयार किये गये हैं। जिसमें कार्ड के सामने की ओर चित्र व उनका नाम तथा पीछे नाम दिए गए हैं। छोटे–छोटे कार्ड हैं, जिसमें वर्णमाला के क्रमानुसार वर्ण रखे गये हैं।

जैसे :–

Front Print

Back Print

7. Mixy- पासा खेल

उद्देश्य :– Mixy logo खेल कार्ड के माध्यम से बच्चों में mile stone में आए कठिन शब्दों की पहचान कराना।

विवरणः– खेलों में बच्चे अधिक रूचि लेते हैं इस लिये इन logo कार्ड में बच्चों को खेल के माध्यम से रंगों की, अंगों की व अन्य वस्तुओं की पहचान कराया गया है। यह कार्य mile stone के पाठ्य वस्तु पर अंकित है। जिस शब्द या अक्षर का अभ्यास पूर्व में कराया गया है। उसी अक्षर एवं शब्द के अनुरूप लूडो एवं चौसर का निर्माण किया गया है। इसके माध्यम से पुनः अभ्यास होगा। और बच्चों की दक्षता अधिक पुष्ट होगी।

8. Bulb - परिचयात्मक खेल

उद्देश्य :– Bulb Logo कार्ड में मनोरंजक खेल के माध्यम से अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त

सरल Adjective (विशेषण) को समझ पाना।

विवरण :– इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सभी माइल स्टोन में खेल के रूप में गतिविधि तैयार किया गया है। इसमें Big-Small, Fat-Thin, Cold-Hot, Toll-Shot आदि का पहचान चित्र, शब्द चित्र, तुलनात्मक चित्र व चित्रों के माध्यम से समझ बनाने का प्रयास किया गया है।

9.Telephone - संवाद अभिनय वर्णन

उद्देश्य :– Telephone logo यह कार्ड बच्चों के व्यवहारिक संवाद को अंग्रेजी भाषा में प्रयोग करने में सक्षम बनाना तथा सतत् प्रयोग में लाने की प्रक्रिया में जोड़ना।

विवरण :– उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बच्चों को आकर्षक कार्ड के साथ गतिविधि की क्रियात्मक चित्र के साथ समझ बनाने का प्रयास किया गया है। इन कार्डों में अभिनय खेल के रूप में May I Come in Please, Answer- yes you can का प्रयोग टेलीफोन, मोबाईल के माध्यम से संवाद को जानना। How Many, How are you इत्यादि के माध्यम से सरल वाक्यों को समझाने का प्रयास किया गया है।

10. Mobile - खेल– खेलना

उद्देश्य :– Mobile Logo कार्ड खेल गतिविधि पर आधारित है।

विवरण :– मोबाइल लोगो कार्ड माइल स्टोन से संबंधित कुछ शब्दों का खेल के माध्यम से अभ्यास कराया गया है। जैसे – Yes- No, Hello, What is this, Which Colours इत्यादि खेल हैं। इन सब खेलों से आये हुए शब्दों का अभ्यास करेंगे। एक खेल का उदाहरण स्वरूप है। YES OR NO

इस खेल में बिल्लस खेलने का लाइन खींचा रहेगा। एक बच्चे के आँख में पट्टी बंधी रहेगी और वह बच्चा बिल्लस खेलने की लाइन के बाहर खड़ा रहेगा। खेल प्रारंभ करेगा, खेल प्रारंभ कर वह बिल्लस खेल के घर में पैर रखते जाएगा और Yes या No की बोलते जायेंगे। बाकि बच्चे घर पर पैर रखने पर Yes व बिल्लस खेल के खींचे हुए लाइन पर पैर रखने से No बोलेंगे।

Cooler - लिखना

उद्देश्य :– Cooler कार्ड का उपयोग बच्चो की लेखन क्षमता का विकास करना है.

विवरण :– लेखन क्षमता का विकास हेतु गिनती एवं वर्ण को लिये गये है ।

जैसे :– 1,2,3,4 ..... A, B, C,D ..... आदि । इसी प्रकार

अक्षर गिनती का अभ्यास हेतु विभिन्न आकृतियाँ एवं अन्य सहायक सामग्री को लिया गया है।

11. Freeze- शब्द अक्षर कार्ड जमाना

उद्देश्यः– freeze logo वाले कार्डो का उद्देश्य शब्द अक्षरों को छपे हुए वर्णों में क्रमशः व्यवस्थित करना है।

विवरणः– रबर कार्ड के माध्यम से अंग्रेजी वर्ण माला के अक्षरों को वर्णो में लिखे हुए शब्दों के ऊपर व्यवस्थित क्रम में जमाना है। इसके लिये आकर्षक बस का चित्र बनाया गया है। जैसे :– mile stone 7 से apple के ऊपर रबर कार्डों को क्रमशः रखना है। इसी प्रकार से अन्य शब्दों के ऊपर भी कार्डों को बच्चे रखते जाएगें।

12. Tube Lite- बिन्दु मिलाओ रंग भरो

उद्देश्य :– बच्चों को लेखन गतिविधि में तैयार करना ऊंगली के कौशल का विकास .करना अंग्रेजी भाषा के अक्षरों को लिखने के लिए प्रेरित करना।

विवरण :– इन कार्डों में बिन्दु मिलाना लिखने का अभ्यास करना व चित्र बनाना का कार्य दिया गया है जिससे बच्चों को लिखने में सहज सरलता होगी। बिन्दु मिलाने में सरल अभ्यास बनाने का प्रयास किया गया है। शिक्षक सरलतम विधि का प्रयोग भी बच्चों के हस्त कौशल विकास के लिए कर सकते हैं।

13. Cooler

उद्देश्य :– Coller कार्ड का उपयोग बच्चों की लेखन क्षमता का विकास करना है

विवरण :– लेखन क्षमता का विकास हेतु गिनती एवं वर्ण लिये गये हैं ।

जैसे :– 1,2,3,4 ..... A, B, C,D ..... आदि । इसी प्रकार अक्षर गिनती का अभ्यास हेतु विभिन्न आकृतियाँ एवं अन्य सहायक सामग्री को लिया गया है।

14. Mike- वर्ण कार्ड, छोटे बड़े अक्षर

उद्देश्य :– अंग्रेजी के वर्णमाला को छोटे बड़े रूप में पहचानना पढ़ना व लिखने का अभ्यास कराना।

विवरण :– इन कार्डों को छोटे–छोटे वर्ण कार्ड के रूप में लिया गया है। प्रत्येक अक्षर के लिए अलग–अलग कार्ड बनाया गया है। जिसका उपयोग कर बच्चे वर्ण की पहचान, पढ़ना, लिखना, सीखेंगे एवं अपना मूल्यांकन करेंगे।

15. Table lamp- मूल्यांकन कार्ड

उद्देश्य :– टेबल लैम्प का उद्देश्य प्रत्येक माइल स्टोन के गतिविधियाँ पूरी करने पश्चात् स्वमूल्यांकन करना है।

विवरणः– लैम्प लोगो वाले कार्ड बच्चों के सीखे हुए क्रियाकलापों की जाँच करने हेतु बनाये गए है।। बच्चों के स्वमूल्यांकन हेतु उनके स्तर को ध्यान में रखते हुए शब्द एवं चित्र की जोड़ी बनवाया गया है। इसमें रंगों के नाम और संबंधित रंग के चित्र बनाया गया है रंगो के आध ाार पर बच्चे जोड़ी मिलान करेंगे।

16. Antina- उपचारात्मक

उद्देश्य :– Antina logo कार्ड में कमजोर बच्चों के लिए तथा धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए विशेष सुविधा प्रदान करता है।

विवरण :– कुछ बच्चे धीमी गति से सीखने वाले होते हैं, अतः वे सामान्य बच्चों की अपेक्षा पीछे हो जाते हैं या सीख नहीं पाते। ऐसे बच्चों के लिए जो माइल स्टोन के मूल्यांकन कार्ड को पूरा नहीं कर पाते, उपचारात्मक शिक्षण कार्ड रखा गया है, जिसमें शिक्षक बच्चों के स्तर अनुरूप गतिविधि तैयार कर बच्चों को माइल स्टोन पूरा करायेंगे। प्रत्येक माइल स्टोन में यह लोगो कार्ड मूल्यांकन कार्ड के बाद रखा गया है।

17. Electric Iron

छमाही/वार्षिक परीक्षा

18. Robbot (रीडर्स)

विषय –पर्यावरण

1. आम कार्ड – सर्वेक्षण

उद्देश्य :– पर्यावरण का अध्ययन बच्चे परिवेश में जाकर स्वयं अवलोकन कर जानकारी एकत्रित करेंगे।

विवरण :– पर्यावरण विषय से संबंधित अध्ययन के लिए कुल 28 माइल स्टोन हैं। जिसमें कुल 23 सर्वेक्षण कार्ड हैं। सर्वेक्षण कार्ड हेतु आम लोगो दिया गया है। 10 सर्वेक्षण कार्ड कक्षा के बाहर परिवेश से संबंधित है। जैसे हमारे पशु, पेड़–पौधे, यातायात के साधन आदि। उदाहरणार्थ माइल स्टोन 09 में हमारे पशु का सर्वेक्षण कार्ड

शिक्षक सर्वे में भेजने से पहले 3–4 कार्ड का प्रारूप बनाकर रखेंगे व बच्चों को 3–4 समूह में बांटकर कार्ड को देकर सर्वेक्षण करने भेजेंगे। बच्चे स्कूल से बाहर जाकर जिस परिवार में जायेंगे। उस परिवार के सदस्य बच्चों को कॉलम पूरा करने में मदद करेंगे। यदि उस घर कॉलम में दिए गए पशु उपलब्ध हों, तो उसमें सही का निशान एवं नहीं है तो उसमें निशान नहीं लगायेंगे इसी प्रकार से अन्य सर्वे कार्ड पूरा करेंगे।

कुछ सर्वे कार्ड को शाला के अन्दर पूर्ण कराएंगे जैसे – शरीर की सफाई, जल के स्त्रोत, सजीव निर्जीव आदि। कक्षा के अंदर सर्वे कार्ड जैसे– शरीर की सफाई माइल स्टोन–3 में है।

इस सर्वे कार्ड के अनुसार प्रत्येक साथियों का निम्न बिन्दुओं पर अवलोकन करेंगे। जैसे –कपड़े, कान, बाल, नाखून आदि स्वच्छ होने पर सही का निशान लगायेंगे।

2. अनार कार्ड – संकलन/वर्गीकरण

उद्देश्य :– बच्चों द्वारा संकलित परिवेशीय वस्तुओं को उसके रंग, रूप, रहन, सहन, एवं गुणों के आधार पर वर्गीकृत कर समूहीकरण करने के कौशल का विकास करना।

विवरण :– बच्चे सर्वे कार्ड के माध्यम से विभिन्न सूचनाओं एवं वस्तुओं को एकत्रित करते हैं। इन सूचनाओं एवं एकत्रित वस्तुओं को बच्चे शिक्षक के मार्गदर्शन से विभिन्न आधार में अलग–अलग समूहों में वर्गीकृत करेंगे। सर्वे कर समूहीकरण करने पर बच्चों को बहुत मजा आता है। इस तरह विभिन प्रकार के वस्तुओं का विश्लेषण कर पर्यावरण का ज्ञान कराया जा सकता है। पूरे माइल स्टोन में 7 अनार कार्ड हैं।

उपयोग विधि :– अनार कार्ड का उपयोग के लिए आम सर्वेक्षण कार्ड का अध्ययन पहले करेंगे। सर्वेक्षण के बाद सर्वेक्षित वस्तुओं को वर्गीकृत अनार कार्ड में किया गया है। जैसे– माइल स्टोन – 16 यातायात के साधन चूंकि यातायात के साधन का सर्वे बच्चे किये हुए है। जिसमें आसपास पाये जाने वाले एवं नहीं पाये जाने वाले साधन का चित्र एवं नाम मिलेगा। इसी को अनार कार्ड में जमीन में चलने वाले, हवा में उड़ने वाले और पानी में चलने वाले साधन का वर्गीकरण करना है।

आवश्यक सामग्री :– प्रत्यक्ष वस्तु का अवलोकन करायें। जैसे– खिलौना मॉडल उपलब्ध न होने पर चित्र कार्ड का उपयोग करें।

विधि :– आम लोगो कार्ड से बच्चे सर्वे कर यातायात के साधन के बारे में विभिन्न सूचना एकत्रित कर लाते हैं। यहाँ पर उनका समूहीकरण किया जायेगा यातायात के साधन का मॉडल या चित्र कार्ड को जमीन पर चलने वाले, हवा में उड़ने वाले साधन और पानी में चलने वाले साधन का अलग–अलग समूह बनायेंगे। शिक्षक इसे अलग–अलग आधार लेकर समूहीकरण करा सकते हैं।

3. नारियल कार्ड – कहानी कविता

उद्देश्य :– कहानी एवं कविता के माध्यम से निर्धारित विषय वस्तु को सीखने में रूचि उत्पन्न करना।

उपयोग विधि :– नारियल लोगो कविता एवं कहानी कार्ड है। पर्यावरण विषय को रूचिकर एवं मनोरंजक बनाने हेतु पर्यावरण से संबंधित कविता एवं कहानी समाहित है। जो कि दिए गए उद्देश्यों को पूर्ण करता है। नारियल लोगो वाले कार्डों की संख्या 27 हैं। कविता और कहानी की रचना बच्चों के स्तर के अनुरूप है। इसके माध्यम से माइल स्टोन में निहित बातों को चित्रों, परिवेशीय वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कहानियों में – हाथी का झूला, हमारी धरती, जल–चक्र, फूलवती, दो बंदर, मकान की आवश्यकता, यातायात के साधन, शिष्ट व्यवहार की कहानी, पेड़–पौधे की कहानी, पानी एवं उनका उपयोग, भालू। कवितायें – रिमझिम पानी, ध्वज, जल चक्र, निराली पाठशाला, फुग्गा, कीड़े–मकोड़े, शिष्ट व्यवहार की कविता, खेल गीत, गाय हमारी माता है आदि हैं।

उपयोग विधि :– इस कार्ड में आने वाले बच्चों को शिक्षक हाव–भाव से कविता, कहानी सुनाएंगे, सहायक कार्डो आदि का प्रयोग करेंगे, व सुनाने के बाद उद्देश्य से संबंधित सरल प्रश्न पूछेंगे। बच्चे कविता को उत्साह पूर्वक गा–गा कर सुनाएंगे।

उदाहरण – माइल स्टोन 10 में आसपास की पक्षियों की कविता दी गई है।

टीप – रंग बिरंगी प्यारी चिड़िया,

सुन्दर–सुन्दर न्यारी चिड़िया।

उड़ती क्यारी–क्यारी चिड़िया,

लगती बड़ी दुलारी चिड़िया।

इस कविता को सुनाने के लिए चित्र में दिए पक्षियों के कार्ड एवं मुखौटे उपलब्ध कराएँ एवं बच्चों को मुखौटे लगवाकर पक्षियों की पहचान करते हुए कविता हावभाव से गायेंगे एवं अभिनय करेंगे।

इस कविता का उद्देश्य आसपास पक्षियों के बारे में गीत के माध्यम से ज्ञान प्रदान करना है।

4. केला कार्ड – चर्चा के लिये

उद्देश्य :– शाला में उपलब्ध चित्र तथा बच्चों के द्वारा किए गए सर्वे के आधार पर एकत्रित सूचनाओं की जानकारियों को चर्चा के माध्यम से प्रमाणित करते हुए छात्रों को पर्यावरण के संबंध में जानकारी देना।

विवरण :– केला लोगो वाला कुल कार्डों की संख्या 33 है। शिक्षक–छात्र चर्चा हेतु कार्ड में केला लोगो दिया गया है। केला कार्ड में एक ओर चर्चा हेतु चित्र एवं दूसरी ओर चर्चा के बिन्दु या चर्चा के प्रश्न रखे गये हैं। चर्चा कार्ड में सामने पृष्ठ में उद्देश्य से संबंधित चित्र एवं पीछे पृष्ठ में उससे संबंधित प्रश्न छपे हुए हैं इन प्रश्नों के माध्यम से शिक्षक चर्चा करायेंगे। चर्चा कार्ड के रूप में स्थानीय मेला, मेला का चित्र, सार्वजनिक स्थान, मौसम और कपड़े, सजीव निर्जीव, राष्ट्रीय ध्वज, विभिन्न फसले, धरती के सजीव, पाठशाला, कामगार, कीड़े–मकोड़े विभिन्न रंगों के चित्र, आवास स्थान, यातायात के साधन पेड़–पौधे, जल स्त्रोत आदि अनेक प्रकार के चित्र हैं।

उपयोग विधि :– चर्चा कार्ड का उपयोग करने से पहले अध्यापक को दिए गए सभी प्रश्नों का पढ़कर अच्छी तरह समझकर लेना चाहिए। अध्यापक छात्रों को अपने आसपास बिठाने के बाद विषय वस्तु से संबंधित कार्ड को व्यवस्थित रूप से रखना चाहिए चित्र वाला हिस्सा बच्चों के सामने तथा प्रश्न वाला हिस्सा स्वयं अध्यापक के सामने रहे। सबसे पहले चर्चा से संबंधित प्रश्न पूछकर छात्रों को उत्तर सोचने का समय देना चाहिए। बाद में किसी एक छात्र से प्रश्न पूछना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक छात्र से प्रश्न पूछकर उत्तर देने का अवसर देना चाहिए।

चर्चा के दौरान बहु उत्तर वाले प्रश्न पूछकर बच्चों में उत्तर देने की क्षमता का विकास करना चाहिए। यदि छात्र स्वयं उत्तर देने में असमर्थ है, तो शिक्षक उत्तर देने में सहयोग करें।

छात्रों को अपने आप प्रश्नों का निर्माण कर प्रश्न पूछने का अवसर देना चाहिए। इससे छात्रों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा एवं विचार अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा।

जैसे – माइल स्टोन – 19 हमारे काम धंधे

उपरोक्त विवरण के आधार पर शिक्षक चित्र देखकर प्रश्न करें। इन प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को प्राप्त जानकारी अधिक पुष्ट हो जावेगी।

5. सीताफल कार्ड – अभिनय

उद्देश्य :– बच्चों में अभिनय करने की क्षमता का विकास करना एवं अभिनय के माध्यम से वर्णन एवं विचारों को व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

विवरण :– सीताफल कार्ड को अभिनय कार्ड के रूप में विकसित किया गया है। विभिन्न गतिविधियों के अभिनय हेतु 265 छोटा कार्ड बनाया गया है।

उपयोग विधि :– अभिनय कार्ड सामने रखा रहेगा। प्रत्येक बच्चे बारी–बारी से कार्ड उठायेंगे। कार्ड को देखकर उससे संबंधित अभिनय करेंगे। बच्चे उस अभिनय को देखकर परिवेश से संबंध जोड़ेंगे। जैसे – नहाता हुआ बालक बच्चे इस कार्ड को उठाएंगे और अपने साथियों के सामने नहाने कर अभिनय करेंगे। अभिनय को अन्य बच्चे देखेंगे और अपना विचार व्यक्त करेंगे। शिक्षक ध्यान देंगे कि अभिनय कार्ड के अनुरूप है या नहीं। यदि अभिनय कार्ड के अनुरूप न हो तो दूसरे, तीसरे, चौथे.....बच्चे को क्रमशः अवसर देवें फिर भी अभिनय अनुरूप न हो तो शिक्षक स्वयं अभिनय कर बतायेंगे।

इस विधि से बच्चों में अनुकरण करने की कला, आवाज निकालने की क्षमता का विकास होगा। व्यवसाय से संबंधित लोगों का भी अभिनय का समावेश किया गया है। जैसे मेला में सब्जी बेचना, खिलौने बेचना, गुब्बारे बेचना आदि का विवरण है। माइल स्टोन– 26 में शब्द चित्र दिया हुआ है जिसकी संख्या 1 से 10 है इसमें पेन से लिखने पुस्तक से पढ़ने का, चश्मा से लगाने का, कुत्ता से भौंकने की आवाज, मोबाईल से सुनने का अभिनय यथा संभव करायी जावें।

6. अंगूर – अभ्यास कार्ड

उद्देश्य :– अंगूर लोगो कार्ड अभ्यास के माध्यम से सीखे हुए ज्ञान का पुनर्वलन करना। दो वस्तुओं की अलग–अलग तुलना कर समानता एवं असमानता का निर्णय कर सकने की क्षमता विकसित करना।

विवरण :– बच्चों में एक दूसरे की तुलना करने की प्रवृत्ति होती है वे एक दूसरे की वस्तुओं का कम या अधिक, अच्छा या खराब, छोटा या बड़ा आदि दृष्टि से तुलना करते रहते हैं। इनके इस गुण का उपयोग करते हुए पर्यावरण में सीखे हुए ज्ञान को अधिक पुष्ट करने की दृष्टि से तुलनात्मक गतिविधि तैयार किया गया है। जिसमें बच्चे दो समान चित्रों का मिलान, कार्य एवं कार्य करने वाले के बीच में मिलान, मानव अंग एवं उसके कार्य पशु–पक्षियों के आधार पर मिलान इत्यादि करेंगे।

उपयोग विधि :– अंगूर कार्ड पर गतिविधि करते समय शिक्षक ध्यान देंगे कि उनमें लगे हुए रस्सी के आधार पर मिलान करायें। यदि रस्सी नहीं लगी है तो कार्ड देखकर अलग–अलग रंगों के बटन का उपयोग करें तथा Work book में पेन्सिल से जोड़ी मिलाएंगे।

उदाहरण स्वरूप :– माइल स्टोन– 23 में हमारी फसलें जोड़ी बनाओं का अभ्यास की विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

बच्चे कार्ड लेकर समूह में बैठेंगे। चित्र एवं शब्दों के सामने छोटे–छोटे छेद बने हुए है। बच्चों को छोटे–छोटे रस्सी प्रदान करें। बच्चे उस रस्सी में एक सिरे को कपास के चित्र वाले तरफ लगाएं एवं दूसरे सिरे को कपास लिखे छेद में लगाये, इस तरह गेहूँ के चित्र को गेहूँ के शब्द से। धान के चित्र को धान शब्द से मिलान करेंगे। शिक्षक इस अभ्यास को प्रत्यक्ष रूप में भी करा सकते हैं। जैसे एक बच्चे के पास गन्ना का चित्र कार्ड होगा तो दूसरे बच्चे के पास

गन्ना शब्द का चित्र कार्ड होगा दोनों बच्चे एक जगह खड़े हो जायेंगे। इस तरह यह खेल चलते रहेगा।

7. सेव कार्ड – कक्षा कक्ष का खेल

उद्देश्य :– कक्षा के अंदर खेले जाने वाले विभिन्न खेलों के माध्यम से पर्यावरणीय जानकारी एवं घटनाओं का ज्ञान कराना, बच्चों की कल्पना शक्ति एवं तर्कशक्ति का विकास करना।

विवरण :– खेल खेलना बच्चों को सबसे अधिक रूचिकर लगता है। खेल में बड़ा मजा आता है अतः खेल–खेल में पर्यावरण के विभिन्न घटकों का ज्ञान कराया जा सकता है। प्रत्येक माइल स्टोन में कक्षा गत खेल की व्यवस्था की गई है। इसमें पासे का खेल साँप सीढ़ी, चित्र रेलगाड़ी, उड़, खा, पी, चल, खेल, फीकी–फीकी व्हाइट कलर, नमस्ते का खेल, रास्ता ढूंढो, घोड़ा है बादाम खा आदि खेल समाहित है।

उपयोग विधि :– विविध कक्षागत खेलों को कराने से पहले शिक्षक उससे संबंधित सभी सामग्री जैसे – साँप, सीढ़ी, पासा, बटन, कंकड़ आदि आवश्यकतानुसार एकत्रित कर लें। खेल से संबंधित सारे नियम का निर्देश बच्चों को स्पष्ट रूप से दे। शिक्षक खेल का प्रारंभ करवायें। उसके बाद बच्चे खेल को खेलेंगे। यह ध्यान दें कि सभी बच्चों को अवसर मिल रहा है कि नहीं। उदाहरण स्वरूप माइल स्टोन 02 शरीर के अंग।

आवश्यक सामग्री :–

1. शरीर के अंगों का सचित्र कार्ड।
2. पासा जिसके सभी खानों में शरीर के अंग का सचित्र बना हो।
3. अलग–अलग रंगों के बटन हों।

खेल के नियम –

1. बच्चे पासा फेकेंगे। जो चित्र ऊपर आयेगा उसके नाम का उच्चारण कर उस चित्र के बारे में एक वाक्य बोलेंगे। यदि वाक्य नहीं बोल सके, तो अंग का ही नाम बोलेंगे।
2. उस चित्र में अपना बटन रखेंगे। इसी तरह सभी बच्चे अपना–अपना पासा

फेंककर चार्ट में बटन रखते जायेंगे।

3. अंतिम में जब सभी चित्रों में बटन हो जायेगा। तब बच्चे अपना–अपना बटन गिनेंगे। सबसे अधिक बटन वाले बच्चे की जीत होगी। सभी बच्चे उसके लिए ताली बजायेंगे। ध्यान रहे हारने वाले बच्चे हतोत्साहित न हो।

4. इस खेल के माध्यम से मानव शरीर के विभिन्न अंगों के नाम जानना एवं पहचानना कराना।

8. अमरूद – खेल कार्ड

उद्देश्य :– कक्षा के बाहर खेल का उद्देश्य बच्चों के कल्पनाशक्ति एवं शारीरिक कौशल का विकास करते हुए पर्यावरण के विभिन्न तथ्यों एवं विशेषताओं को सहज रूप में जानना।

विवरण :– बच्चे कक्षा कक्ष के बाहर मैदान पर आते हैं तब आसपास के पर्यावरण के वस्तुओं को देखकर प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। खुले वातावरण में बच्चों को खेल खेलने में अधिक रूचि होती है। इन वस्तुओं का ज्ञान कराने में खेल विधि सबसे उपयुक्त होती है। इस लोगो के अंतर्गत कक्षा के बाहर का विविध खेलों को लिया गया है। शिक्षक इसके अतिरिक्त और अन्य खेल करा सकते हैं। जैसे– नदी पहाड़, खा खेल, बोल–बोल रानी एवं खेल व्यायाम को समाहित किया गया है।

उपयोग विधि :– शिक्षक बाहरी खेलों को कराने से पहले बच्चों को समस्त निर्देश दें, यह ध्यान रखें कि बच्चे मैदान से बहुत दूर न जाये लड़ाई न हो या खेलते समय अधिक थकान न हो। शिक्षक को चाहिए बच्चों के साथ थोड़ी देर स्वयं खेलें। यहाँ उदाहरण स्वरूप माइल स्टोन 11 का एक खेल दिया जा रहा है –

खेल का नाम – मेढ़क दौड़

इस खेल में बच्चों को मैदान में खड़े कराकर उन्हें बच्चों के मुख पर मेढ़क का मुखौटा लगा सकते हैं। एक बहुत बड़ा गोला लकड़ी से या चूने से खींचे। सभी बच्चे वृत्ताकार मार्ग में खड़े होंगे, पूरे बड़े गोले के केन्द्र में छोटा गोला खीचेंगे जिस पर शिक्षक/मॉनीटर खड़े होंगे। अब खेल प्रारंभ होंगे। 1 कहने पर सभी बच्चे अपने जगह पर बैठ जायेंगे, 2 कहने पर सभी बच्चे मेढ़क जैसे बन जायेंगे। अर्थात् दोनों हाथ जमीन पर टिकायेंगे।

3कहने पर मेढ़क जैसे उचक–उचक कर केन्द्र की ओर बढ़ेंगे। ऐसा करते हुए मेढ़क की आवाज भी निकालेंगे। जो बच्चा केन्द्र में पहले पहुंचेगा उसे विजयी माना जायेगा । इस दौड़ को शिक्षक अन्य पशु–पक्षियों के रूप में करा सकते हैं।

9. अनानास कार्ड – रंग भरो

उद्देश्य :– अनानास कार्ड के माध्यम से बच्चों में लेखन क्षमता एवं हस्तकला का विकास करना –

विवरण :– अनानास कार्ड में लेखन कार्य के अलावा चित्रों में रंग भरना, चित्र बनाना, कागज की वस्तुएँ, नाव, जहाज, फुग्गा, फिरकी बनाना, मिट्टी से खिलौने एवं मूर्ति फल–फूल एवं मॉडल बनाना चित्र बनाने एवं रंग भरने से बच्चों के अंगुलियों के कार्य क्षमता का विकास होगा। इस कार्य के माध्यम से लेखन कार्य हेतु बच्चों को तैयार किया जा सकता है।

अनानास कार्ड की संख्या 19 है। चित्रों में रंग भरने का कार्य माइल स्टोन–1 में पढ़ने वाले बच्चे, शरीर के अंग, सब्जियाँ, भवन, रंगों का पिटारा, यातायात के साधन, हमारे कामगार ,जल चक्र आदि एवं चित्र बनाने का कार्य पानी एवं उसका उपयोग, मकान की आवश्यकता, जल चक्र कीड़े–मकोड़े आदि हैं।

आवश्यक सामग्री :– शीश, स्केच पेन, कलर बाक्स, रंगोली, ड्राईंग सीट, स्टेन्सिल, रबर, स्केल आदि रंग भरने या चित्र बनाने का कार्य बच्चे के अध्ययन अभ्यास पर आधारित है। बच्चे जिन वस्तुओं का अध्ययन किया। उन्हीं से संबंधित वस्तुओं का चित्र बनाएंगे या अपने अभ्यास पुस्तिका में अंकित चित्रों पर रंग भरेंगे।

शिक्षक बच्चों के लिए रंगों की व्यवस्था करें तथा उनके कार्यों को ध्यान रखते हुए आवश्यकतानुसार मार्ग दर्शन करें।

शिक्षक बच्चों को इन सब्जियों का प्रत्यक्ष दर्शन कराएँ एवं उनसे संबंधित रंगों के बारे में बच्चे को जानकारी देवें। भटा का रंग बताएं और उसके डंठल के रंग के अंतर के अनुरूप रंग भरने को कहें।

इसी प्रकार शिक्षक के मार्ग दर्शन से बच्चों में पेन, पेन्सिल, ब्रश चलाने की कला का विकास होगा जो कि आगे लेखन कार्य में सहायक होगा।

10. पपीता – प्रायोजना / गतिविधि

उद्देश्य :– चर्चा कार्ड के आधार पर चर्चा के उपरान्त उभरे हुए कुछ नवीन बिन्दुओं का बारीक (सूक्ष्म) अवलोकन करने हेतु फील्ड ट्रीप करना। प्रायोगिक कार्य के प्रति रूचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से लंबे समय तक कार्य करना।

विवरण :– पर्यावरण विज्ञान के अध्ययन हेतु सर्वे के पश्चात् विभिन्न प्रायोगिक कार्य शरीर की सफाई का जाँच, कचरा पेटी का उपयोग बीज या पौधे लगाना तथा उसके विकास का दैनिक अवलोकन करना इस लोगो के अंतर्गत लिया है।

11. इमली – मूल्यांकन कार्ड

उद्देश्य :– इमली लोगो मूल्यांकन कार्ड के लिए बनाया गया है। पूरे माइल स्टोन के उद्देश्यों के आधार पर सीखे हुए ज्ञान का भिन्न परिस्थिति में परीक्षण करना।

विवरण :– बच्चे को परीक्षा के भय से मुक्ति एवं तनाव रहित बनाने के लिए प्रत्येक माइल स्टोन के अंत में एक मूल्यांकन कार्ड रखा गया है। इसे आकर्षक एवं बच्चों के रूचि के अनुरूप बनाने प्रयास किया गया है। गतिविधि इस तरह है कि बच्चे को पता न चले कि उनका मूल्यांकन हो रहा है। शिक्षक मूल्यांकन कार्ड के अतिरिक्त प्रश्न तैयार कर सकते हैं। जिससे बच्चों का उचित मूल्यांकन हो सके।

उपयोग :– शिक्षक मूल्यांकन लेते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंगे।

1. कार्ड में दिए गए प्रश्नों को अपने स्लेट या भू श्यामपट पर करेंगे।
2. मूल्यांकन में शिक्षक विशेष रूप से उस बच्चे के प्रति संतुष्ट हो जायें तभी अगले माइल स्टोन में भेजें।
3. मूल्यांकन के लिए बच्चों को मूल्यांकन समूह में बिठायें। उदाहरण– माइल स्टोन–14 के (रंगों का पिटारा) मूल्यांकन कार्ड इस प्रकार है।

यह रंगों का पिटारा रंगों के ज्ञान का मूल्यांकन है। इसमें विभिन्न रंगों के वस्तुओं में रंग से मिलान कराया गया है। जिस दिन मूल्यांकन पार करेंगे उसी दिन मूल्यांकन शीट में पार होने वाले माइल स्टोन पर उचित निशान लगायेंगे।

11. आंवला – त्रैमासिक, छैमाही वार्षिक मूल्यांकन

विभिन्न विषयों के माइल स्टोन के उद्देश्यों की सूची

विषय – हिन्दी कक्षा – पहिली

ekby LVku 0 %&

1. साथियों से मित्रवत संबंध बनाना।
2. शिक्षक और बच्चों के बीच मित्रवत संबंध स्थापित करना।
3. परिवेशीय चित्रों को पहचानना।
4. परिवेशीय कविता को सुनना एवं सुनाना।
5. मौखिक एवं सरल निर्देशों को समझना।
6. चित्रों पर ऊँगली फिराना।

ekby LVku 1& j]d]y] g] vk $ k

1. सरल परिचित कविता/कहानी को सुनकर समझना।
2. कविता को सामूहिक रूप से दोहराना।
3. सरल एवं मौखिक निर्देशों का पालन करना।
4. दिये हुए परिवेशीय चित्रों को पहचानना।
5. पहचाने हुए परिवेशीय चित्रों के शब्दों को पढ़ना।
6. पढ़े हुए शब्दों के अक्षर को स्वतंत्र रूप से पढ़ना।
7. स्वतंत्र रूप से पढ़े हुए अक्षर को जोड़कर पढ़ना।
8. पढ़े हुए शब्दों को जोड़कर सरल वाक्य के रूप में पढ़ना।
9. चित्रों के बिन्दु मिलाना।
10. पहचाने हुए वर्णों को वर्ण से मिलाना।

ekby LVku &2 & u]t]l]r] , $ i

1. सरल परिचित कविता/कहानी को सुनकर समझना।
2. कविता एवं कहानी को हाव भाव सहित दोहराना।
3. सरल एवं मौखिक निर्देशों का पालन करना।

6. पढ़े हुए अक्षरों/मात्राओं को भिन्न परिस्थिति में व स्वतंत्र रूप से पढ़ना।
7. पढ़े हुए अक्षरों व मात्राओं को जोड़कर भिन्न परिस्थिति में पढ़ना।
8. पढ़े हुए शब्दों को सरल वाक्य के रूप में पढ़ना।
9. स्वतंत्र चित्र बनाना।
10. पढ़े हुए .... वर्णों .... मात्राओं को लिखना।

ekby LVku & 5& Hk] V] ?k] o] m Å $ ¦ ¦

1. परिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप को सुनकर समझना।
2. कब, क्यों, कहाँ के प्रश्नों का उत्तर देना।
3. दिये हुए परिवेशीय चित्रों को पहचानना।
4. पहचाने हुए चित्रों के शब्दों को पढ़ना।
5. पढ़े हुए शब्दों के अक्षरों व मात्राओं को पढ़ना।
6. पढ़े हुए अक्षरों व मात्राओं को स्वतंत्र परिस्थिति में पढ़ना।
7. पढ़े हुए अक्षर से नये शब्द बनाना।
8. पढ़कर शब्द भंडार अर्जित करना।
9. पढ़े हुए शब्दों को सरल वाक्य के रूप में पढ़ना।
10. स्वतंत्र चित्र बनाना।
11. पढ़े हुए वर्णों व मात्राओं को लिखना।
12. लिख चुके वर्णों/मात्राओं से शब्द बनाना।

ekby LVku &6 & Fk] B] Q] >] N] vk] vk $ k] k

1. परिचित परिस्थितियों में हुए संवाद को सुनकर समझना।
2. सरल व छोटे वाक्यों का प्रयोग करना।
3. कब,क्यों, कहाँ का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछना।
4. दिये गये चित्रों को पहचानना।
5. पहचाने हुए चित्रों के शब्दों को पढ़ना।

3. दिये गये चित्रों से संबंधित कुछ शब्द या वाक्य बोल पाना।
4. अपने से बड़ो के लिए आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करना जैसेः श्री/श्रीमती आदि।
5. दिये गये चित्रों को पहचानना।
6. पहचाने चित्रों के शब्दों को पढ़ पाना।
7. पढ़े हुए शब्दों के वर्णों को पहचान कर पढ़ पाना तथा भिन्न परिस्थिति में उपयोग कर पाना।
8. पढ़े हुए अक्षर से नये शब्द बनाना व शब्द भंडार अर्जित करना।
9. पढ़े हुए शब्दों को वाक्य के रूप में पढ़ना।
10. पढ़े हुए अक्षर का बिन्दु मिलाना।
11. पढ़े हुए अक्षरों व मात्राओं को लिख पाना।
12. लिख चुके वर्णों से सरल शब्द या वाक्य लिख पाना।
13. लिख चुके वर्णों या शब्दों को सुनकर लिख लेना।

ekby LVku &9& "k] _] J] ³] <

1. कविता/कहानी को सुनकर समझना व अपने शब्दों में सुनाना।
2. परिचित परिस्थिति में दिये गये आदेशों का समझकर पालन करना।
3. दिये गये चित्रों में संबंधित शब्दों व वाक्यों को बोल पाना।
4. अपने से बड़ो के लिए आदर सूचक शब्दों को बोल पाना।
5. दिये गये चित्रों को पहचानना।
6. पहचानें चित्रों के शब्दों को पढ़ना।
7. पढ़े हुए शब्दों के वर्णों को पहचानना पढ़ना व भिन्न परिस्थिति में उपयोग कर पाना।
8. पढ़े हुए शब्दों को वाक्य के रूप में पढ़ना व समझना।
9. पढ़े हुए शब्दों को वाक्य के रूप में पढ़ना व समझना।
10. पढ़े वर्णों व मात्राओं को लिखना व लिख चुके वर्णों से शब्द व सरल वाक्य लिख सकना।
11. लिख चुके व पढ़ चुके सरल शब्दों को सुनकर लिख सकना।

5. कविता में आये कठिन शब्दों के अर्थ को समझ पाना।
6. सरल कविता को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।
7. स्वजातीय अर्धाक्षर को पढ़ना।
8. पढ़कर समझे हुए शब्दों को विभिन्न गतिविधियों में उपयोग कर पाना।
9. स्वजातीय अर्धाक्षर एवं लिखी। छपी कविता को देखकर लिख सकना।
10. स्त्रीलिंग/पुल्लिंग की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकना।

ekby LVku & 13

1. सरल परिचित कविता/कहानियों को सुनकर समझना।
2. सरल कविता को हावभाव सहित सामूहिक रूप से दोहराना।
3. कहानियों को अभिनय के साथ दोहराना।
4. कविता/कहानी को व्यक्तिगत रूप से शुद्ध उच्चारण के साथ सुनना व पढ़ना।
5. कविता/कहानी के शब्दों को समझ पानां
6. विजातीय अर्धाक्षर को पहचानना।
7. कविता/कहानियों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।
8. विजातीय अर्धाक्षर को पढ़ना।
9. अर्धाक्षर कविता/कहानी को देखकर लिख पाना।
10. कविता/कहानी को देखकर लिख पाना।
11. पढ़कर समझने का लगभग शब्दों का शब्द भंडार अर्जित करना।
12. सर्वनाम वाले सामान्य वाक्यों को पढ़कर समझना।

ekby LVku 14

1. सरल अपरिचित कविता/कहानियों को सुनकर सुनाना।
2. कविताओं एवं कहानियों को उचित हावभाव एवं अभिनय के साथ दोहराना।
3. सरल कविता/कहानी को व्यक्तिगत रूप से सुनानां
4. बोली अथवा लिखी गई संक्षिप्त सामग्री के घटनाक्रम को क्रमिक ढंग से पुनः स्मरण करना।

5. ड़, ड, ढ, ढ़ की ध्वनियों के अंतर को पहचानना।
6. कविता/कहानी को धारा प्रवाह पढ़ पानां
7. अर्धाक्षर एवं ''' से बने वाक्यों एवं शब्दों को पढ़ सकना।
8. पढ़कर समझने का शब्दों का शब्द भंडार अर्जित करना।
9. कविता/कहानी के कठिन शब्दों को छाँटकर लिख पाना।
10. परिचित शब्दों का श्रुति लेखन कर पाना।
11. तीनों काल का प्रयोग वाक्यों में करके पढ़ व लिख पानां

ekby LVku 17

1. कविता/कहानी के माध्यम से लिखे हुए संवादों को सुनकर समझना।
2. संवादों को समझकर क्रमबद्ध व्यक्त कर पाना।
3. सुनकर समझे संवादों को हाव–भाव सहित दोहराना।
4. अल्प विराम, पूर्ण विराम चिन्हों को पहचानना व प्रयोग कर पाना।
5. वार्तालाप एवं संवादों से संबंधित पूछे गये क्या और कैसे वाले प्रश्नों के साथ विनम्र व्यवहार करना।
6. बड़ों एवं मित्रों के समथ विनम्र व्यवहार करना।
7. ि ी की मात्रा के उच्चारण के अंतर को समझना व शुद्ध उच्चारण करनां
8. कविता/कहानी को धारा प्रवाह पढ़ सकना।
9. पढ़कर समझने का लगभग .... शब्दों का शब्द भंडार अर्जित करना।
10. शब्द भंडार में वृद्धि के लिए चित्रों वाले सरल विश्वकोष का प्रयोग करना।
11. वार्तालाप एवं संवाद में आये कुछ शब्दों को यादकर लिख सकना।
12. विभक्ति चिन्ह ने, का, की, के का प्रयोग करके शब्द बनाना व पढ़ सकना।

ekby LVku 18

1. परिचित परिस्थितियों में दिये गये मौखिक अनुरोध को समझना।
2. परिचित परिस्थितियों में दिये गये मौखिक प्रश्नों को समझना।
3. अपने विवेक से कविता/कहानी कह सकना।

6. ो , ौ के उच्चारण अंतर को समझना व इसका ध्यान रखते हुए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना।
7. कविता / कहानी का सारांश बता सकना।
8. परिचित शब्दों का श्रुतिलेखन करना।
9. आदर सूचक शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करते हुए लिख पाना।

ekby LVku 21

1. सुने हुए कविता / कहानी या देखे हुए परिवेशीय घटना को अपने शब्दों में सुना सकना।
2. अनुरोध को समझकर अपनी बात कह सकना।
3. 'स' 'श' एवं 'ष' के ध्वनियों के अंतर को समझना व शुद्ध उच्चारण करना।
4. कविता को पढ़कर कहानी के रूप में बता सकना।
5. कहानी को पढ़कर संवाद के रूप में बता सकना।
6. निर्देशानुसार सरल वर्णात्मक वाक्य लिख पाना।
7. कब, क्यों, कैसे के उत्तर पूर वाक्यों में बोल सकना।
8. पूर्ण विराम, अल्प विराम, एवं प्रश्नवाचक चिन्ह का प्रयोग कर सकना।
9. छपे हुए अंश का सुलेख करना।
10. परिचित या पढ़े अंश का श्रुत लेख कर सकनां
11. उपसर्ग, प्रत्यय, सर्वनाम, लिंग, विभक्ति चिन्ह, काल, वचन आदि से संबंधित शब्द बनाकर पढ़ व लिख सकना।

fo"k; & fgUnh d{kk & 3

माईल स्टोन 22

1. परिचित एवं अपरिचित कविता को सुनकर समझना।
2. सुने हुए कविता को हावभाव के साथ बोलना।
3. कविता में आए श,ष वाले शब्द को शुद्ध उच्चारण के साथ बोल पाना।
4. कविता में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
5. कविता में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्द कोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।

15. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन – 24

1. परिचित एवं अपरिचित परिस्थिति में हुए वार्तालाप को सुनकर समझना।
2. सुने हुए वार्तालाप को हावभाव के साथ बोल पाना।
3. वार्तालाप में आए रकार ‚'', ˋ वाले अक्षरों व शब्दों का शुद्ध उच्चारण के साथ बोल पाना।
4. वार्तालाप में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
   राह चलते देखे, सूचना, विज्ञापन, समझकर पढ़ पाना।
5. वार्तालाप में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्द कोष में देखकर अपने शब्दभंडार को बढ़ाना।
6. शब्द कोष से प्राप्त समानार्थी शब्द का वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
7. वार्तालाप से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना।
8. वार्तालाप से संबंधित प्रश्न बना पाना।
9. दिए गए शब्दों से वार्तालाप के वाक्य बना पाना।
10. परिवेश से सुने हुए व पढ़े हुए वार्तालाप को लिख पाना।
11. अक्षरों एवं शब्दों के सही क्रम तथा आकार में लिखपाना।
12. रकार वाले शब्दों वाक्यों का श्रुतिलेखन करना।
13. शब्द खेल – एक ही वर्ण से प्रारंभ होने वाल शब्द।
14. कारक– से, के द्वारा का प्रयोग।
15. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन – 25

1. परिचित एवं अपरिचित आत्मकथा को सुनकर समझना।
2. सुने हुए आत्मकथा को हावभाव के साथ बोल पाना।
3. आत्मकथा में आए संयुक्ताक्षर ''द्य,द्ध,क्ष,त्र'' वाले अक्षरों व शब्दों का शुद्ध उच्चारण के साथ बोल पाना।
4. आत्मकथा में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
   राह चलते देखे, सूचना, विज्ञापन समझकर पढ़ पाना।
5. आत्मकथा में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष में देखकर अपने शब्द भंडार को बढ़ाना।

माईल स्टोन – 27

1. परिचित एवं अपरिचित कविता को सुनकर समझना।
2. सुने हुए कविता को हावभाव के साथ बोल पाना।
3. कविता में आए पंक्तियों में अर्धाक्षर संयुक्ताक्षर वाले शब्दों वाक्यों का शुद्ध उच्चारण कर पाना।
4. कविता में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
5. कविता में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्द कोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।
6. शब्द कोष से प्राप्त समानार्थी शब्द का वाक्यों में प्रयोग करना।
7. कविता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना।
8. कविता से संबंधित प्रश्न बना पाना।
9. तुकबंदी शब्दों को मिलाकर कविता बनाना।
10. सामान्य वाक्य और आदेश वाक्य में अंतर को समझ पाना।
11. अक्षरो एवं शब्दों के सही क्रम तथा आकार में लिख पाना तथा अक्षर व शब्द के बीच की दूरी को समझ पाना।
12. संयुक्ताक्षर, अर्धाक्षर वाले शब्दों का श्रुतिलेखन कर पाना।
13. व्यक्ति स्थान वस्तु आदि के नामों को पहचान कर अलग अलग करना।
14. शब्द खेल– लिंग से संबंधित एवं वाक्य में प्रयोग
15. कारक– का, के, की, का प्रयोग
16. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन –28

1. अपरिचित एवं परिचित कहानी को सुनकर समझना।
2. सुने हुए कहानी के हावभाव के साथ बोल पाना।
3. कहानी में आए पंक्तियों में अर्धाक्षर संयुक्तांक्षर वाले शब्दों वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ बोल पाना एवं श्रुतिलेख कर पाना ।
4. कहानी में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
5. कहानी में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्द कोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।

15. विशेषण– शब्दों को पहचानना, शब्द संकलन करना तथा वाक्य में प्रयोग करना।
16. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन – 30

1. महापुरूषों की जीवनी को सुनकर समझना।
2. जीवनी में आए निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
3. अपने परिवार के पूर्वजों का जीवनी लेखन करना।
4. जीवनी में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।
5. शब्द कोष में प्राप्त समानार्थी शब्द का वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
6. जीवनी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना।
7. जीवनी से संबंधित प्रश्न बना पाना।
8. परिवेश से सुने व पढ़े हुए जीवनी लिख पाना।
9. अक्षरों एवं शब्दों को सही क्रम, आकार व दूरी को समझकर लिख पाना।
10. जीवनी का श्रुतिलेखन कर पाना।
11. शब्दखेल– अंतिम ध्वनि से संबंधित
12. कारक– में, पर, के ऊपर का प्रयोग करना।
13. क्रिया शब्द की पहचान एवं वाक्य में प्रयोग करना।
14. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन – 31

1. परिचित एवं अपरिचित चित्रकथा से सुनकर समझना।
2. सुने हुए चित्रकथा से हावभाव के साथ बोल पाना, पढ़ना।
3. चित्रकथा में आए संयुक्ताक्षर, अर्धाक्षर वाले अक्षरों व शब्द का शुद्ध उच्चारण के साथ बोल पाना।
4. चित्रकथा में निहित भावों का अपने शब्दों में व्यक्त करना।
5. चित्रकथा में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्द कोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।
6. शब्द कोष से प्राप्त समानार्थी शब्द का वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
7. चित्रकथा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना।

5. कहानी में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।
6. शब्दकोष से प्राप्त समानार्थी शब्दा का वाक्य में प्रयोग व विरोधी शब्द बना पाना।
7. कहानी से संबंधित प्रश्न बना पाना।
8. दिए गए शब्दों का प्रयोग कर कहानी बना पाना।
9. परिवेश से सुने व पढ़े हुए कहानी को लिख पाना।
10. कहानी को सुनकर श्रुतिलेखन करना।
11. शब्दखेल– उपसर्ग से संबंधित
12. कारक– के लिए का प्रयोग
13. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन–34

1. परिचित एवं अपरिचित परिस्थिति मे लिखे पत्र को सुनकर समझना।
2. पत्र लेखन के विभिन्न कौशलों को पढ़कर समझ पाना।
3. हस्तलिखित पत्रों के अनुच्छेद को पढ़ पाना।
4. पत्र में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
5. पत्र में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्द कोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।
6. शब्दकोष से प्राप्त समानार्थी शब्द का वाक्यों से प्रयोग करना।
7. पत्र से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे पाना।
8. अपने साथी को पत्र लिख पाना।
9. विभिन्न प्रकार के पत्र संकलन करना।
10. समान्य वाक्य और नकारात्मक वाक्य में अंतर समझ पाना।
11. शब्दों एवं वाक्यों का श्रुतिलेखन करना।
12. शब्दखेल– एक ही वर्ग से संबंधित
13. कारक– द्वारा का प्रयोग
14. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन–35

1. परिचित एवं अपरिचित डायरी को सुनकर समझना।

13. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन – 37

1. परिचित एवं अपरिचित कहानी को सुनकर समझना।
2. सुने हुए कहानी को हाव भाव के साथ बोल पाना।
3. कहानी में निहित भावों को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
4. कहानी में आए शब्दों वाक्यों का शुद्ध उच्चारण कर पाना।
5. कहानी में आए शब्दों के समानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष में देखकर अपने शब्द भण्डार को बढ़ाना।
6. शब्दकोष से प्राप्त समानार्थी शब्दा का वाक्य में प्रयोग व विरोधी शब्द बना पाना।
7. कहानी से संबंधित प्रश्न बना पाना।
8. दिए गए शब्दों का प्रयोग कर कहानी बना पाना।
9. परिवेश से सुने व पढ़े हुए कहानी को लिख पाना।
10. कहानी को सुनकर श्रुतिलेखन करना।
11. शब्दखेल– वचन से संबंधित
12. कारक– के लिए का प्रयोग
13. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन – 38

1. आसपास के देखी किसी निबंध का वर्णन सुनकर समझना।
2. परिवेशीय वस्तुओं के बारे में बोल पाना एवं लिख पाना ।
3. दिये गये चित्रो के बारे में अपने विचार व्यक्त कर पाना।
4. अपने विचारो को क्रमबद्ध कर लिख पाना।
5. किसी निबंध को पढ़कर अपने वाक्यों में व्यक्त कर पाना।
6. निबंध से संबंधित प्रश्न का उत्तर दे पाना।
7. दिए गए विषय पर लगभग 10 वाक्यों में लिख पाना।
8. शब्दखेल– विरूद्धार्थी शब्द से संबंधित
9. स्वतंत्र रूप से अपनी रूचि के अनुसार अपना विचार लिखित में व्यक्त करना।

माईल स्टोन–39

1. परिचित अपरिचित पहेलियों को सुनकर समझना।

14. संबंधित बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पोस्टर आदि पढ़ना।
15. व्याकरण वाक्य के क्रिया शब्दों को पहचानना।

माइलस्टोन – 41

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में कहानी को सुनकर समझना।
2. सुने हुए कहानी को हावभाव के साथ दोहराना।
3. कहानी में आये हुए शब्दों का शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।
4. परिचित कहानी को धारा प्रवाह आरोह अवरोह के साथ पढ़ पाना।
5. कहानी में निहित भावो को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
6. कहानी के अनुसार क्योंकि, चूंकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
7. कहानी के अनुसार प्रश्नों का निर्माण करना।
8. कहानी में आये शब्द का सामानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
9. कहानी के अनुच्छेदो को सरल विराम चिन्हो का प्रयोग कर निर्देशानुसार व श्रुति लेखन करना।
10. निर्देशानुसार स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर पाना।
11. कहानी के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
12. संबंधित, अनुचछेद, बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पोस्टर, कार्टून, चित्र कहानी पढ़ना।
13. व्याकरण क्रिया शब्द और संयुक्त क्रिया को पहचानना।

माइलस्टोन–42

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में वर्णन को सुनकर समझना।
2. सुने हुए वर्णन को आरोह अवरोह के साथ पढ़ना व बोलना।
3. वर्णन में आये हुए शब्दों का शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।
4. परिचित वर्णन को धारा प्रवाह के साथ पढ़ पाना।
5. वर्णन में निहित भावो को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
6. वर्णन के अनुसार क्योंकि, चूंकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
7. वर्णन के अनुसार प्रश्न बना पाना।
8. वर्णन में आये शब्द का सामानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
9. वर्णन के अनुच्छेदो को सरल विराम चिन्हो का प्रयोग कर निर्देशानुसार व श्रुति लेखन करना।
10. निर्देशानुसार स्वतंत्र चित्रों का वर्णन कर पाना।
11. वर्णन के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।

11. वर्णन के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
12. संबंधित बाल पत्रिका, पोस्टर कार्टून आदि पढ़ना।
13. मुहावरा।

माइलस्टोन–45

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में यात्रावृतांत को सुनकर समझना।
2. सुने हुए यात्रावृतांत को आरोह अवरोह के साथ पढ़ना व बोलना।
3. यात्रावृतांत में आये हुए शब्दों का शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।
4. परिचित यात्रावृतांत को धारा प्रवाह के साथ पढ़ पाना।
5. यात्रावृतांत में निहित भावो को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
6. यात्रावृतांत के अनुसार क्योंकि, चूंकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
7. यात्रावृतांत के अनुसार प्रश्न बना पाना।
8. यात्रावृतांत में आये शब्द का सामानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
9. यात्रावृतांत के अनुच्छेदो को सरल विराम चिन्हो का प्रयोग कर निर्देशानुसार व श्रुति लेखन करना।
10. निर्देशानुसार स्वतंत्र चित्र/स्वयं की यात्रा का वर्णन कर पाना।
11. यात्रावृतांत के सारांश अपने शब्दों में व्यक्त कर पाना।
12. संबंधित बाल पत्रिका, लेख, पोस्टर आदि पढ़ना।
13. वाक्य के प्रकार– सामान्य, प्रश्नवाचक, सकारात्मक, नकारात्मक।
13. समोच्चारित शब्द का प्रयोग।

माइलस्टोन–46

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में पहेलियों को सुनकर समझना।
2. सुने हुए पहेलियों को आरोह अवरोह के साथ पढ़ना व बोलना।
3. सुने हुए, पढ़ हुए पहेलियों का व्याख्या कर पाना।
4. परिचित पहेलियों को धारा प्रवाह के साथ पढ़ व बोल पाना।
5. पहेलियों के अनुसार क्योंकि, चूंकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
6. पहेलियों के अनुसार किसने, किससे, कब, कहां को छांट पाना।
7. पहेलियों के अनुसार प्रश्न बना पाना।
8. पहेलियों में आये शब्द का सामानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।

12. संबंधित बाल पत्रिका, पोस्टर कार्टून आदि पढ़ना।
13. संयुक्त वाक्य बनाना।

माइलस्टोन–49

1. परिचित/अपरिचित अनमोल वचन सुनकर समझना।
2. अनमोल वचन सुनकर अपने शब्दों में व्याख्या कर पाना।
3. अनमोल वचन से संबंधित वाक्य बोल पाना।
4. अनमोल वचन के शब्दों का भावार्थ चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
5. अनमोल वचन के अंशो को विराम चिन्हो के साथ प्रयोग कर पाना एवं श्रुति लेखन करना।
6. निर्देशानुसार अनमोल वचन संकलित करना।
7. अनमोल वचन से संबंधित अन्य जानकारी चित्र आदि संकलन करना।
8. संबंधित पुस्तक, पत्रिका, कार्टून, कामिक्स, पोस्टर, सूक्तियां, दोहा आदि पढ़ना
9. अन्त्याक्षरी का प्रयोग।
10. जहाँ आवश्यक हो दो शब्दों के बीच मे योजक चिन्ह का प्रयोग करना।

माइलस्टोन–50

1. परिचित/अपरिचित परिस्थिति में सुने हुए संस्मरण को सुनकर समझना।
2. सुने हुए संस्मरण को हाव–भाव के साथ दोहराना।
3. संस्मरण मे आये शब्दो व वाक्यो को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।
4. परिचित संस्मरण को धारा प्रवाह में पढ़ पाना।
5. संस्मरण में निहित भाव को अपने शब्दों में व्यक्त करना।
6. संस्मरण के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दे पाना।
7. संस्मरण के अनुसार प्रश्नों का निर्माण कर पाना।
8. संसमरण में आये शब्द का सामानार्थी शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
9. संस्मरण में सरल विराम चिन्हो सहित श्रुति लेखन करना।
10. दिये गये निर्देशानुसार सरल कविता वाक्य बनाना।
11. क्योंकि, चूंकि का प्रयोग कर उत्तर मौखिक एवं लिखित में दे पाना।
12. निर्देशानुसार स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर पाना।
13. संस्मरण का सरलार्थ अपने शब्दों में लिख पाना।
14. संबंधित बाल पत्रिका, कॉमिक्स, पुस्तक, अनुच्छेद, विवरण पोस्टर कार्टून आदि पढ़ना।
15. संज्ञा की परिभाषा देते हुए संज्ञा शब्दों को छाँटना ।

8. लघुकथा के शब्दों का सामानार्थी, विलोम शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
9. लघुकथा के अनुसार स्वतंत्र चित्र, विचार बना पाना, लघुकथा संग्रहण करना।
10. लघुकथा का सारांया लिख पाना।
11. संबंधित अनुच्छेद ,कार्टून, कॉमिक्स, पोस्टर आदि पढ़ना
12. विश्लेषण की परिभाषा देते हुए विश्लेषण शब्दों को छाँटना ।

माइलस्टोन–54

1. परिचित/अपरिचित प्रेरक प्रसंगों को सुनकर समझना।
2. प्रेरक प्रसंग को सुनकर दोहराना।
3. प्रेरक प्रसंग को धारा प्रवाह के साथ व आरोह अवरोह के साथ पढ़ पाना।
4. प्रेरक प्रसंग में निहित भावो को अपने वाक्यों में व्यक्त करना।
5. प्रेरक प्रसंग में आये शब्दों वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाना।
6. प्रेरक प्रसंगों में निहित भावो के अर्थ अपने शब्दों में व्यक्त करना।
7. प्रेरक प्रसंग के अनुरुप अन्य प्रेरक प्रसंग छांट पाना व संकलन करना।
8. प्रेरक प्रसंगों के शब्दों का सामानार्थी, विलोम शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
9. प्रेरक प्रसंगों के संदर्भ में स्वतंत्र चित्र, वाक्य बनाना, संकलन करना।
10. संबंधित पत्रिका ,पुस्तक, अनुचछेद आदि पढ़ना।
11. वचन को ध्यान में रखकर वाक्य प्रयोग करना।

माइलस्टोन–55

1. परिचित निबंध को सुनकर समझना।
2. निबंध को धारा प्रवाह के साथ व आरोह अवरोह के साथ पढ़ पाना।
3. निबंध लेखन के विधा को जानना।
4. निबंध में वर्णित भावों को समझकर अपने वाक्यों में व्यक्त करना।
5. निबंध में आये शब्दों का सामानार्थी, विलोम शब्द चित्रमय शब्दकोष से पढ़कर शब्द भण्डार बढ़ना।
6. निबंध में विराम चिन्हों का सही क्रम, आकार, व शब्दों व अक्षरों के बीच के अंतर को समझकर लिखना।
7. स्वतंत्र निबंध के लिख पाना।
8. अन्य निबंध का संकलन करना।
10. संबंधित पत्रिका ,पुस्तक आदि पढ़ना।

माइलस्टोन–56

विषय – गणित कक्षा – पहिली

माइल स्टोन 0 :–

- शिक्षक द्वारा गीत, कविता, चुटकुला सुनाना व बच्चों से सुनना।
- सामान्य परिचय का आदान प्रदान। कक्षागत व कक्षा के बाहर का खेल।
- छोटा–बड़ा, पतला–मोटा, दूर–पास, भरा हुआ– खाली ।
- आगे–पीछे, पहले–बाद और बीच की अवधारणा।

ekby LVku 1 %&

- 1 से 3 तक की संख्याओं का ज्ञान।
- ठोस की सहायता से 1, 2 व 3 की अवधारणा।
- संख्या एवं संख्यांक हेतु वस्तुओं का मिलान करना।
- 1, 2 व 3 का गणन अभ्यास।
- रबर कार्ड द्वारा ऊँगली फिराकर गणन करना।
- 1 से 3 व 3 से 1 को सीधे व उल्टे क्रम में बेाल पाना।
- अंक व चित्र कार्ड से परिचय।

ekby LVku 2 %&

- 4 से 6 तक की संख्याओं को ठोस वस्तु के द्वारा मिलान कर अवधारणा स्पष्ट करना।
- 1 से 6 तक ठोस वस्तु की सहायता से गणन करना।
- 1 से 3 तक की संख्याओं का लेखन अभ्यास।
- 1 से 6 तक की संख्याओं को उल्टे क्रम व सीधे क्रम में पढ़ना।
- रिक्त स्थानों को पढ़ने का अभ्यास करना।
- 1 से 6 तक की संख्याओं का लेखन पूर्ण अभ्यास(ऊँगली फिराकर)।

ekby LVku 3 %&

- 7 से 9 तक की संख्याओं को ठोस वस्तुओं के द्वारा मिलान कर अवधारणा स्पष्ट करना।
- 1 से 9 तक की संख्याओं को ठोस वस्तु की सहायता से गिनने का अभ्यास।
- 1 से 6 तक की संख्याओं का लेखन अभ्यास।

- 1 से 19 तक की संख्याओं को लिखना।
- 1 से 19 तक की संख्या को उल्टे व सीधे क्रम में लिखना एवं रिक्त स्थानों की पूर्ति करना।
- श्रुति लेख (1 से 19 तक की संख्याओं का) कराना।
- 1 अंकीय, 2 अंकीय संख्याओं का योगफल ज्ञात करना।
- धारिता अमानक, अनुमान रहित व अनुमान सहित नापना।
- ज्यामितीय आकृति वृत्त– चुड़ी, पहिया, सिक्का, रिंग, गोल चाँद, सुर्य से परिचय।

ekby LVku 7 %&

- 'दहाई का ज्ञान' 20 से 29 तक की संख्याओं को पहचानना, बंडल व बिन्दी कार्ड के माध्यम से।
- 1 से 29 तक की संख्याओं का गणन व पठन अभ्यास ,गिनतारा के माध्यम से।
- 1 से 29 तक की संख्याओं का लेखन अभ्यास।
- 1 से 29 तक की संख्याओं को घटते क्रम में व बढ़ते क्रम में जमाना व पढ़ना ।
- छोटा–बड़ा का ज्ञान कराना(तुलना करके,बडंल कंकड़ आदि की सहायता से)।
- छूटे हुए स्थानों की पूर्ति करना।
- 1 से 29 तक की संख्याओं को बिना हासिल के घटाना।
- 1 से 10 के नोटों व सिक्कों को पहचानना, गिनना व नोटों को मौखिक योग कर पाना।
- घटते क्रम (अवरोही), बढ़ते क्रम (आरोही) का अभ्यास।
- त्रिभुज की आकृति से परिचय :– जैसे – पराठा, समोसा।

ekby LVku 8 %&

- 19 से 29 तक की संख्याओं का गणन, लेखन व पठन अभ्यास (बंडल बनाकर)।
- 29+1 = 30, तीन दहाई की अवधारणा (बंडल बनाकर)।
- 30 तक योगफल प्राप्त होने वाले संख्याओं का जोड़ अभ्यास।
- छूटे हुए संख्याओं की पूर्ति करना:– गिनतारा, बिन्दी कार्ड, डोमीनो कार्ड का उपयोग करते हुए गिनती करना।

- 60 तक की संख्याओं को ठोस वस्तु की सहायता से 2–2, 3–3 का समूह बनाना, पहाड़े की अवधारणा।
- 1 से 30 तक की संख्याओं के बीच के 5 संख्याओं का श्रुति लेखन।
- घड़ी के माध्यम से समय ज्ञान कराना।

ekby LVku 12 %&

- 61 से 70 तक की संख्याओं को पहचानना, पढ़ना व बंडल की सहायता से मिलान कर अवधारणा स्पष्ट करना।
- 1 से 70 तक की संख्याओं को लिखना, पढ़ना व बंडलों एवं चार्ट के माध्यम से अभ्यास करना।
- 1 से 50 तक के नोटों का ज्ञान व मौखिक योग करना।
- जिसका योगफल 70 हो उनसे कम तक योग की संख्याओं का बिना हासिल जोड़।
- ठोस की सहायता से 2–2, 3–3, 4–4, 5–5 का समूह बनाना, पहाड़े का उपयोग करना।
- अंक पट्टी, गिनतारा बंडल का उपयोग कर गिनती का अभ्यास करना।
- कौन हल्का, कौन भारी का अमानक तौल, अनुमान (ईंट, पत्थर आदि)।
- इकाई, दहाई का अभ्यास व उनकी सहायता से जोड़ का अभ्यास।

ekby LVku 13 %&

- 71 से 80 तक की संख्याओं को पढ़ना, लिखना, पहचानना, बंडल की सहायता से अवधारणा बताना।
- बंडल की सहायता से 1 से 80 तक की संख्याओं को लिखना, पढ़ना व पहचानना।
- जोड़ व घटाने का अभ्यास।
- समूह (2–2) की सहायता से पहाड़े का निर्माण करना (अधिकतम 5 अंक)।
- घटते क्रम, बढ़ते क्रम व छोटा–बड़ा का परिचय।
- ज्यामितीय आकृति 'चौकोर' पुस्तक, कमरा, दरवाजा, खिड़की आदि से परिचय कराना।

ekby LVku 14 %&

- 81 से 100 तक की संख्याओं का अभ्यास व परिचय, 10 दहाई के रूप मे जानना।
- आरोही (बढ़ते क्रम), अवरोही (घटते क्रम), पहले, बाद व बीच की संख्या से परिचय

- 1 से 30 तक की संख्या में विषम व सम की पहचान।
- जोड़ने घटाने से संबंधित सरल इबारती प्रश्नों का दैनिक जीवन में प्रयोग करना।
- अमानक लम्बाई, छोटी व बड़ी की तुलना करना (समान माप वाली वस्तुओं का)।

ekby LVku 18 %&

- स्थानीय मान की सहायता से 19, 29, 39, 49, 59, 69, 79 को जानना, पढ़ना, लिखना।
- शब्दों को अंकों में व अंकों को शब्दों में लिखो(1 से 50 तक)।
- हासिल वाले सरल जोड़ का अभ्यास इकाई व दहाई के माध्यम से (दो अंकों का)।
- ठोस की सहायता से हासिल (उधार) वाले संख्याओं का घटाना अभ्यास (इकाई, दहाई के माध्यम से)।
- छोटी व बड़ी धारिता वाले अमानक इकाई की तुलना (समान धारक जैसे एक बाल्टी पानी को गिलास व जग से नाप कर बताना)।

ekby LVku 19 %&

- 50 से 70 के बीच सम व विषम संख्याओं को अलग करना।
- हासिल वाले जोड़ का अभ्यास।
- बार–बार जोड़ने की क्रिया के माध्यम से 2 का पहाड़ा बनाना (ठोस वस्तुओं की सहायता से)।
- स्थानीय मान व गिनतारे का उपयोग करते हुए 19, 29.....99 तक की संख्याओं को बोलना, लिखना, पढ़ना व समझ स्थापित करना।
- 1 से 60 तक की संख्याओं को अंकों से शब्दों में व शब्दों से अंकों में लिख पाना।
- घड़ी की माध्यम से समय का ज्ञान घंटा, मिनट, सेकण्ड से सामान्य परिचय। माइल स्टोन 20 :–
- बार–बार जोड़ने की क्रिया से तीन–चार की पहाड़ा (ठोस की सहायता से)।
- दो की पहाड़ा मौखिक रूप से बोल पाना, गुणा से परिचय व अभ्यास।
- हासिल वाले जोड़ व घटाने की क्रिया का अभ्यास।
- 1 से 50 तक की नोटों से परिचय व मौखिक रूप से जोड़ने का अभ्यास।
- सप्ताह के दिनों का नाम से परिचय मौखिक रूप में बोल पाना व लिखना।

ekby LVku 24 %&

- भाग की क्रिया का अभ्यास (केवल एक ही बार में भाग चला जाये)।
- 2 से 10 तक की पहाड़े का निर्माण, 10 तक की पहाड़े को पढ़ पाना। 7 तक की पहाड़े को मौखिक सुनाना।
- पहाड़े की सहायता से सरल गुणा व सरल भाग कर पाना।
- 1 से 50 तक की सिक्का व नोटों की पहचान व दैनिक जीवन में उपयोग हेतु इबारती प्रश्न।
- ज्यामिति आकृति, चतुर्भुज, आयत की पहचान, दैनिक उपयोग व आसपास की आयताकार वस्तुएं।

ekby LVku 25 %&

- जोड़ व घटाना से संबंधित लिखित इबारती प्रश्न बच्चे स्वयं तय करें कि जोड़ करें या घटाना।
- 2–10 तक की पहाड़े को बिना रूके पढ़ पाना।
- 2–10 तक के पहाड़े का उपयोग करते हुए गुणा करना।
- समतल व वक्रतल का बोध कराते हुए परिवेश में पाये जाने वाले तलों का वर्गीकरण करना।
- चतुर्भुज को पहचानना, परिवेश में पाये जाने वाले वर्ग (घन) वस्तुएँ, वर्ग, आयत में अंतर बताना।

ekby LVku 26 %&

- गुणा व भाग से संबंधित सरल इबारती प्रश्न बच्चे स्वयं तय करें कि गुणा करें या भाग।
- 2–10 तक की पहाड़े को कंठस्थ कर सुना पाना व बिना देखे लिख सकें।
- ज्यामितीय आकृति वृत्त, परिवेश में पाये जाने वाले वृत्ताकार आकृति या वस्तुएँ।
- 1 से 100 तक की संख्या को अंकों में व शब्दों में लिख सकें।
- स्थानीय मान की सहायता से छोटी व बड़ी संख्या को पहचान कर पाना।
- 1 से 50 तक के नोटों को पहचान कर उसका उपयोग कर पाना।
- 50 से 100 तक की संख्याओं में छोटा बड़ा पहचानना, घटते व बढ़ते क्रम।

7. समय का ज्ञान घड़ी के माध्यम से।
8. जोड़ के द्वारा सरल गुणा का अभ्यास जिसका योग दो अंकीय संख्या आये।

माइल स्टोन – 30

1. 200 से 300 तक सीधी गिनती का पहचान तथा पढ़ना लिखना।
2. 300 तक की संख्याओं को बिना हासिल का घटाना।
3. 300 तक संख्या को पहले,बाद, बीच की संख्या को जानना।
4. दैनिक जीवन से संबंधित जोड़, घटाना के प्रश्नों को हल करना।
5. परिवेशीय वस्तुओं की लंबाई–चौड़ाई ज्ञात करना।
6. घड़ी देखकर घंटा, मिनट बताना।
7. जोड़ घटाने से संबंधित इबारती प्रश्न हल कर सकना।

माइल स्टोन – 31

1. हासिल के साथ 300 तक के अंकों को जोड़ना।
2. 300 तक के अंकों का स्थानीय मान ज्ञात करना।
3. 300 तक के अंकों का इकाई,दहाई, सैकड़ा के रूप में पहचान कर पाना।
4. जोड़ से संबंधित सरल इबारती प्रश्न हल कर पाना।
5. एक अंकीय संख्या से 300 तक की संख्याओं का भाग कर सकना।
6. 300 तक की संख्याओं का पहले, बाद तथा बीच को संख्याओं को पहचानना तथा बढ़ते तथा घटते क्रम में लिख पाना।
7. मानक मापन की पहचान कर सकना।
8. घड़ी देखकर समय ज्ञात कर सकना।
9. ज्यामितीय आकृतियों की पहचान।

माइल स्टोन – 32

1. 301 से 500 तक की संख्याओं की पहचान, पढ़ना, लिखना।
2. 500 तक की संख्या को घटते बढ़ते क्रम में लिखना।
3. 500 तक की संख्याओं को छोटी–बड़ी संख्या को समझना।
4. 500 तक की संख्या का हासिल के साथ घटाना।
5. दैनिक जीवन के इबारती प्रश्नों को हासिल लेकर घटाना।

माइल स्टोन – 36

1. गुणा 2 अंक की संख्या का 1 अंक संख्या से हासिल के साथ गुणा कर सकना।
2. 1000 तक की संख्याओं को शब्दों, अंकों में लिखना।
3. 2 अंक संख्या का 2 अंकीय संख्या का इबारती प्रश्नों को हल करना।
4. 1000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिख पाना।
5. भाग के सरल इबारती प्रश्नों को हल कर सकना।
6. 1000 तक की संख्या का स्थानीय मान को जानना।
7. जोड़ना से संबंधित सरल इबारती प्रश्नों को हल कर पाना।
8. सम, विषम संख्या को पहचानना।

माइल स्टोन – 37

1. भाग 2 अंक की संख्या का 1 अंक की संख्या से भाग शेष सहित।
2. भाग से संबंधित इबारती प्रश्नों को हल करना।
3. बंडल के माध्यम से 1000 तक संख्या को पहचान पाना।
4. 1000 तक की संख्या को घटते–बढ़ते एवं पहले, बाद, बीच की संख्य को जानना।
5. हासिल सहित जोड़ के इबारती प्रश्न हल करना।
6. विभिन्न आकृति में त्रिभुज, वृत्त, आयत, वर्ग को पहचानना।

माइल स्टोन – 38

1. मापन– लंबाई की मानक, मीटर, सेंटी मीटर को जान सकना।
2. स्केल/टेप की सहायता से अपने आस–पास के वस्तुओं को लंबाई, चौड़ाई को जान सकना।
3. धारिता से संबंधित सरल प्रश्न को हल कर सकना।
4. मीटर को से.मी. को मीटर में बदल सकना।
5. लंबाई से संबंध जोड़ पाना।
6. 1000 तक की संख्या का अभ्यास। उल्टा एवं सीधा क्रम में लिख पाना।
7. घटाना से संबंधित इबारती प्रश्न को हल कर पाना।
8. गुणा से संबंधित प्रश्नों को हल करना।
9. जोड़ से संबंधित प्रश्नों का अभ्यास कर सकना।

1. धारिता, धारिता के मानक बर्तन को जानना।
2. 800 तक की संख्या को बढ़ते, घटते क्रम को जानना।
3. लीटर मिली लीटर का सरल जोड़ना एवं घटाना को जानना।
4. 800 तक की संख्याओं को हासिल के साथ घटाना।
5. गुणा से संबंधित इबारती प्रश्न हल कर पाना 800 तक।
6. मीटर और से.मी. से संबंधित सरल गुणा के सवाल को हल करना।
7. 3 अंक की संख्याओं का स्थानीयमान ज्ञात कर पाना।

माइल स्टोन – 43

1. समय– घड़ी की सहायता से घंटा, मिनट की पहचान।
2. कैलेण्डर की सहायता से दिनों के नाम, महिनों के नाम, माह एवं वर्ष के बारे में जानना।
3. 1000 तक की संख्या को घटाना, जोड़ना।
4. इबारती प्रश्नों को जोड़ना, घटाना।
5. गुणा एवं भाग से संबंधित इबारती प्रश्न हल करना।
6. 1000 तक की संख्या को घटते, बढ़ते क्रम में लिखना।
7. घंटा को मिनट, मिनट को घंटा में बदलना।

माइल स्टोन – 44

1. ज्यामितीय, आकृति वर्ग, आयात, त्रिभुज की पहचान कर पाना।
2. भुजाओं की पहचान कर सकना।
3. विभिन्न आकृतियों की पहचानना।
4. अपने आस–पास के वस्तुओं में त्रिभुज, वर्ग आयत को पहचानना।
5. विभिन्न आकृतियों की स्केल से लंबाई, चौड़ाई जानना।
6. मीटर से.मी. से संबंधित जोड़ एवं घटाने से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकना।
7. रुपये, पैसे से संबंधित इबारती प्रश्नों को हल कर सकना।
8. चित्रों के माध्यम से भिन्नों को पहचानना।
9. 1000 तक की संख्याओं का स्थानीय मान ज्ञात करना।

माइल स्टोन – 45

13. वस्तुओं के सतह के क्षेत्रफल का अनुमान लगाना तथा पुष्टि करना।

माईल स्टोन – 47

1. 4 अंकों तक की दो संख्याओं को हासिल के साथ जोड़ पाना।
2. दो अंकों तक की संख्याओं में एक अंक वाली संख्या से गुणा करना जिसका गुणनफल 1500 से अधिक न हो।
3. 1500 तक की संख्याओं को पहचानना, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
4. 1500 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
5. 1500 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
6. 1500 तक की संख्याओं में पहले, बाद, बीच एवं छुटी हुई संख्या को बताकर लिख सकना।
7. 1500 तक की संख्याओं में छोटा–बड़ा एवं बराबर रूप में पहचानकर लिखना।
8. 11 एवं 12 का पहाड़ा का निर्माण कर सकना।
9. लम्बाई के मानक इकाई किलोमीटर व मीटर की मापक यंत्रों की जानकारी।

माईल स्टोन – 48

1. 4 अंकों तक की दो संख्याओं को घटा सकना व जोड़ सकना।
2. भार की मानक इकाई किलोग्राम व ग्राम के बीच के संबंध को जानना।
3. 2000 तक की संख्याओं को पहचानना, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
4. 2000 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
5. 2000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
6. 2000 तक की संख्याओं में पहले, बाद, बीच एवं छुटी हुई संख्या को बताकर लिख पाना।
7. 2000 तक की संख्याओं में छोटा–बड़ा के रूप में पहचानकर लिखना।
8. 21 से 40 तक की अभाज्य संख्याओं को समझना।
9. 11 एवं 12 की पहाड़े को कदम पहाड़ा के रूप में बता सकना।
10. ज्यामितीय आकृति के अंतर्गत दी गई लम्बाई के रेखाखण्ड को नापना।

माईल स्टोन– 49

पड़े।

माईल स्टोन 51

1. कम्पास की सहायता से मापन की कोणों को न्यून कोण, सम कोण व अधिक कोण में वर्गीकरण करना।
2. 3500 तक की संख्याओं को पहचानकर, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
3. 3500 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 3500 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
5. 3500 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को लिख सकना।
6. 3500 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
7. चार अंको तक की 3 संख्याओं को हासिल के साथ जोड़ना जिसका योगफल 3500 से अधिक न हो।
8. 10 से 12 तक के पहाड़े की उपयोग कर 3 अंकों की संख्या को गुणा करना जिसका गुणनफल 3500 से अधिक न हो।
9. मुद्राओं के गुणा एवं भाग संबंधी सरल प्रश्न हल कर सकना।
10. भार के मानक मूल्य किलो ग्राम को ग्राम में तथा ग्राम को किलोग्राम में बदल सकना।

माईल स्टोन 52

1. एक अंक की संख्या की गुणज ज्ञात करना।
2. 4000 तक की संख्याओं को पहचानना, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
3. 4000 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 4000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
5. 4000 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को बताकर लिख सकना।
6. 4000 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
7. चार अंको तक की तीन संख्या को घटा सकना।
8. 2 से 15 तक के पहाड़ा चार्ट को बीच बीच से बता पाना।
9. तीन अंक तक की संख्या को एक अंक की संख्या से भाग देना।
10. 50 रुपए तक के साधारण प्रश्नों को किसी एक संक्रिया का प्रयोग करते हुए मौखिक रुप से हल कर सकना।
11. लम्बाई के मानक इकाईयों को एक दूसरे में बदलकर गुणा भाग किये जाने संबंधी एक

9. तीन अंको तक की संख्या को एक अंक की संख्या से भाग देकर दैनिक जीवन की समस्याओ को एक संक्रिया का प्रयोग करके और इकाई परिवर्तित करके हल करना।
10. जोड़ और घटाने की संयुक्त क्रिया से एक या दो चरणों मे हल होने वाली दैनिक जीवन की समसयाओं को हल करना।
11. धारिता के मानक इकाईयों के आधार पर एक चरण वाली दैनिक सरल समस्याओं को हल करना।

माईल स्टोन 55

1. अपने परिवेशीय आयताकर, त्रिभुजाकार, वर्गाकार की पृष्ठों की परिमाप इकाई से माप सकना।
2. 5500 तक की संख्याओं को पहचानकर, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
3. 5500 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 5500 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
5. 5500 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को बताकर लिखना।
6. 5500 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
7. एक अंक की संख्या का गुणनखंड ज्ञात कर सकना।
8. चार अंको तक की 3 संख्याओं का योग कर एक चरण में हल होने वाली दैनिक जीवन की समसयाओं को हल करना। जिसका योगफल 5500 से अधिक न हो।
9. 13 से 15 तक के पहाड़े का उपयोग कर 3 अंको तक की संख्या को गुणा करना। जिसका गुणनफल 5500 से अधिक न हो।
10. क्रय–विक्रय संबंधी प्रश्नों को हल करना।
11. लम्बाई के मानक इकाईयों के आधार पर वस्तुओं और छोटे दूरियों की लम्बाई को मीटर और सेन्टीमीटर में माप सकना।

माईल स्टोन 56

1. सममिति आकृतियों को पहचान सकना।
2. 6000 तक की संख्याओं को पहचानकर, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
3. 6000 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 6000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।

3. 7000 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 7000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
5. 7000 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को बताकर लिखना।
6. 7000 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
7. तीन अंकों तक की संख्याओं को हासिल के साथ घटा सकना।
8. 2 से 20 तक के पहाड़ा चार्ट को बीच बीच से बता सकना।
9. 3 अंको तक की संख्या को 10 से 15 तक की संख्या से भाग देकर दैनिक जीवन की समस्याओं को हल कर सकना।
10. लम्बाई, भार एवं धारिता की इकाई को जानना।
11. पाव, एवं आधा का पहाड़ा को जानना।

माईल स्टोन 59

1. क्षेत्रफल की अवधारणा को समझना।
2. 7500 तक की संख्याओं को पहचानकर, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
3. 7500 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 7500 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
5. 7500 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को बताकर लिखना।
6. 7500 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
7. पूरे हजार वाले संख्याओं को मौखिक रुप से जोड़ सकना जिसका योगफल 7000 से अधिक न हो।
8. एक या दो चरणों में हल होले वाली दैनिक जीवन की समस्याओं को जोड़ और घटाने की संक्रिया से हल करना।
9. 3 अंको तक की संख्या को 20 से अधिक दो अंकों की संख्याओं से दो चरणों में गुणा करना । जिसका गुणनफल 7500 से अधिक न हो।
10. भार के मानक इकाईयों को एक–दूसरे में बदलकर गुणा संबंधित एक चरण में हल होने वाली दैनिक जीवन की सरल समस्याओं को हल करना।
11. कैलेण्डर की व्याख्या करना।

माईल स्टोन 62

1. सूत्र का प्रयोग करके क्षेत्रफल ज्ञात करना।
2. 9000 तक की संख्याओं को पहचानकर, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
3. 9000 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
4. 9000 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
5. 9000 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को बताकर लिखना।
6. 9000 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
7. चार अंकों तक की संख्याओं को घटा सकना।
8. एक या दो चरणों में हल होने वाली दैनिक जीवन की समस्यसओं को जोड़ और घटाने की संक्रिया से हल करना।
9. गुणा और भाग पर आधारित एक या दो चरणों में हल होने वाली दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करना।
10. घण्टों व मिनटों से संबंधित सवाल हल करना।

माईल स्टोन 63

1. सरल सम भिन्न को जोड़ना व घटाना जबकि हर समान हो।
3. 9999 तक की संख्याओं को पहचानकर, पढ़ना, बोलना एवं अंकों व शब्दों में लिखना।
4. 9999 तक की संख्याओं में स्थानीय मान बताना एवं विस्तारित रूप में लिखना।
5. 9999 तक की संख्याओं को घटते–बढ़ते क्रम में लिखना।
6. 9999 तक की संख्याओं को पहले, बाद, बीच और छुटी हुई संख्या को बताकर लिखना।
7. 9999 तक की संख्याओं में छोटा,बड़ा, बराबर के रूप में पहचानकर लिख सकना।
8. किसी संख्या में 10 और 100 का मौखिक गुणा कर सकना जिसका गुणनफल 9999 से अधिक न हो।
9. ऐकिक नियम के अवधारणा का समझ होना।
9. गुणा और भाग पर आधारित एक या दो चरणों में हल होने वाली दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करना।
10. धारिता के मानक इकाईयों में दैनिक समस्याओं को मौखिक रुप से हल करना।

माइल स्टोन 1

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. दी गई संख्या को सुनकर दोहराना
3. सरल एवं छोटे निर्देशों को सुनकर उसका पालन करना

माइन स्टोन 2

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. Please, Thank you को समझाना व उपयोग करना
3. दी गई सरल कविता को सुनकर दोहराना
4. सरल निर्देशों का पालन कर पाना
5. 2-4 शब्द को पहचान पाना
6. Cutout के माध्यम से चित्र बनाना

माइल स्टोन 3

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. सिखे हुए कविता को हाव भाव के साथ सुनना व दोहराना
3. छोटे–छोटे प्रश्नों (What)का उत्तर देना
4. 1–3 अंकों को अंग्रेजी शब्द के माध्यम से बोलना व पहचानना
5. सिखे हए अंग्रेजी शब्दों का सही चित्रों से मिलान कर पाना
6. 8–10 शब्दों को पहचान पाना
7. लेखन कला का विकास

माइल स्टोन 4

1 परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. दी गई सरल संख्या को सुनकर दोहराना
3. सरल एवं छोटे प्रश्नों के उत्तर दे सकना (who)
4. 10– 14 शब्दों को पहचानना
5. पहचाने हुए अंग्रेजी शब्दों को सही चित्रों से मिलान कर पाना

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. D, E, F को छोटे व बड़े रूप में पहचानना
3. कविता को हाव भाव के साथ सुनना व बोलना
4. सिखे हुए छोटे छोटे वाक्यों को बोल पाना
5. What, Who, जैसे प्रश्नों को समझकर उत्तर दे पाना
6. सिखे हुए ारल शब्दो को स्वतंत्र परिस्थिति में देखकर पहचान पाना
7. 30–40 शब्दो को चित्र शब्द सूची द्वारा पहचान पाना
8. सिखे हुए कम से कम 4–6 वर्णों को लिख पाना
9. सही शब्दों का मिलान कर पाना

माइल स्टोन 9

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. G,H, I, J को छोटे व बड़े रूप में पहचानना
3. कविता को हाव भाव के साथ दोहराना
4. परिचित परिस्थिति में दिये गये आदेशों को समझना
5. सही और गलत पर (✓ / x) चिन्ह लगा पाना
6. सिखे हुए कम से कम 8–10 वर्णो को लिख पाना
7. 40–55 शब्दों को चित्र शब्द सूची द्वारा पहचान पाना
8. सही शब्दों का मिलान कर पाना

माइल स्टोन 10

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. K, L, M, N को छोटे व बड़े रूप में पहचानना
3. कविता को हाव भाव के साथ दोहराना
4. परिचित कविता को हाव भाव के साथ सुनाना
5. HOW MANY के द्वारा प्रश्नों के उत्तर दे पाना

माइल स्टोन 13

1. परिवेशीय वस्तुओं का नाम अंग्रेजी में जानना
2. W, X, Y, Z को छोटे व बड़े रूप में पहचानना
3. कविता को हाव भाव के साथ दोहराना
4. क्रियाओं से परिचित होना
5. बिन्दुओं को मिलाकर लेखन का अभयास करना
6. 26 वर्णों को लिख पाना
7. वार्तालाप का अभ्यास करना

कक्षा – 2 अंग्रेजी

ekby LVku 14

1. अपरिचित कविता को सुनना और हाव भाव से दोहराना।
2. may/who का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।
3. अंग्रेजी के अक्षर ABCD को छोटे/बड़े रूप में पहचानना व लिखना।
4. He/She का प्रयोग कर पाना।
5. Adjective- Big और Small का प्रयोग कर पाना।
6. Verb- Pickup, Bath का प्रयोग कर पाना।
7. Preposition- In, Out का प्रयोग कर पाना।

ekby LVku 15

1. अपरिचित कविता को सुनना व कविता Rymes को हावों–भाव के साथ दोहराना।
2. What, May, Can का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।
3. अंग्रजी के अक्षर ABCDEFG को छोटे–बड़े के रूप में पहचानना व लिखना।
4. His, Her का प्रयोग कर पाना।
5. Adjective- Fat, Thin का प्रयोग कर पाना।
6. Verb- Listen, say, comb का प्रयोग कर पाना।
7. Preposition- On, Under का प्रयोग कर पाना।

ekby LVku 19

1. अपरिचित कविता को हाव–भाव के साथ सुनना व दोहराना।
2. How many का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।
3. अंग्रजी के ABC.....W को छोटे–बड़े रूप में पहचानना व लिखना।
4. Pronoun- They का प्रयोग कर पाना।
5. Adjective- New, Old का प्रयोग कर पाना।
6. Verb- Pull, push, throw का प्रयोग कर पाना।
7. Preposition- Top, Bottom का प्रयोग कर पाना।

ekby LVku 20

1. अपरिचित कविता को हाव–भाव के साथ सुनना व दोहराना।
2. Which का प्रयोग कर प्रश्न कर पाना।
3. अंग्रजी के ABC.....Z को छोटे–बड़े रूप में पहचानना व लिखना।
4. Pronoun- Our, Your का प्रयोग कर पाना।
5. Adjective- Wet, Dry का प्रयोग कर पाना।
6. Verb- Love, cut, swim का प्रयोग कर पाना।
7. Preposition- Behind का प्रयोग कर पाना।

ekby LVku 21

1. अपरिचित कविता को हाव–भाव के साथ सुनना व दोहराना।
2. When का प्रयोग कर प्रश्न दोहराना।
3. अंग्रजी में सीखे शब्दों को लिख पाना।
4. Pronoun- का प्रयोग कर पाना।
5. Adjective- का प्रयोग कर पाना।
6. Verb- sing, sleep का प्रयोग कर पाना।
7. Preposition- का प्रयोग कर पाना।

ekby LVku 25

1. अपरिचित कहानी को हाव–भाव के साथ सुनना व दोहराना।
2. चित्रों पर पांच पंक्ति अंग्रजी में बोल पाना।
3. अंग्रजी में सीखे शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कर पाना व लिखना।
4. Pronoun- our, your का प्रयोग कर पाना।
5. Adjective- का प्रयोग कर पाना।
6. Verb-Think, Dry का प्रयोग कर पाना।
7. Preposition- Our, your का प्रयोग कर पाना।

पर्यावरण

कक्षा – पहिली व दूसरी

माइल स्टोन 0–लोगों कार्ड का परिचय–

अ. बच्चों को पर्यावरण अध्यान हेतु तैयार करने बाबत इसके लोगों, लेडर आदि से परिचय कराना।

ब. बच्चे अपने घर से भिन्न परिवेश में (शाला में) अध्ययन हेतु प्रवेश करते हैं। अतः शाला का वातावरण और बच्चे के घर के वातावरण में सामंजस्य बिठाने हेतु हम इस प्रकार की गतिविधि से बच्चों में शाला के प्रति आकर्षण बढ़ता हैं।

1. हमारा परिवार– परिवार के विभिन्न सदस्यों का स्वयं से तथा आपस में संबंध को पहचानना।
2. शरीर के अंग– शरीर के प्रमुख अंगों को पहचानना एवं उनके कार्यों को जानना।
3. शरीर की सफाई– शरीर की सफाई एवं आस–पास की स्वच्छता को अपनाना।
4. आस–पास की स्वच्छता– हमारे आस–पास की स्वच्छता (सफाई) के महत्व को समझना।
5. फल– आस–पास के फल को जानना व उसके महत्व से परिचित होना।
6. सब्जियाँ– आस–पास के सब्जियों को जानना व उसके महत्व से परिचित होना।
7. हमारा भोजन– स्वास्थ्य के लिए भोजन के महत्व को समझना।
8. हमारे त्यौहार– स्थानीय त्यौहार से जुड़ी परम्पराओं के सरल तथ्यों को जानना।

23. हमारी फसलें – स्थानीय परिवेश के फसलों को पहचानना।
24. राष्ट्रीय ध्वज – राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जानना।
25. मौसम और कपड़े – कपड़ों की आवश्यकता एवं मौसम में होने वाले परिवर्तन के समझना।
26. सजीव निर्जीव – हमारे आस–पास पाये जाने वाले जीव जंतुओं व वस्तुओं को सजीव और निर्जीव के रूप में पहचानना।
27. सार्वजनिक स्थल – स्थानीय परिवेश के सार्वजनिक स्थलों की जानकारी व महत्व को समझना।
28. स्थानीय मेला – स्थानीय मेलों से जुड़ी परम्परागत सरल तथ्यों को जानना।

fo"k; & i;kZoj.k d{kk & 3

माईल स्टोन – 29 शरीर के अंग

1. शरीर के अंगों के कार्यों के बारे में जानना।
2. शरीर के सुरक्षा के प्रति जागरुक होना।
3. शरीर के अंगों की देखभाल संबंधी बातों को जानना।
4. शरीर के स्वस्थ रखने संबंधी बातों को जानना।
5. शरीर के अंगों द्वारा किये जाने वाले कार्यों का भेद कर पाना।

माईल स्टोन 30 हमारा भोजन

1. स्वच्छ भोजन एवं संतुलित भोजन को जानना।
2. अस्वच्छ भोजन से होने वाले बीमारी को जानना।
3. भोजन को स्वच्छ रखने हेतु उचित रख–रखाव के बारे में जानना।
4. भोजन के पूर्व की जाने वाली तैयारी को जानना।
5. भोजन करने के तरीकों से परिचित होना।
6. भोजन से प्राप्त होने वाले लाभ को जानना।

माइल स्टोन – 31 हीनता जन्य रोग

1. हीनता जन्य रोग होने के कारकों को जान सकना।
2. हीनता जन्य रोगों से परिचित हो पाना।
3. हीनताजन्य रोगों से बचने के उपाय को जानना।

2. कक्षा के अंदर बाहर के खेलों को जानना।
3. खेलों से लाभ को जानना।
4. खेलों से शारीरिक, मानसिक विकास को जानना।
5. खेलों का जीवन में महत्व को जानना।

माईल स्टोन – 37 फसलें

1. फसल उत्पादन के विभिन्न क्षेत्र को जानना।
2. फसल उत्पादन के प्रक्रिया को समझ पाना।
3. फसलों का जीवन में महत्व एवं उपयोग को समझ पाना।
4. फसलों के अधिक उत्पादन के तरीकों को जान पाना।
5. मौसम अनुकूल फसलों का संकलन कर सकना।
6. फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कारकों को जानना।

माइल स्टोन – 38 मिट्टी

1. मिट्टी के प्रकार को जानना।
2. मिट्टी के उपयोग को जानना।
3. अपने गांव में पाये जाने वाले मिट्टी को जानना।
4. मिट्टी के महत्व को समझ पाना।
5. मिट्टी के कटाव तथा बचाव के उपायों को जानना।

माइल स्टोन – 39 मौसम

1. बादल बनने की प्रक्रिया को जानना। प्रयोग
2. वाष्पीकरण की प्रक्रिया को समझ पाना। प्रयोग
3. बादल का वर्षा के रूप में परिणीत होना।
4. वर्षा का मानव एवं प्रकृति पर प्रभाव को समझना।
5. मौसम परिवर्तन को जानना।

माइल स्टोन – 40 सामान्य औजार

1. अपने आसपास के औजारों से परिचित हो पाना।
2. कृषि एवं घरेलू उपयोग में आने वाले औजारों को जानना।
3. औजारों के उपयोग को समझ पाना।

3. रेडियो, टी.वी. में प्रसारित संदेशों को समझना।
4. समाचार पत्र, पत्रिका के महत्व को जानना।
5. टेलीफोन, मोबाइल के उपयोग को समझना।

माईल स्टोन 45 यातायात के साधन

1. अपने जीवन में विभिन्न मार्गों के महत्व को समझना।
2. इन मार्गों का सही उपयोग कर पाना।
3. जल, थल एवं वायुमार्ग को समझना।
4. जल, थल एवं वायुमार्ग के अंतर को समझना।
5. जल, थल एवं वायुमार्ग में चलने वाले वाहनों को पहचानना।
6. अपने आस–पास के मार्ग की पहचानकर उन पर चलने वाले साधनों के बारे में जानना।

माइल स्टोन – 46 पदार्थ

1. पदार्थों का जीवन में उपयोग एवं महत्व को समझना।
2. मानव निर्मित प्राकृतिक पदार्थों को जानना।
3. पदार्थ के सामान्य लक्षण (ठोस, नरम, तरल, स्थान घेरना, घुलनशील, अघुलनशील, तैरना, डूबना) को पहचानना।
4. हवा पदार्थ है स्पष्ट कर पाना

माइल स्टोन – 47 पानी

1. जल स्रोत को जानना।
2. शुद्ध पानी एवं अशुद्ध पानी को जानना।
3. पानी का सही उपयोग कर पाना।
4. जल प्रदूषण एवं बचाव को समझना।
5. जल संरक्षण कैसे करें को जानना।

माइल स्टोन – 48 आकाशीय पिण्ड

1. सूर्य के बारे में जान पाना।
2. पृथ्वी एवं उनकी स्थिति के बारे में जानना।
3. चन्द्रमा एवं चन्द्रकलाओं को जानना।
4. सप्तऋषि एवं अन्य तारों को जानना।

माइल स्टोन – 53 दिशा ज्ञान

1. दिशाओं को जानना।
2. सूर्य के माध्य से दिशा जानना।
3. अपने घर से सार्वजनिक स्थानों को दिशा के माध्यम से जानना। तालाब, स्कूल, पंचायत, नदी, जंगल, पहाड़, डाकघर।

कक्षा – 4

माइल स्टोन – 54 शरीर के अंग

1. शरीर के आंतरिक अंगों के कार्यों के बारे में जानना।
2. पाचनतंत्र क्रिया के बारे में जानना।
3. श्वसन तंत्र क्रिया के बारे में जानना।
4. रक्त संचरण क्रिया के बारे में जानना।
5. आंतरिक अंगों को स्वस्थ रखने संबंधी बातों को जानना।

माइल स्टोन – 55 स्वच्छता एवं स्वास्थ्य

1. स्वच्छता से स्वास्थ्य के संबंध में जान पाना।
2. अपने आसपास को साफ–सुथरा रख पाना।
3. हाथ धुलाई के महत्व को समझना – हाथ धुलाई दिवस
4. भोजन की स्वच्छता एवं रख–रखाव संबंधी बातों जानना।
5. सामुदायिक स्वच्छता पर अपना सहयोग कर सकना।
6. स्वच्छता के महत्व को समझना।

माइल स्टोन – 56 संक्रामक रोग

1. संक्रामक रोगों की पहचान कर पाना।
2. प्रमुख संक्रामक रोग जैसे हैजा, तपेदिक, चेचक, अतिसार, एड्स को जानना।
3. संक्रामक रोग से बचने के उपायों को जानना।
4. संक्रामक रोग फैलने के कारकों को जानना।

माइल स्टोन – 57 प्रदूषण

1. प्रदूषण के बारे में जान पाना।
2. प्रदूषण के विभिन्न प्रकारों को जानना।

माइल स्टोन – 65 खनिज पदार्थ

1. अपने परिवेश में पाये जाने वाले खनिज पदार्थों के बारे में जानना।
2. खनिज पदार्थ में पाये जाने वाले स्थानों को जान पाना।
3. खनिज पदार्थ की उपयोगिता को जानना।
4. खनिज पदार्थ का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना।
5. खनिज पदार्थ के दोहन से होने वाले प्रभाव को जान सकना।

माइल स्टोट – 68 उद्योग धंधे

1. अपने आसपास के उद्योग धंधे को समझना।
2. कुटीर एवं लघु उद्योग के बारे में जानना।
3. जिले एवं राज्य के उद्योग धंधे के बारे में जानना।
4. उद्योग धंधे जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना।

माइल स्टोन – 72 ऋतुएं

1. ऋतु परिवर्तन की अवधारणा को समझ पाना।
2. पृथ्वी की दैनिक व वार्षिक गति को समझना।
3. ऋतु परिवर्तन का प्रकृति एवं मानव पर होने वाले प्रभाव को समझना।

माइल स्टोन – 71 कार्य ऊर्जा और बल

1. कार्य, बल, उर्जा को समझ सकेंगे।
2. विभिन्न प्रकार के ऊर्जा के मूल तत्वों को जान पायेंगे।
3. ऊर्जा के परिवर्तित रूप को जानना।
4. ऊर्जा प्राप्ति के साधन को समझ पाना।
5. ऊर्जा के प्रमुख स्रोत की जानकारी प्राप्त करना।

माइल स्टोन – 73 यातायात के नियम

1. यातायात के चिन्हासे को पहचानना। (पुल, मोड़, स्कूल, अस्पताल आदि)
2. यातायात के नियमो का पालन करना।
3. आधुनिक सिंग्नल लाल, पीली, हरी बत्तियों के आरे में जानकारी प्राप्त करना।
4. यातायात नियमों के महत्व को जानना।
5. यातायात के नियमों के उलघंन से होने वाले दुर्घटना से सावधान हो सकेंगे।

माइल स्टोन – 66 स्थानीय निकाय

1. त्रिस्तरीय पंचायत को समझ पाना।
2. नगर निगम एवं नगर पालिका को जान पाना।

अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें

प्रत्येक मानव शिशु हो या वयस्क सम्मान और श्रेष्ठता चाहता है। संपूर्ण जीवन में कई बार उसे सम्मान मिलता भी है। यदि हम विचार करें तो पायेंगे मानव को जब–जब सम्मान मिलता है। वह अपने प्रभाव के कारण यानी की अपनी सोच और कार्य से मिलता है। दैनिक जीवन में मानव जीवन का प्रभाव कम ज्यादा भी देखने में आता है लेकिन ऐसा तभी होता है जब वह दूसरों के प्रभाव में आ जाता है। अतिप्रभावकारी लोगों की 7 आदतें आपको अपने प्रभाव में रहने हेतु सशक्त मार्ग बताती हैं। यह एक अद्‌भूत पुस्तक है जो आपकी जिंदगी बदल सकती है।

''अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें '' में लेखक स्टीफन आर कोवी व्यक्तिगत एवं व्यवासायिक अपनी प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए एक संपूर्ण एकीकृत, सिद्धांतकेन्द्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। तीक्ष्ण अंर्तदृष्टियों और सटीक उदाहरणों के द्वारा लेखक निष्पक्षता, अंखडता, ईमानदारी और मानवीय गरिमा के साथ जीने का एक कदम–दर–कदम मार्ग प्रकट करते हैं। ये वे सिद्धांत है जो सार्व भौमिक, सर्वकालिक और वस्तुनिष्ठ हैं। जो हमें परिवर्तन के अनुरूप ढलने की सुरक्षा देते हैं। ये सिद्धांत हमें उस परिवर्तन द्वारा उत्पन्न अवसरों का लाभ लेने की समझ और शक्ति प्रदान करते हैं।

7 आदतें अत्यंत प्रभावकारी लोगों की सही मायने में आपको प्रभावकारी जीवन जीने में मदद करेंगी। ये आदतें एक दूसरे के साथ क्रमवार, व्यक्तिगत एवं पारस्परिक प्रभावकारिता की प्रक्रिया बनाती हैं। इन आदतों को अपनाने से आप निम्न परिणाम की आशा कर सकते हैं –

- अपने जीवन पर नियंत्रण बढ़ाना।
- व्यवस्थित व केंद्रित होना।
- संबंधों को उत्कृष्ट बनाना।
- संवाद को बेहतर बनाना।
- कामकाजी जीवन और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन रख पाना।

7 आदतों का परिचय

आदत 1 | **''प्रोएक्टिव बने''**

अपने जीवन की जवाबदारी लेना।

पैराडाइम और सिद्धांत

किसी भी व्यक्ति का अपने आस–पास की दुनिया को देखने का तरीका, समझने का तरीका और अर्थ निकालने के तरीका को पैराडाइम कहते हैं।

यदि आप थोड़ा बहुत बदलाव याने छोटी सफलता और साधारण उन्नति चाहते हैं तो अपना व्यवहार बदलें पर यदि आप बहुत बड़ा बदलाव यानी कि बड़ी सफलता और विशेष उन्नति चाहते तो आप अपना पैराडाइम (नजरिया) बदलें।

पैराडाइम्स बहुत सशक्त होते हैं। सभी पैराडाइम परिवर्तन तत्काल नहीं होते। पैराडाइम परिवर्तन सुविचारित प्रक्रिया है।

सिद्धांत मानवीय व्यवहार के मार्ग दर्शक है। जिनका स्थायी महत्व साबित हो चुका है। सिद्धांत के अस्तित्व के बारे में एक सार्वाभौमिक आंतरिक चेतना और जागरूकता नज़र आती है।

अपने नजरिये को सिद्धांत से जोड़ने पर ही सफलता मिलेगी। नजरिये को बदलना पर्याप्त नहीं है। उसे सिद्धांत से जोड़ना आवश्यक है। सिद्धांत अलग–अलग होते हैं जैसे– व्यवहार, प्रकृति ।

आदतों का परिचय (स्वपहल) – अपने जीवन की जवाबदारी लेना।

पहली आदत को जीवन में उतारने का मतलब है चुनाव करने की आजादी का उपयोग करना और अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाना। जब आप प्रोएक्टिव होते है तब आप चुनाव करते हैं कि परिस्थतियों के जवाब में कैसी प्रतिक्रिया करूँ तक भविष्य में उचित परिणाम मिलें, इससे आपका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता है।

अपनी और अपने आस–पास के भाषा पर ध्यान दें और प्रोएक्टिव भाषा एवं व्यवहार का उपयोग करें। जहाँ आप प्रभाव डाल सकते वहाँ ध्यान केंद्रित करें।

जहाँ तक आपका आत्मनियंत्रण है वहाँ तक आपकी आजादी है।

–मेरी वान इबनर ऐकेनबेक

सामाजिक दर्पण से दूर हटे और अपने क्षमता से कार्य करें। करें या होने दें। पहल करना– पहल करने का मतलब है घटनाओं को घटित करवाने की अपनी जिम्मेदारी को पहचानना है। लोगों को जिम्मेदारी के राह पर चलाना। उन्हें गिराना नहीं बल्कि उठाना है। प्रोएक्टिव मानव स्वभाव का हिस्सा है। हालाँकि प्रोएक्टिविटी मानव में सोई हो सकती है, परंतु वे हम में होती जरूर हैं। सकारात्मक ऊर्जा प्रभाव के वृत्त को बड़ा बना देती है। प्रोएक्टिव

आज से बीस साल से आगे की सोचें आप कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बीच हैं वे कौन–कौन हैं आप उनके साथ क्या कर रहे हैं ऐसा सोचकर अपनी जीवन का मिशन स्टेटमेंट लिख डालिये।

आदत –3

पहली चीजें पहली रखें।

पहली आदत कहती है आप रचयिता हैं आप जिम्मेदार हैं। दूसरी आदत प्रथम या मानसिक रचना हैं तीसरी आदत हैं द्वितीय रचना या भौतिक रचना।

पहली और दूसरी आदतें तीसरी आदत के लिए पूरी तरह अनिवार्य हैं। आप प्रोएक्टिव स्वभाव को जाने और सिद्धांत केन्द्रित बने और तीसरी आदत को अपनाकर व्यक्तिगत प्रबंधन का अभ्यास करके हर दिन, हर पल प्राथमिकताओं को समझें और उन पर काम करें।

तीसरी आदत यानी प्राथमिकताओं को समझना और उन पर कार्य करना। आपको महत्वहीन गतिविधियों को पहचानने और दूर करने में मदद करती है। महत्वपूर्ण कार्यों पर ध यान केंद्रित करने से आपके मिशन में आप अपना समय दे सकते हैं। सप्ताहिक योजना आपको सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य पहचानने में प्राथमिकता देने में समय निर्धारण में और आपकी सर्वोच्च प्राथमिकताओं को पूरा करने में मदद करती है। खुद को साप्तिहिक आधार पर व्यवस्थित करने का संकल्प लें और इसे करने के लिए नियमित समय निश्चित करें।

पहली तीन आदतों से आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा और आपकी व्यक्तिगत विजय होगी।

आदत – 4

जीत–जीत सोचें। सबकी जीत सोचना। मेरा भी हित आपका भी हित। जब आप सभी जीत के लिए सहयोग करते हैं। सार्वजनिक विजय की शुरूआत होती है। प्रभावकारी व स्थायी संबंधों के लिए सहयोग द्वारा परस्पर फायदा और सभी को सफलता देने वाला समाध ाान जरूरी है। जब कोई सुनता है, अपना हाथ बढ़ाता है, प्रोत्साहन के कुछ शब्द बोलता है या किसी का अकेलापन समझने की कोशिश करता है तब बहुत बड़ी बात की शुरूआत होती है।

अपनी मनःस्थिति का आंकलन करना हार–हार नकारात्मक हैं। जीत–हार में प्रतिस्पर्धा और घमंड है। हार–जीत कमजोरी है। यह सोच कहती है मेरी मजबूरी का फायदा उठाओ, सभी उठाते हैं। जीत–जीत में आप साहसी और दयालु दोनों एक साथ होते हैं। यह एक ऐसी दावत है जहाँ जितना खा सको खाओ।

आदत – 7

आरी की धार तेज करें।

लगातार सीखें, लगातार सुधार व उन्नित करें। जिस सिद्धांत पर आधारित है कि शरीर, दिमाग, दिल व आत्म के पोषण के लिए समय देने से आप हर क्षेत्र में और प्रभावकारी होते हैं। इस प्रकार आप अपने सबसे महत्वपूर्ण का संसाधन का ख्याल रखते हैं वह आप खुद।

आपकी आरी आपका शरीर, दिल, दिमाग और आत्मा है। आप अपना शारीरिक स्वास्थ्य – संतुलित भोजन , व्यायाम , विश्राम और तनाव प्रबंधन के जरिए हासिल करते हैं। दूसरों के भावनात्मक बैंक एकाउंट में लगातार जमा करने से आप सामाजिक और भावनात्मक रूप से बलवान होते हैं। पढ़ने लिखने सोचने और विचार विमर्श से आपकी मानसिक क्षमता बढ़ती है। प्रेरणात्मक साहित्य पढ़ने से ध्यान लगाने से, सेवा करने से और प्रकृति के साथ समय बिताने से आपका आत्मिक विकास होता है। इस प्रकार चारों आयामों में आप नवीनीकरण करने से दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना कर पाते हैं। नवीनीकरण कोई मजबूरी बल्कि एक ऐसा उपहार जिसे आप खुद को देते हैं। यदि आप को एक अच्छा जीवन जीना है तथा कामकाजी जीवन और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन हासिल करना है तो आपको अपनी सर्वोच्च प्राथमिकताओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और अपने प्लान के अनुसार कार्य करना चाहिए और चारों क्षेत्रों में लगातार सुधार व उन्नित करने के तरीके ढूढें।

प्रगति करते रहने के लिए हमें सीखना, संकल्प लेना और करना होगा– और दुबारा सीखना, संकल्प लेना तथा करना होगा।

यदि कोई इंजीनियर गलती करता है, तो कुछेक पुल, भवन असमय ही धराशायी होते हैं। यदि कोई डॉक्टर गलती करता है, तो कुछेक लोगों की ही अकाल–मौत होती हैं। लेकिन यदि कोई शिक्षक गलती करता है, तो आने वाली समूची पीढ़ी बर्बाद हो जाती हैं। देश का भविष्य आज शिक्षक के हाथ में है, क्योंकि उसके द्वार पर नई पीढ़ी कुछ सीखने बैठी है।

इस चित्र के माध्यम से हम यह समझते है कि

- **प्रकृति की तीन अवस्थाएँ हैं–** 1. पदार्थ अवस्था 2. प्राणावस्था 3. जीवास्था एक दूसरे के पूरक हैं।
- इनके आचरण निश्चित है।
- प्रकृति की चौथी अवस्था जो मानव है, वह अपने अनिश्चित आचरण के कारण अन्य अवस्थाओं के साथ संतुलन नहीं बैठा पाया।
- ध्यान देने योग्य बात यह है कि व्यक्ति जितना अधिक शिक्षित हुआ, प्रकृति का असंतुलन उतना ही अधिक बढ़ा है। Global Warning आज की सबसे बड़ी समस्या है। केवल प्रकृति ही नहीं वरन् परिवार और समाज में भी असंतुलन ही दिखाई देता है।

इसका यह अर्थ होना है कि शिक्षा ने हमको विषयों की जानकारी दे दी है। लेकिन उन विषयों को व्यवहारिक जीवन में कैसे प्रयोग करना है? यह भाग छूटा गया है। नहीं तो, Global Warning और गृह कलह जैसी समस्याएँ होती ही नहीं। और यदि इन समस्याओं पर आज ध्यान नहीं दिया गया तो अगले 50 वर्षों में पृथ्वी को नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता।

इन सब समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। मूल्य शिक्षा के ''जीवन विद्या'' बेहतर विकल्प के रूप में हमारे सामने है। जीवन विद्या मुख्यतः मानवीय संचेतनावादी मूल्य शिक्षा है। अर्थात् यह शिक्षा मानव को केन्द्र में रखकर दी जाएगी। साथ ही मानव–मानव के मध्य संबंध, मानव और प्रकृति के मध्य संबंधों पर ज़ोर देती है। यह भी बताता है कि प्रत्येक मानव गलती करने का अधिकार और उसे सही करने के अवसर लेकर जन्म लेता है।

अब हमें शिक्षा के Contant (विषयवस्तु) के विषय में सोचने की ज़रूरत है, जो–

1. हमें उत्सवपूर्वक जीने में मदद कर सके। अर्थात्
   - हम सभी मानव स्वस्थ रहें।
   - सभी मानव समृद्धि से जिएँ
   - मानव–मानव के मध्य संबंधों में तृप्ति हो
2. हमारी उपयोगिता सिद्ध करने में मदद कर सके।
3. हमें मानव को प्रकृति से प्राप्त वरदानों के (असीमित क्ष, अ. सं, कल्प. कर्म) सही उपयोग करने के लिए दिशा दे सके।

''जीवन विद्या में इन सभी आयामों पर गहराई से चिंतन एवं अध्ययन किया गया है। एक जिम्मेदार शिक्षक होने के नाते हमारी उपयोगिता यह है कि हम इसे बच्चों एवं समाज तक ले जाएँ।

•••

गीत

ये ज्ञान है सुख के लिए .....
जी ले, इसे तू जानकर ..... ये ज्ञान है ।। 2।।
तू जड़ नहीं चैतन्य है ..... तू जड़ नहीं चैतन्य है।
तेरा धर्म है तू न्याय कर .....
ये ज्ञान है सुख के लिए .....

अंतरा –1 तेरी समझ से, सारा जग
सत न्याय, मार्गों में चले
व्यवहार हो संबंधों में
समृद्धि परिजन में रहे

दौड़ – तू मन वचन और कर्म से, तू मन वचन और कर्म से
जीवन में जी उपकार कर
ये ज्ञान है सूख के लिए .....

अंतरा –2 किसी देव ने तुझे मार्ग दी
शुभ कार्य की एक राह दी
समाधान से समृद्धि हो
सम्पन्नता दे सृष्टि को

दौड़ – अस्तित्व को पहचान कर, अस्तित्व को पहचानकर
मानवता मय आचरण कर
ये ज्ञान है सुख के लिए जी ले इसे तू जानकर

– नेमसिंह कौशिक